

इरमाया, “असर की, और ये रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी नमाज है जो हम आप के साथ पढ़ां करते थे.”

१३१४ : हजरत अनस बिन मालिकसे रिवायत है के, रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने हमें असर की नमाज पढ़ां, जब आप नमाजसे शरीग हुये तो अनु सलमाका अेक शप्श आया और अर्ज किया, या रसूलल्लाह हम अपना अेक ओंट गुल्ह करना चाहते है. और हमारी ज्वाहिश है के, धस मौ के पर आप भी तशरीफ़ लाओ.

आपने इरमाया, “अच्छा” और तशरीफ़ ले गये, हम भी आप के साथ गये, हमने हेजा के अमी ओंट गुल्ह नहीं हुया था, फिर उसे गुल्ह किया गया. उसका गोश्त काटकर पकाया गया. हमने उसको भाया, और अमी सूख गुड़भ नहीं हुया था.

१३१५ : हजरत राफ़ेअ बिन अदीज रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ असर की नमाज पढ़ते फिर ओंटको गुल्ह कर के दस हिरसोंमें तकसीम करते, फिर उसको पकाया जाता और हम उसका पका हुया गोश्त गुड़भ आइताभसे पहेले भा लेते थे.

१३१६ : अवजाध की सनहमें ये इर्क है के, वो भयान करते है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के जमानेमें ओंट गुल्ह किया जाता था और ये भयान नहीं किया के हम आप के साथ नमाज पढ़ते थे.

भाब २२१ :- नमाजे वुस्ता, नमाजे असरहै धसकी इलील.

१३२० : हजरत अली कर्रमल्लाहो वजहलहुसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने गजवये अहजाब के दिन इरमाया, “अल्लाह त्वाला उन मुश्कीन की कभरों और धरोंको आगसे भरदे जोस तरहां ओन्होंने हमें (जंगमें) भशगुल कर के नमाजे असरसे रोक दिया, यहां तक के सूख गुड़भ हो गया.”

१३२१ : अेक और सनहसे भी औरी ही रिवायत मन्कुल है.

१३२२ : हजरत अली कर्रमल्लाहो वजहलहुसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे गजवये अहजाब के दिन इरमाया, “हमें असर की नमाज पढ़नेसे रो के रज्जा, यहां तक के सूख गुड़भ हो गया, अल्लाह त्वाला उन के धरों और कभरोंको आगसे भरदे.”

रावीको शक है के, शायद औरा इरमाया, “या अल्लाह त्वाला, धन की पीहों और कभरोंको आगसे भरदे.”

१३२३ : अेक और सनहसे भी औरी ही इदीष मन्कुल है.

१३२४ : कताहल रहीअल्लाहो अन्होकी रिवायतमें बिना शक के, कुबुर और भुयत (कभरों और धरों) के अल्लाज है.

१३२५ : हजरत अली करमल्लाहो वजहलु भयान करते है के, रसूलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने गजवयमे अहज्जाम के दिन इरमाया, “हमें (मुश्कीकोने) हमें सलाते पुस्ता, नमाजे असरसे रोक दिया. अल्लाह त्वाला उन के घरों और कबरोंको आगसे भर दे. फिर आपने मगरीब और धशां के हरभ्यान असर की नमाज पण्डांछ.”

१३२६ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसूद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मुश्कीनने रसूलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमको असर की नमाजसे रो के रफ्फा. यहां तक के सूरज सूर्भ या जर्ह पड गया. रसूलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “हमें सलाते पुस्ता, सलाते असरसे (मुश्कीकोने) रो के रफ्फा. अल्लाह त्वाला उनकी पीठों और कबरोंको आगसे भरदे.”

१३२७ : हजरत आग्शह सीदीकह रहीअल्लाहो अन्हो के गुलाम अबु युनुससे रिवायत है के, हजरत आग्शह रहीअल्लाहो अन्होने मुजे कुरआने करीम लिफनेका हुकम दिया और इरमाया, “जुस वक्त “हकिजु अलस सलवाते, वस-सलातील पुस्ता, ” आयत पर पढांयो तो मुजे बता देना, युनांये जभमें इस आयत पर पढांया तो आपकी बताया, आपने इरमाया, “ये आयत इस तरहां लिफो, हकिजु अलस सलवाते वस-सलातिल पुस्ता. वसलातिल असर वकुमुलिल्लाहे कानेतिन. हजरत आग्शह रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “मैंने रसूलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमसे ये आयत इसी तरहां सुनी है.

१३२८ : हजरत बराय्य बिन आजीब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, “हकिजु अलस-सलवाते व सलातिल असर” (आयत) नाजिल हुं जभ तक अल्लाह त्वालाने याहा, हम इस आयतके इसी तरह पण्डते रहे. फिर अल्लाह त्वालाने इसे मन्सुज कर दिया और इस तरहां नाजिल इरमाया, “हकिजु अलस सलवाते व सलालिल पुस्ता.”

अेक शफश शकीक के पास भैठा था. उसने कहा, “अभ तो नमाजे असर ही सलाते पुस्ता है.”

हजरत बराय्य रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “मैं तुम्हें बता चुका हुं के ये आयत कैसे नाजिल हुं, और अल्लाहने इसे किस तरहां मन्सुज किया, और अल्लाह ही जुब ज्ञानता है.

धमाम मुस्लिम अेक और सनहसे भयान करते है के, हजरत बराय्य बिन आजीब रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “हम नबीअे करीम सललल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम के साथ भैठ थे. अेक अरसा तक इस आयत की जैसे ही तिलावत करते रहे.

१३२९ : हजरत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होमासे रिवायत है के, हजरत ज़ाबिर इब्रह रहीअल्लाहो अन्हो गजवयमे भन्दक के दिन कुरै कुरैशको पुरा भला कहन लगे और अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! अल्लाहकी कसम. सूरज गुज़्ब होनेको आ गया और मैंने अभी तक नमाजे असर नहीं पण्डी.

रसूलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “वल्लाह, मैंने भी अभी तक असर की नमाज नहीं पण्डी.

झिर हम् पथरीली जमीन पर आये और रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने पुत्रु किया, झिर रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने गुज़्ज आइताब के भाद असर की नमाज़ पण्डी झिर ओस के भाद मगरिब की नमाज़ पण्डी.

१३३० : अेक और सनदसे भी औसी ही हदीष रिवायत हुंघ है.

भाब २२२ :- इजर और असर की नमाज़की इज़ीलत और उनकी हिक़मत.

१३३१ : हज़रत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “रात और दिन के इरीशते तुम्हारे पास बार बार आते हैं और इजर और असर की नमाज़में उनका इजतेमा होता है. झिर ये अपनी काम की इरज के अेतबारसे ओपर चले जाते हैं. झिर उनका रभ उनसे इरयाइत करता है, हांलां के वो उनको ज़्यादा जानने वाला है के तुम मेरे अंहोको किस हांलमें छोडकर आये हो ?”

इरीशते अर्ज करते हैं, “जभ हम् उन के पाससे आये तो वो नमाज़ पण्ड रहे थे और जभ हम् उन के पास पहुँचे तो वो नमाज़ पण्ड रहे थे.”

१३३२ : अेक और सनदसे भी ये हदीष मन्दुल है.

१३३३ : हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम् रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी भिदमतमें औंठे हुंघे थे. “ नागलां आपने औंढहवी रात के औंढ की तरइ देभकर इरमाया, “भेशक, तुम अपने रभको इस तरहां देभोगे ज़स तरहां इस औंढको देभ रहे हो. और ओसे देभनेमें तुम्हें कीसी किरम की तकलीफ़ महेसूस नहीं होगी, पस अगर हो श के तो, तुलुअ आइताब और गुज़्ज आइताबसे पहले की नमाज़े याने इजर और असर की नमाज़ोंको कज़ा ना होने दो.”

झिर जरीरने ये आयत पण्डी. “इ-सब्जेह बि-हुम्हे रब्जेक़ क़ल तुलुअिश-शम्श व क़ल गुज़्जेहा.”

तरजूमा :- तुलुअ आइताब और गुज़्ज आइताबसे पहले अपने रभ की तरब्हीह हम् के साथ भयान करो.

१३३४ : इसी सनद के साथ अेक और रिवायत है ज़समें औंसे है के, तुम अनकरीब अपने रभ के सामे पेश किये ज़अोगे, और ओसको इस तरहां देभोगे, ज़स तरहां औंढको देभते हो. झिर आयत की तिलावत इरमाध.

१३३५ : हज़रत ओमाराह बिन इवैबह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमसे सुना, आप इरमा रहे थे, “ज़स शम्शने तुलुअ आइताब और गुज़्ज आइताबसे पहले याने, इजर और असर पण्डी वो, इरगीज़ होजभमें नहीं ज़अोगा.”

भशरा के अेक शम्शने पुछा, “क्या तुमने ये हदीष रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमसे भुद सुनी है ?”

हज़रत ओसावहने कहा, “हां.”

औस शप्शने कडा, “मैं गवाही देता हूँ के मैंने ली ये हदीष रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमसे सुनी है. मेरे कानोंने धसको सुना और दिलने याद रभा.”

१३३६ : हजरत उमारह बिन इब्नेअबुल रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जुस शप्शने तुलुअ आइताब और गुरुब आइताबसे पहले नमाज पणही वो होजभमें नहीं ज़अेगा.”

हजरत उमारह के पास भशराका रहेनेवाला अेक शप्श भौठा था. औसने कडा, “क्या तुमने ये हदीष रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमसे ज़ुद सुनी है ?”

हजरत उमारहने इरमाया, “हां, मैं धस पर गवाह हूँ.”

ये सुनकर वो शप्श भोला. “मैं गवाही देता हूँ के मैंने रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमको औस जगा ये इरमाते हुअे सुना. जहांसे मैं सुन शकता था.”

१३३७ : अबु बक के वालिद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जुसने दो ठंडी नमाजे (इजर और असर) पणही वो जन्तमें ज़अेगा.”

१३३८ : अेक और सनदसे ली ये हदीष मन्कुल है.

बाब २२३ : मगरीबका अव्वल वक्त गुरुब आइताबके बाद है.

१३३९ : हजरत सलमह बिन अक्यह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम औस वक्त मगरीब की नमाज पणहां करते थे जभ आइताब गुरुब होकर नजरोसे ओजल हो जाता.

१३४० : हजरत राइअ बिन ज़ुइज रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम के साथ मगरीब की नमाज पणहते थे और नमाज के बाद जकर कोध शप्श ली अपने तीर गडने की जगह देभ शकता था.

१३४१ : अेक और सनदसे ली अैसी ही हदीष मन्कुल है.

बाब २२४ :- धशांकी नमाजका वक्त और औसमे ताभीर.

१३४२ : नबीअे करीम रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम सैयदह हजरत आअेशह सीदीका रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक रात रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने धशांकी नमाजमें देर की, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम नमाज के लिये तशरीफ ना लाअे. यहां तक के हजरत उमर धभने अत्ताब रहीअल्लाहो अन्होने अर्ज किया जअे और औरतें सो गअे.

रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम जहार आअे और आते वक्त नमाजीयोंसे इरमाया, “इअे जभीन पर तुम्हारे सिवा कोध नमाजका धन्तज्जर नहीं कर रहा.”

ये लोगोंमें इस्लाम की धशाअतसे पढेलेका वकैआ है. अेक रिवायतमें एस तरहां है के, जब हजरत उमरने बीभ कर बुलाया, नमाज के लिय, तो आपने इरमाया, “तुम्हारे लिये ये ज़रफ नही के अल्लाह के रसूल (रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम)से नमाजका तकाजा करो.”

१३२३ : हजरत एब्ने शिहाबसे एसी सनहसे अेक और रिवायत भी अैसी ही है.

१३२४ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक रात रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने एशांकी नमाजमें देरी की हत्ता के, रातका अकसर हिरसा गुजर गया, यहां तक के नमाजी मस्जुदमें सो गअे, फिर रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम तशरीफ लाअे और इरमाया, “अगर मुजे उम्मत की दुश्वारीका ખयाल ना होता तो एशांका यही वक्त होता.”

१३२५ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक रात हम एशांकी नमाज के लिये रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमका एन्तज़र करते रहे. ना ज़ने वो घर के डीसी काममें मशगुल थे या क्या वजह थी. ખहरहाल आप अेक तिहाथ या उरसेली जयादा रात (गुजरने) के बाद तशरीफ लाअे. आते वक्त आपने इरमाया, “तुम डीस नमाजका एन्तज़र कर रहे थे. ज़सका तुम्हारे सिवाय डीसी और हीनको माननेवाला नही करता. अगर मेरी उम्मत पर ये दुश्वार ना होता तो मैं एसी वक्त नमाज पणहां यां करता.”

फिर आपने मुअज़जीनको एक्रमत कहेनेका हुकम दिया और नमाज पणहाथ.

१३२६ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक बार रात एशांकी नमाज के वक्त रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम डीसी काममें मशगुल हो गअे और एशांको मुताअब्भीर कर दिया, यहां तक के हम मस्जुदमें सो गअे, फिर ખेदार हुअे फिर सो गअे, फिर जब ખेदार हुअे तो रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम तशरीफ लाअे और इरमाया, “इअे जमीन पर तुम्हारे अलावल आण की रात कोथ भी नमाज के एन्तज़रमें नही है.”

१३२७ : साबितसे रिवायत है के, लोगोंने हजरत अनस बिन मालिकसे रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमकी अंगुडीका हल दरयाइत किया. तो उन्हांने कहा, अेक रात एशांकी नमाजको रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने आधी रात या उर के करीब वक्त तक मुअब्भर कर दिया. फिर आप तशरीफ लाअे और इरमाया, “लोग नमाज पणहुकर सो गअे. और तुम एस वक्त तक नमाजका एन्तज़र करते रहोगे.”

हजरत अनस रहीअल्लाह इरमाते है के, मेरी आंभो के सामने ये मन्जर है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमकी आंहीकी अंगुडी की यमक देभ रहा हुं. उन्हांने आअे हाथ की उंगलीसे एशारा कर के कहा, अंगुडी एस हाथमें थी.

१३२८ : हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हमने अेक रात रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमका आधी रात तक धन्तगार किया. फिर आप तशरीफ लाये और नमाज अदा की, फिर हमारी तरफ मुतवज्जेह होकर बोले और ये मन्जरमी सामने है. जैसे आपकी चांदीकी अंगुठी की अमक देभ रहा हुं.

१३२९ : अेक और सनदसे भी इसी तरहों की हदीष मन्कुल है. जिसमें हमारी तरफ मुतवज्जे हुये, का जिक नहीं है.

१३४० : हजरत अबु मुसा अश्यरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं और मेरे साथी जे इस्तीसे आये थे और जन्नतुल अकीअ की पथरीली जमीन पर गितरे थे. और रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम मदीना शरीफमें तशरीफ इरमाये. और हमारी अेक जमाअत बारी बारीसे आपकी भिदमतमें हाजूर होती थी.

हजरत अबु मुसा रहीअल्लाह इरमाते है के, अेक दिनमें अपने अंद साथीयों के साथ आपकी भिदमतमें हाजूर हुआ. रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम डीसी काममें मशगुल थे. यहाँ तक के आधी रात गुजर गध. फिर आप तशरीफ लाये और हमें नमाज पण्डाए. नमाजसे इारीग होकर आपने हाजरीनसे इरमाया, “जरा हठरों मैं तुम्हें अता रहा हुं के तुम्हें अशारतहो के ये तुम पर अल्लाह त्यालाका धन्याम है के, इस वक्त तुम्हारे सिवा कोए और नमाज नहीं पण्ड रहा है.” या इरमाया, “तुम्हारे सिवा इस वक्त डीसीने नमाज नहीं पण्ही.”

रावी इरमाते है के, अबु मुसाने कौनसा जुम्ला इरमाया था याद नहीं.

हजरत अबु मुसाने इरमाया, “रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमसे ये अशारत सुनकर हमलोग जुश जुशाल वापस अले गये.

धुने जरीज रिवायत करते है के, मैंने आपसे कहा तुम्हारे नजदिक धशांकी नमाज पण्डने के लिये कौनसा वक्त सभसे अहेतर है , ज्वाह वो जमाअतसे हो या गिस के सिवा ?

अत्ताने कहा मैंने हजरत धुने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे ज्ञाना तो इरमाते थे के, अेक रात रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने धशांकी नमाजमें ताभीर की हत्ता के लोग सो गये. फिर बेदार हुये और सो गये. फिर बेदार हुये तो हजरत गिभर रहीअल्लाहो अन्होने अडे होकर बुलंद आवाजसे कहा, अस-सलात.

अत्ता कहेते है के, हजरत धुने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “फिर रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम तशरीफ लाये और आप के सरसे पानी टपक रहा था. और आपने अपने सर मुभारक पर अपना हाथ रज्जा हुआ था. आपने इरमाया, “अगर मेरी गिभत पर दुश्वार ना होता तो मैं, गिसको इसी वक्त नमाज पण्डनेका हुकम देता.

मैंने अत्तासे पुछा के रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने किस तरहों हाथ रज्जा था ? और हजरत धुने अब्बासने तुम्हें किस तरहों अताया था.

અત્તાને અપની ઊંગલિયાં યા કીસી ઔર ફિર અપની ઊંગલિયાં કે કિનારે અપને સર પર રખે ફિર ઊનકા સરસે ઝુકાયા. ઔર સર પર ફેરા યહાં તક કે ઊનકા અંગુઠા કાન કે ઊસ કિનારે કી તરફ પહોંચ્યા, જો મુંહ કી તરફ હૈ.

ફિર ઊનકો, અંગુઠા કનપટ્ટી ઔર હાથ દાહી તક કીસી ચીજકો છૂતા થા, ના કિસી ચીજકો પકડતા થા. મૈને અત્તાસે પૂછા કયા ઊન્હોંને યે ભી ખતાયા થા કે ઊસ રાત રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમને કીતની તાબિર કી થી.

ઊન્હોંને કહા, નહીં જાનતા.

ફિર અત્તાને ફરમાયા, “મૈં ઇસ ખાતકો પસંદ કરતા હું કે ઊસ વક્ત નમાઝ પહું જીસ વક્ત ઊસી રાત રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમને નમાઝ પળાઇથી ખ્વાહ મૈં ઇમામ હોઊં યા અકેલા હોઊં અગર તુમકો ખુદ ઇતની દેર બાર ગુઝરે, યા તુમ ઇમામ હો ઔર લોગોંકે ઇતની દેર ગિરાં ગુઝરે તો દુઆની વક્તમૈં નમાઝ પઢ લિયા કરો ના જલ્દી ના દેર સે.

૧૩૫૨ : હજરત જાબિર બિન સમૂહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમ ઇશાંકી નમાઝ દેરસે પળાં કરતે થે.

૧૩૫૩ : હજરત જાબિર બિન સમૂહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમ ઇન્હીં અવકાતમૈં નમાઝ પળાં કરતે થે જીનમૈં તુમ પળહતે હો. અલબત્તા ઇશાંકી નમાઝ તાબિરસે પળહતે થે ઔર આપ નમાઝમૈં તખફીક કરતે થે.

૧૩૫૪ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમસે સુના, આપને ફરમાયા, “તુમહારી નમાઝ કે નામ પર ગંવાર ગાલિબ ના આ જાઝમૈં કે મિટા દિયા તુમહારી નમાઝે ઇશાં કે નામકો ઇસ લિયે કે વો ઊટોંકા દૂધ દોહતે હૈ, દેર કિયાં કરતે હૈ. (યાની ઇસ વજહસે વો ઇશાંકો ઇત્મા કહતે હૈ)

૧૩૫૫ : હજરત અબ્દુલ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “દેહાતી કે લોગ ઇશાંકી નમાઝ કે નામમૈં, તુમ પર ગાલિબ ના આ જાઝમૈં ક્યું કી યે અલ્લાહકી કિતાબમૈં ઇશાં હૈ ઔર વો તાબીરસે ઊંટોંકો દૂધ દોહતે હૈ (ઇસ લિયે ઇત્માઅ કહતે હૈ) (ઇત્માઅ = અધેરા ઇ જાના)

બાબ ૨૨૫ :- ફજરની નમાઝ જલ્દ પળહના ઔર કિરઅતકી મિકદાર કે બયાનમૈં

૧૩૫૬ : હજરત આબ્દેશહ રદીઅન્હો અન્હા બયાન કરતી હૈ કે, મુસલમાનોં કી ઔરતૈં ફજરની નમાઝ રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ પળહતી થી. ફિર અપની આદરોંમૈં લિપટી હુઇ વાપસ આતી થી. યહાં તક કે ઇન્હૈં કોઇ નહીં પહેચાનતા થા.

१३५७ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मुसलमान औरतें अपनी आदरोंमें लिपटी रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लाम के साथ इजरकी नमाजमें हाजिर होती थी. फिर अपने घरोंको लौट जाती थी और यूं की रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लाम मुंह अंधेरे नमाज पणहते थे, धसलिये गिन्हें कोध पड़ेयानता नहीं था.

१३५८ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है की रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लाम सुण्डाकी नमाज पणहते और औरतें अपनी आदरोंमें लिपटी हुंघ वापस जाती थी. वो अंधेरे की भीना पर पड़ेयानी नहीं जाती थी.

१३५९ : हुजरत हुसन बिन अली रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, जब हिज्रत मदीना मुनव्वरा आया तो हुमने हुजरत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होने नमाजों के मुतादलीक दर्याकत किया, गिन्होंने इरमाया, "रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लाम, इजरकी नमाज दुपहर के वक्त पणहते करते असर की धस वक्त पणहते थे जब आइताब सुईह होता, भगरीब गुडुब आइताब के भाद, धशांमें कभी ताबिर करते और कभी जल्दी पणहते. अगर लोग जमा हो जाते तो जल्दी पणहते और सुण्डा की नमाज मुंह अंधेरे पणहते थे.

१३६० : हुजरत हुसन बिन अली रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हिज्रत नमाजोंमें ताबिर करता था. हुमने हुजरत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे दर्याकत किया, भाकी रिवायत हुस्मे, साबिक है.

१३६१ : शेअबा कहते है के, शयार बिन सलमाने मुजे अताया, गिन्होंने कहा मैंने अपने वालीदसे सुना गिन्होंने हुजरत अबु बरज्जह रहीअल्लाहसे रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लामकी नमाज के बारेमें सवाल किया, सहाबाने कहा, भाद भातें करनेको ना पसंद इरमाने थे.

शेअबा कहते हैं की मैंने गिनसे फिर मुलाकात की और दर्याकत किया तो कहा की, सुण्डा की नमाज गिस वक्त पणहते थे के आदमी अपने साथ बैठे हुग्मे सनाषा शप्शको पड़ेयान लेता था और धसमें आप साहसे लेकर सो आयतें पणहते थे.

१३६२ : हुजरत अबु बरज्जह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लाम आधी रात तक धशांकी नमाज मुअज्जर करने की परवाह नहीं करते थे. और धशांसे पहले सोनेको और गिस के भाद भातें करनेको ना पसंद करते थे. अक और मौ के पर हुजरत अबु बरज्जहने अक तिहाथ रात तक ताबिरका जिंक किया.

१३६३ : हुजरत अबु बरज्जह सलामी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लाम, धशांकी नमाज तिहाथ अबतक मुअज्जर करते थे और धशांकी नमाजसे पहले सोने और धशां के भाद भातें करनेको नापसंद करते थे. और इजरकी नमाज में, सौसे लेकर साह आयतों तक पणहते थे. और सुण्डा की नमाजसे गिस वक्त शरीग होते थे के हुममेंसे अक शप्श दूसरेको पड़ेयान लेता था.

બાબ ૨૨૬ :- મુસ્તહબ વક્તસે મુઅખ્ખર કર કે નમાઝ પઠહના

ઐસી સૂરતમેં મુકતદીકા હુકમ.

૧૩૬૪ : હજરત અબુ ઝર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મુજે ફરમાયા, “જબ તુમ પર ઐસે હાકિમ મુસલ્લત હો જાએ જો નમાઝ મુઅખ્ખર કર કે પહેં યા ફરમાયા, “નમાઝ કે વક્તકો ખતમ કર કે પહેં તો તુમ ક્યા કરોગે ?”

મૈને અઝ ક્રિયા, “જો આપ ઈશાદ ફરમાએ.”

આપને ફરમાયા, “તુમ અપને વક્ત પર નમાઝ પઠહ લિયાં કરો, ફિર અગર ઊન કે સાથ નમાઝ પાઓ તો વો ભી પઠહ લેના. ક્યું કી વો તુમહારે લિયે નિક્લ હો જાએગે.”

૧૩૬૫ : હજરત અબુ ઝર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મુજે ફરમાયા, “મેરે બાદ ઐસે હુકમ આએગે જો નમાઝકો વક્ત ગુઝર કર પહેંગે તુમ નમાઝકો વક્ત પર પઠહના. અગર તુમને વક્ત પર નમાઝ પઠહલી હો તો ઊન કે સાથ નિક્લ હો જાએગે ઔર અગર તુમને ઊન કે સાથ નમાઝ નહીં પઠહી તો તુમ અપની નમાઝ તો પઠહ હી ચુ કે હો.”

૧૩૬૬ : હજરત અબુ ઝર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મેરે ખલીલ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મુજે વસીયત કી હૈ કે, “મેં હુકમ સુનું ઔર ઊનકી ઇતાઅત કરું. ખ્વાહ વોહ હાથ પૈર કટા હુઆ ગુલામ હો ઔર મૈં નમાઝકો ઊસ કે વક્ત પર પહું. આપને ફરમાયા, “અગર યે લોગ નમાઝ પઠહ ચૂકું, તો તુમ અપની નમાઝ વક્ત પર અદા કર ચુ કે હો, વરના ઇન કે સાથ તુમહારી નમાઝ નહીલ હો જાએગી.”

૧૩૬૭ : હજરત અબુ ઝર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કી, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મેરી રાન પર હાથ મારા ઔર ફરમાયા, “જબ તુમ અયસે લોગોંમેં રહે જાઓગે જો વક્ત ગુજારકર નમાઝ પહેંગે તો તુમ ક્યા કરોગે ?”

મૈને અઝ ક્રિયા, “જો આપ હુકમ ફરમાએ.”

આપને ફરમાયા, “તુમ અપની નમાઝ વક્ત પર પઠહ કર અપને કામ પર ચલે જાના. ઊસ કે બાદ અગર જમાઅત હો ઔર તુમ મસ્જીદમેં હો તો નમાઝ પઠહ લેના.”

૧૩૬૮ : હજરત અબુલ આલિયહ બયાન કરતે હૈ કે, એક દિન ઈબને ઝિયાદને નમાઝમેં દેર કરદી, ઊન્હોંને ઇતેક્લાફ મેરે પાસ હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન શામીત રદીઅલ્લાહો અન્હો તશરીફ લાએ મૈને ઊન કે લિયે કુરશી પેશ કી, વો ઊસ પર બૈઠ ગએ. મૈને ઊનસે અબ્દુલ્લાહ બિન ઝિયાદકા નમાઝમેં તાખિરકા ઝિક્ર ક્રિયા, ઊન્હોંને અપને હોંઠ ભીંચે ઔર મેરી રાન પર હાથ મારા, ઔર કહા, મૈને હજરત અબુ ઝર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે યહી સવાલ ક્રિયા થા. ઊન્હોંને મેરી રાન પર ઐસે હી હાથ મારા થા જૈસે મૈને તુમહારી રાન પર હાથ મારા હૈ. ઔર કહા કે મૈને ભી રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમસે ઊસી તરહાં સવાલ ક્રિયા થા. જીસ તરહાં તુમને મુજસે સવાલ ક્રિયા હૈ. ઔર આપને ભી મેરે રાન પર હાથ ઐસે હી મારા થા જૈસે મૈને તુમહારી રાન પર હાથ મારા હૈ. ફિર આપને ફરમાયા, “નમાઝ અપને વક્ત પર

पणहलो. फिर अगर दिन के साथ नमाज़ मिल जाये तो दिन के साथ भी नमाज़ पणह लेना और ये ना कहेना के मैं नमाज़ पणह यूका हूँ. अब नहीं पणहूंगा.”

१३६६ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन शामितसे रिवायत है के, हज़रत अबु उर रदीअल्लाहो अन्होने फ़रमाया, “जिस वक्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम दिन लोगोंमें रहोगे जो नमाज़ देरसे पणहते है. तुम नमाज़को अपने वक्तमें पणह लेना फिर अगर जमाअत भडी हो तो दिन के साथ भी पणह लेना. क्यूंके धसमें जयादा भैर है.

१३७० : अबुल आलियह जयान करते है के, मैंने अब्दुल्लाह बिन शामित रदीअल्लाहो अन्होसे कहा के, हम जुमा के दिन हुक्काम की धक्तेदामें नमाज़ पणहते है. वो नमाज़को आपरी वक्तमें अदा करते है.

अबुल आलियह कहते है के, हज़रत अब्दुल्लाह बिन शामित रदीअल्लाहो अन्होने मेरी रान पर धतने ज़ेरसे हाथ मारा के मुझे डर लगा, और कहा के मैंने हज़रत अबु उर रदीअल्लाहो अन्होसे, यही दरयाइत किया तो ओन्होंने भी मेरी रान पर मारा और कहा की मैंने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमसे यही बात दरयाइत की थी तो आपने फ़रमाया, “तुम (भरनून वक्तमें) नमाज़ पणहां करो और जमाअत के साथ नमाज़को भतौर नफ़िल पणह लिया करो.

रावी कहते हैं की, हज़रत अब्दुल्लाहने मुझे बतायाके, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने भी हज़रत अबु उर रदीअल्लाहकी रान पर हाथ मारा था.

भाब २२७ :- नमाज़ जाणमाअत पणहनेकी ताकीद और धस के इर्जे किफ़ायत होनेका जयान.

१३७१ : हज़रत अबु हुदैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने फ़रमाया, “जमाअत के साथ नमाज़ पणहना तुम्हारे तन्हा पणहनेसे पश्चीस गुना अइजल है.

१३७२ : हज़रत अबु हुदैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने फ़रमाया, “जाणमाअत नमाज़ पणहना तन्हा नमाज़ पणहनेसे पश्चीस (२५) गुना अइजल है. और फ़रमाया, “रात और दिन के इरीस्ते इज़रकी नमाज़में जमा होने है और तुम आहो तो ये आयत पणहलो, “धन्न सीअतुम व कुरआनल इन्हे धन्न कुरआनल इन्हे ख़ना मशहुद.”

(इज़रमें कुरआन की तिलावत पर (इरीस्ते) हाज़र किये जाते है)

१३७३ : अेक दूसरी सनदसे भी ऐसी ही हदीथ मन्कुल है.

१३७४ : हज़रत अबु हुदैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने फ़रमाया, “जाणमाअत नमाज़ तन्हा शफ़ा की पश्चीस नमाज़ों के पराणर है.”

१३७५ : ओमर बिन अता जयान करते है के, मैं नाइअ बिन जुबैर बिन मुठम के पास भैदा था, के वहांसे अबु अब्दुल्लाह रदीअल्लाहो अन्होका गुजर हुवा. नाइअने ओन्हे

जुलाया और कहा, मैंने हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे सुना है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “धमाम के साथ नमाज पणहना तन्हा पश्चीस नमाजें पणहनेसे जयादा इजीलत रभता है.”

१३७६ : हजरत धप्ने उमर रहीअल्लाहसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जमाअत के साथ नमाज पणहना, तन्हा नमाज पणहनेसे सत्ताईस (२७) दरग़ा इजीलत रभता है.”

१३७७ : हजरत धप्ने उमर रहीअल्लाहसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जमाअत के साथ नमाज पणहना, तन्हा नमाज पणहनेसे सत्ताईस (२७) दरग़ा इजीलत रभता है.”

१३७८ : अेक और सनदसे धप्ने नभीरने बीस और कुछ दरग़ा कहा और अबु बक ने सत्ताईस (२७) दरग़ा (कहा).

१३७९ : हजरत धप्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “बीस (२०) और कुछ जयादह.”

१३८० : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने कुछ लोगोंको नमाजमें नहीं पाया, तो इरमाया, “मैंने धरादा किया के अेक शप्शको हुकम हुं की वो लोगोंको नमाज पणहांअे. फिर मैं उन लोगों की तरफ़ जाँँँ ज़े नमाजमें नहीं आअे, और लकडीया जमा कर के उन के धरोंको आग लगानेका हुकम हुं. अगर कीसीको मालुम हो जाअे के उनको अेक गोशतसे भरी हड़ी मिल गध तो वो धशांकी नमाजमें ज़र आअेंगे.”

१३८१ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “मुनाईक़िन पर सभसे जयादा दुश्वार धशां और इजरकी नमाज है. अगर उन लोगोंको धन नमाजोंका सवाभ मालुम हो जाअे तो वो धन नमाजोंको पणहने ज़र आअेंगे. ज्वाह उनहें घट्टनों के भल पर खलकर आना पडे, मैंने धरादा किया था के अेक शप्शको नमाज पणहानेका हुकम हुं फिर अंह लोगो के साथ लकडीयांका गढ़ा लेकर उन लोगों के पास जाँँँ ज़े जमाअतमें नहीं आते और उन के धरोंको आग लगा हुं.”

१३८२ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “मैंने धरादा किया अपने जवानोंको लकडीयां धकड़ा करनेका हुकम हुं, फिर अेक शप्शसे जमाअत कराने के लिये कहुं, फिर उन लोगों सभेत उन के धरोंमें आग लगा हुं.” (ज़े जमाअत के साथ नमाज पणहने नहीं आअे)

१३८३ : अेक और सनदसे भी अैसी ही अेक हदीध मन्कुल है.

१३८४ : हजरत अबुदुल्लाह बिन मसउिद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने ज़ुम्भामें हाजूर नहीं होनेवालों के बारेमें इरमाया, “मैंने धरादा किया के अेक शप्शको जमाअत कराने के लिये हुकम हुं, फिर उन लोगों के धरोंको आग लगा हुं ज़े ज़ुम्भामें नहीं आअे.”

१३८५ : हजरत अबु हुसैरुह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी भिदमतमें अेक नाबिना शप्श (सहाबी गिम्मे मकतुम रहीअल्लाहो अन्हो) हाजुर हुये और इरमाया, “मुजे मरुहुद तक पढोयाने वाला कोए नही है. ओस शप्शने एंसलिये ये इरप्वास्त की थी के, ओसे घरमें नमाज पणहुनेकी एज्जत मील गये, आपने ओन्हें एज्जत दे दी.

ओस के जाने के बाद आपने ओन्हें बुलाकर इरमाया, “क्या तुम अज्जानकी आवाज सुनते हो ?”

ओसने कहा, “ओ.”

आपने इरमाया, “तो इर तुम अज्जान पर लप्पैक कही.” (मतलब मरुहुदमें आकर नमाज पणहुो)

१३८६ : हजरत अबुदुल्लाह बिन मरुहुद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हुम सभजते थे के, जमाअत छोडनेवाला शप्श या तो मुनाफिक होता था ओसका निशक मअइक हो या, भिमार बदेके भिमार भी हो कांधोका सहारा लेकर मरुहुदमें नमाज पणहुने आता था, और इरमाया, “हुमें सुन्नत हुदा की तालीम दी है और ओनमेंसे ये भी सुन्नत मुअककेदा है के, ओस मरुहुदमें अज्जान होती हो ओसमें आकर जमाअत के साथ नमाज पढें.”

१३८८ : हजरत अबुदुल्लाह बिन मरुहुद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, ओस शप्शको हालते इस्लाममें कल अल्लाह त्वालासे मुलाकातका शौक हो, ओस पर लाओम है के, ओस जगह अज्जान दी जाती है, वहां ओन नमाजीयों की डिफाजत करे, अल्लाह त्वालाने तुम्हारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लम के लिये सुन्नत हुदा मशइय इरमाए है, और ये (जमात के साथ नमाज पणहुना) सुन्नतें मुअककेदह है और अगर तुमने घरोंमें नमाज पणहुली जैसे के ये जमाअत तरक करनेवाला पणहुता है. तो तुम अपने नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी सुन्नत छोड दोगे, और अगर तुमने अपने नबीकी सुन्नत छोड दी तो गुमराह हो जायोंगे. ओ शप्श अथी तरहां वुजु कर के एन मसाओदमें जायेगा, तो भेशक अल्लाह त्वाला ओस के इर कदम के बहलेमें अेक ने की अता इरमाता है, अेक इरज्ज बुलंद करता है, और अेक गुनाह मिटा देता है, हुम ये सभजते थे के जमाअतको छोडनेवाला सिई मुनाफिक होता है, ओसका निशक मअइक हो, और अेक शप्श हो आरीयों के साथ मरुहुदमें लाया जाता और ओसको सईमें पडा कर दिया जाता.

१३८९ : हजरत अबी अरसाअसा मुहारीबी कहते है के, हुम मरुहुदमें हजरत अबु हुसैरुह के साथ बँडे थे ओस वक्त मुअज्जानने अज्जान दी और अेक शप्श मरुहुदसे ओड कर जाने लगा. हजरत अबु हुसैरुह रहीअल्लाहकी नजर ओसका पीछा करती रही. यहां तक के वो मरुहुदसे निकल गया. इर हजरत अबु हुसैरुह रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “एंस शप्शने हजरत अबुल कासीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी ना इरमानी की है.

૧૩૯૦ : અબુ અરસાઅસા મુહારબી બયાન કરતે હૈ કે, હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોને એક શખ્શકો અઝાન કે બાદ મસ્જીદસે જાતે હુએ દેખા તો ફરમાયા, “ઇસ શખ્શને અબુલ કાસીમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે હુકમ કી ના ફરમાની કી હૈ. અબ્દુરહમાન બિન અબી ઊમરહ કહતે હૈ કે, હજરત ઊસ્માન બિન અફફાન રદીઅલ્લાહો અન્હો મગરીબ કી નમાઝ કે બાદ મસ્જીદમેં આએ ઔર અકેલે બૈઠ ગએ. મૈં ભી ઊન કે સાથ બૈઠ ગયા.

ઊન્હોને કહા, અય ભતીજે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જીસ શખ્શને ઇશાકી નમાઝ બા જમાઅત પઠહી તો, ગોયા કે ઊસને આધી રાત તક્કા કિયામ કિયા, ઔર જીસને ફજરકીનમાઝ બા જમાઅત પઠહી તો ગોયા કે ઊસને તમામ રાત કિયામ કિયાં.

૧૩૯૧ : એક દૂસરી સનદસે ભી ઐસી હી હદીષ રિવાયત કી ગઇ હૈ.

૧૩૯૨ : હજરત જુન્દુબ બિન અબ્દુલ્લાહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જીસ શખ્શને ફજરકીનમાઝ પઠહી વો અલ્લાહકી જીમ્મેદારીમેં હૈ ઔર જીસને અલ્લાહકી જીમ્મેદારીમેં ખલલ ડાલા અલ્લાહ ઊસકો ઊંધે મુંહ જહન્નમમેં ડાલેગા.

૧૩૯૩ : હજરત જુન્દુબ કસરી ફરમાતે હૈ કે, (રદીઅલ્લાહો અન્હો) જીસ શખ્શને નમાઝ પઠહી વો અલ્લાહ ત્યાલા કી અમાનમેં હૈ, પસ કોઇ શખ્શ અલ્લાહ ત્યાલા કી અમાનમેં, અલલ ના ડાલે, ઔર જીસ શખ્શને અલ્લાહ ત્યાલા કી અમાનમેં ખલલ ડાલા, અલ્લાહ ત્યાલા ઊસકો ઊંધે મુંહ જહન્નુમ કી આગમેં ડાલ દેગા.

૧૩૯૪ : એક ઔર સનદસે ભી ઐસી રિવાયત હૈ ઊસમેં ઊંધે મુંહ જહન્નુમમેં ડાલનેકા ઝિક નહીં હૈ.

બાબ ૨૨૮ :- ઊઝર કી બિના પર જમાઅત તર્ક કરને કી રુખસત

૧૩૯૫ : હજરત ઊત્માન બિન માલિક અન્સારી રદીઅલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સહાબી હૈ ઔર ગઝવએ બદરમેં શરીક હુએ થે, વો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી ખિદમતમેં હાજીર હુએ ઔર અર્ઝીકયા, યા રસૂલુલ્લાહ ! મેરી નજર કમજોર હો ગઇ હૈ ઔર મૈં અપની કૌમ કી ઇમામત કરતા હું. જબ બારીશ હોતી હૈ તો મેરે ઔર ઊન કે દરમ્યાન નાલા બહને લગતા હૈ.

સુબહકો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લામ હજરત અબુ બક રદીઅલ્લાહો અન્હો કે સાથ તશરીફ લાએ, આપને ઇજાઝત તલબ કી ઔર મૈંને આપકો ખુલા લિયા, આપને ઘરમેં દાખિલ હોને કે બાદ બૈઠ નહીં ફરમાયા, “તુમ કયા ચાહતે હો ? મૈં કીસ જગહ નમાઝ પઠું ?

હજરત ઊત્માન કહતે હૈ કે, મૈંને મકાન કી એક સિમ્ત ઇશારા કિયા, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ખંડે હોકર તકબીર કહી ઔર હમ સબ આપ કે પીઠે ખંડે

हो गये. आपने हो रकअत नमाज पण्डां कर सलाम ईर दिया, हजरत उत्मानसे रिवायत है के, हुमने आपके लिये कीमेका जाना पका रब्बा था. धसे जाने के लिये आपकी रोक लिया. मुहल्ले के तमाम लोग घरमें आ गये और कीसी कहेने वालेने कहा, मालिक बिन दुर्रान कहां है कीसी औरने जवाब दिया, वो मुनाफिक है, अल्लाह त्वाला और उस के रसूलसे मुहुब्बत नहीं करता.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने इरमाया, “उसे औसा ना कहो, क्या तुम नहीं जानते के उसने महज अल्लाह त्वाला की रजा की जातीर लाएलाहा एल्लल्लाह कहा है.

हाजरीनेने कहा, अल्लाह त्वाला और उस के रसूल अहेतर जाननेवाले है.

कीसी शप्शने कहा, हुम उसको मुनाफेकिन के साथ मिलने जुलते देभते है.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने इरमाया, “जुस शप्शने महज अल्लाहकी रजा की जातीर कलमा (लाएलाहा एल्लल्लाह) पण्डां हो, अल्लाह त्वालाने उस पर जहन्नम की आग हराम करदी है.

धप्ने सहाब की रिवायत है की, फिर मैंने अनु सालिम के सरदार हाशीम बिन मुहम्मदसे, महेमूह बीन रबीअ की उस रिवायत के बारेमें पूछा तो उन्होंने धसकी तशरीक करदी.

१३६६ : हजरत उत्मान बिन मालिक भयान करते है के, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमकी भिदमतमें हाजुर हुआ. आकी हदीष वैसी है जैसे उपर गुजरी और ये धनक्ष है के, अक शप्शने कहा, मालिक बिन दुर्रान कहां है ? हजरत महेमूह बिन रबीअ रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, मैंने ये हदीष अक औसी जमाअतमें भयान की जसमें हजरत अबु अय्युब अन्सारी रहीअल्लाहो अन्होनी थे. उन्होंने कहा, मेरा भयाल है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने ये बात नहीं इरमाए होगी. हजरत महेमूह कहते है फिर मैंने कसम आधके, जकर हजरत उत्मान बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्हो धसकी तशरीक करुंगा.

मैं जब उन के पास पहोंया तो, वो धन्तेहाध भुहे हो यु के थे और उनकी बीनाध जाती रही थे. और वो उस वक्तभी अपनी कौम के धमाम थे. मैं उन के पहेलुमें जकर भैक गया. और उनसे यही हदीष दरयाकत की.

उन्होंने मुजसे वो हदीष पहले की तरहां भयान करदी.

अहरी कहेते है के, उस वाक्या के बाद अहुतसी चीजें इर्ण हुए और अहोतसे अरकान नाजिल हुये. और हीन मुकम्मल हो गया. पस जे शप्श धोभा जाना ना याहता हो वो धोभा ना आये. (के इराधअ अन्न किये बिना महज लाएलाहा एल्लल्लाह पण्डां हो उस पर जहन्नम की आग हराम करदी है.)

૧૩૯૭ : હજરત મહેમૂદ બિન રબીઅ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મુજે રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકા વો કુલ્લી કરના યાદ હૈ. જો આપને હમારે મકાન કે ઝોલસે કી થી. હજરત મહેમૂદ બયાન કરતે હૈ કે, મુજસે હજરત ઉત્બાન બિન માલિકને કહા કે, મૈને અર્ઝ ક્રિયા, યા રસૂલલ્લાહ ! મેરી નજર કમજોર હો ગઈ હૈ. ફિર ઊપરવાલી હદીષ યહાં તક બયાન કી કે આપને હમૈં દો રકઅત નમાઝ પઠ્ઠાઈઝઝૌર હમને ખાના ખાને કે લિયે રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો રોક લિયા જો હમને આપ કે લિયે તૈયાર ક્રિયા થા. ઝૌર જો મુઅમ્મર ઝૌર યુનુસને ઇજાફા ક્રિયા હૈ ઊસકા ઝિક્ક નહીં ક્રિયા.

બાબ ૨૨૯ :- જમાઅત કે સાથ નવાફિલ પઠ્ઠનેકા ઝૌર પાક ચટાઈ વઘૈરહ પર નમાઝ પઠ્ઠના જાઈઝ હોના.

૧૩૯૮ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, ઊનકી દાદી હજરત મલિકહ રદીઅલ્લાહો અન્હોને રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી ખાના પકા કર દાવત કી, ખાના ખાને કે બાદ આપને ફરમાયા, “અલો મૈં તુમ્હેં નમાઝ પઠ્ઠાં હું.”

૧૩૯૯ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હો કહેતે હૈં, મૈં એક ચટાઈ લે આયા જો જ્યાદા ઇસ્તેમાલમૈં લાઝમે જાને કી વજહસે કાલી પડ ગઈ થી. મૈને ઊસે પાનીસે ધોયા, ફિર ઊસ ચટાઈ પર રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ ખડે હો ગઝમે ઝૌર મૈં ઝૌર યતીમ આપ કે પીછે સફ બાંધકર ખડે હો ગઝમે. ઝૌર બુદિયા (સહાબિયહ રદીઅલ્લાહો અન્હો) હમારે પીછે થી. રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને હમૈં દો રકઅત નમાઝ પઠ્ઠાઈ ફિર તશરીફ લે ગઝમે.

૧૪૦૦ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ સબસે આલા ઝૌર અહસન અખલાક કે માલિક થે. બઝઅઝ અવકાત આપ હમારે ઘરમૈં તશરીફ લાતે ઝૌર નમાઝકા વકત આ જાતા થા તો જીસ ચટાઈ પર બૈઠે હોતે થે ઊસીકો ઊઠાનેકો હુકમ દેતે, ઊસે સાફ કર કે પાનીસે ધોયા જાતા, ફિર રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ નમાઝ પઠ્ઠાતે ઝૌર હમ આપ કે પીછે ખડે હો જાતે, વો ચટાઈ ખજુર કે પત્તોં કી હોતી થી.

૧૪૦૧ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ હમારે ઘર તશરીફ લાઝમે ઝૌર ઘરમૈં સિફ મૈં, મેરી માં, ઝૌર મેરી ખાલા ઊમ્મે હરામ થે.

આપને ફરમાયા, “ઊઠો, મૈં તુમ્હેં નમાઝ પઠ્ઠાંઊ.” હાલાં કે વો કોઈ ફર્ઝ નમાઝકા વકત નહીં થા.

એક શબ્દને હજરત સાબિતસે પુછા, “રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને હજરત અનસકો કિસ તરફ ખડા ક્રિયા થા?”

સાબિતને કહા, “આપકી કોઈ તરફ.”

ફિર રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને હમારે લિયે દુનિયા ઓર આખેરત કી હર ફલાહ કે લિયે દુઆ કી.

મેરી માં ને કહા, “યા રસૂલલ્લાહ, અનસ આપકા છોટાસા ગુલામ હૈ, ઊસ કે લિયે ખાસ દુઆ ફરમાઈયે.”

આપને મેરે લિયે હર ખેર કી દુઆ કી, ઓર આખિરમેં ફરમાયા, “અય અલ્લાહ ! ઇસ કે માલ ઓર દૌલતમેં કસરત ઓર બરકત અતા ફરમા !” હજરત અનસ બિન માલિક રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ઇન્હે ઓર ઇન કે માં, યા ખાલાકો નમાઝ પઠાઈં ઓર બતાયા કે મુજે આપને દાંઈ જાનીબ ખડા ક્રિયા ઓર ઓરતોંકો હમારે પીછે.

૧૪૦૨ : એક ઓર સનદસે ભી ઐસી હી રિવાયત નકલ હુઈ હૈ.

૧૪૦૩ : રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી જોઝા ઊમ્મુલ મુઅમેનીન હજરત મયમૂનહ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ મેરે બરાબર ખેડે હોકર નમાઝ પઠહતે ઓર બાઅઝ અવક્રત સજદે કરતે વકત આપકા લિખાસ મુજસે ટકરાતા. આપ જાનમાઝ પર નમાઝ પઠાં કરતે થે.

૧૪૦૪ : હજરત અબુ સઈદ ખુદરી રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મેં રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી ખિદમતમેં હાજીર હુઆ તો દેખા, આપ ચટાઈ પર નમાઝ પઠહ રહે થે ઓર ઊસી પર સજદા કરતે થે.

બાબ ૨૩૦ :- નમાઝ બાજમાઅત અદા કરને, નમાઝકા ઇન્તજાર કરને ઓર નમાઝ કે લિયે દૂરસે આને કી ફઝીલત.

૧૪૦૫ : હજરત અબુ હુરૈરહ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જમાઅત કે સાથ નમાઝ પઠહતા ઘર ઓર બાજારમેં નમાઝ પઠહને કે બનિસ્બત. ખીસસે જ્યાદા દરજા ફઝીલત રખતા હૈ. ક્યું કી જબ તુમમેંસે કોઈ શખ્શ સિફ નમાઝ પઠહને કે લિયે અચ્છી તરહા વુઝુ કર કે મસ્જીદમેં જાતા હૈ તો મસ્જીદમેં પહોંચને તક ઊસ કે હર કદમ કે બદલેમેં એક દરજા બુલંદ ક્રિયા જાતા હૈ, ઓર એક ગુનાહ મિટા દિયા જાતા હૈ, મસ્જીદમેં દાખિલ હોને કે બાદ વો જીતની દેર નમાઝ કે ઇન્તજારમેં બૈઠા રહેતા હૈ ઊસકો નમાઝમેં હી શુમાર ક્રિયા જાતા હૈ ઓર ફરીસ્તે ઊસી વકત તક દુઆ કરતે રહેતે હૈ જબતક તુમમેંસે કોઈ શખ્શ નમાઝકી જગહ બૈઠા રહેતા હૈ, જબતક વો શખ્શ વુઝુ તોડકર ફરીસ્તોંકો ઇઝા ના દે, ફરીસ્તે કહેતે રહેતે હૈ, યા અલ્લાહ ઇસ પર રહમ ફરમા, યા અલ્લાહ ઇસકો બખ્શ દે, યા અલ્લાહ ઇસકી તૌબા કુબુલ ફરમા.

૧૪૦૬ : એક ઓર સનદસે ભી ઐસી હી રિવાયત મન્કુલ હૈ.

૧૪૦૭ : હજરત અબુ હુરૈરહ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ તક તુમમેંસે કોઈ શખ્શ, નમાઝ પઠહનેકી જગહ બૈઠા રહે

और वुजु ना तोड़, ठिसका शुमार नमाज्हीमें होता है और इरीस्ते ठिस के लिये दुआ करते है. अय अल्लाहु धसको बप्श दे अय अल्लाह धसपर रहम इरमा.

१४०८ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “बन्देका ठिस वक्त तक नमाजमें शुमार होता है जबतक वो ज्ञानमाज पर भैठा नमाजका धन्तगार करता रहेता है. और इरीस्ते दुआ करते है या अल्लाह धसे बप्श दे, या अल्लाह धस पर रहम इरमा.

यहां तक के वो शप्श ठिठकर अला ज्ञाये या वुजु तोड़ दे रक्षेअ कहते हैं, मैंने हजरत अबु हुरैरहसे पुछा, “वुजु तोड़नेसे क्या मुराह है ?”

ठिन्होंने कहा, “रिह आरीज कर देना.”

१४०९ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब तक तुममेंसे कोछ शप्श धमाम के धन्तगारमें रहता है, और नमाज के अलावा कोछ और चीज ठिसे धर ज्ञानेसे रो के दुआ नही होती. (तो) ठिसका नमाजमें ही शुमार होता है.”

१४१० : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब तक तुममेंसे कोछ शप्श नमाज के धन्तगारमें भैठा रहेता है और वुजु नही तोड़ता इरीस्ते ठिस के लिये दुआ करते है. या अल्लाह धसको बप्श दे, या अल्लाह धस पर रहम इरमा.”

१४११ :: अेक और सनहसे ली अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१४१२ : हजरत अबु मुसा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “ अय लोगो नमाजक सभसे जयाहल अजर उंस शप्सक्रे मिलता है जे सभसे जयाहल हुरसे नमाज पणहने आये धसके बाह अजर उंस शप्सक्रे मिलता है जे उंसके बाह हुरसे नमाज पणहने आनेवाला हो जे शप्स धमामके साथ नमाज पणहने के धन्तगारमें रहता है उंसक्रे अजर उंससे जयाहल है जे अपनी नमाज पढ कर सो ज्ञाये और अबु क्रीबक्री रिवायतमे बाजमायत पढनेक्रे जिक्र है.

१४१३ : हजरत ठिभैय बिन कयब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं अेक शप्शको ज्ञानता हुं ठिसका धर मरुणहसे सभसे जयाहल हूर था. और ठिसकी नमाज कलमी कजा नही होती थी.

मैंने ठिसे भश्वरा दियाके, तुम अेक गधा भरीहलो और ठिस पर सवार होकर. धूप और अंधेरेमें आसानीसे आ शको.

ठिसने कहा, अगर मेरा धर मरुणह के पहेलूमैं होता तो ली मेरे लिये भुशी डी पात नथी. मेरी नियत ये है के, धरसे मरुणह तक मेरा आना ज्ञाना लिभा ज्ञाये. रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “अल्लाह त्वालाने ये सली (सवाब) तुम्हारे लिये जमा कर दिया है.

१४१४ : अेक और सनहसे ली अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१४१५ : हजरत उमैय बिन कअब रहीअल्लाहो त्वाला अन्होसे रिवायत है के, अेक अन्सारी रहीअल्लाहका घर मदीनेमें सभसे ज्वादा दूर था. और उनकी कोय भी नमाज रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ कजा नहीं होती थी.

हजरत उमैय बिन कअब रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है मुजे उनकी मुशकीलका अहेसास हुआ, मैंने उनसे कहा, “अय ! इलां ! काश तुम अेक गधा ढरीद लेते जे तुम्हें धूपसे और जमीन के ज्ञानवरोंसे बचाता.”

उनहोंने कहा, “अल्लाहकी कसम ये मुजे परसंद नहीं है, के मेरा घर मुहम्मद मुस्तफा रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के घर के नजदीक होता.”

मुजे उनकी ये बात ना-गंवार गुजरी, तो मैंने ये वाकियेकी आप सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के पास आकर ढबर दी. आपने उनहें बुलाया तो उनहोंने रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे भी वही बात कही जे मुजेसे कही थी. और जिक्र कियोकें, “मैं अपने कदमोंका अजर खाता हूं.”

रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “भेशक तुम्हें वही अजर मिलेगा जसकी तुमने ओम्मीद की है.”

१४१६ : अेक और सनदसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है.

१४१७ : हजरत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हमारे घर मस्जिदसे दूर थे तो, हमने इरादा किया के अपने घर भेय कर मस्जिदसे करीब घर ढरीद लें, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इससे मना किया और इरमाया, तुम्हारे हर कदम बहते अेक हरज है.”

१४१८ : हजरत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मस्जिद के करीब कुछ जगह आती हुई तो, अनु सलमाने इरादा किया के वहां आ जाये, जब ये ढबर रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम तक पहुँची तो आपने इरमाया, “मुजे ये ढबर मीली है के, तुम मस्जिद के करीब आना चाहते हो ?”

उनहोंने कहा, “जो हां, रसूलुल्लाह ! हमारा यही इरादा है ?”

आपने इरमाया, “अनु सलमा, अपने घरोंमें रहो, तुम्हारे कदमों के निशान, लीजे जाते है. (इरसे इरमाया) अपने घरोंमें रहो तुम्हारे कदमों के निशान लिजे जाते है.”

१४१९ : हजरत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाहसे रिवायत है के, मस्जिद के पास जगह आती थी तो अनु सलमाने मस्जिद के करीब आ जाना चाहा नपीये करीब रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमको जब ये ढबर पहुँची तो, इरमाया, “अय अनु सलमा ! अपने घरोंमें रहो तुम्हारे कदमों के निशान लिजे जाते है.”

उनहोंने कहा, “इर हमें नजदीक आने की ज्वाहिश ही ना रही.”

१४२० : हजरत अबु दुर्रैद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “अगर कोय शय अ अपने घरमें वजु करे और इर आकर

અલ્લાહ કે કીસી ઘરમેં કોઈ ફર્જ અદા કરને કે લિયે જાએ તો ઊસ કે હર એક કદમ કે બદલે એક ગુનાહ મુઆફ હોગા ઔર દૂસરે કદમસે એક દરજા બુલંદ હોગા.

૧૪૨૧ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “બતાઓ, અગર તુમમેસે કીસીકે દરવાજે પર એક દરિયા (નદી) હો, ઔર વો હર રોજ ઊસમેં પાંચ બાર ગુસ્લ કરે તો, કયા ઊસ પર કોઈ મૈલ બાકી રહેગા ?

સહાબાને ફરમાયા, “પાંચ નમાઝોં કી ઔસી હી મિસાલ હૈં, અલ્લાહ ત્યાલા ઊન કે સબબ ગુનાહોંકો મિટા દેતા હૈ.

૧૪૨૨ : હજરત જાબિર બિન અબ્દુલ્લાહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, પાંચ નમાઝોં કી મિસાલ ઊસ વસીઅ ઔર રવાં દરિયા (નદી) કે જૈસી હૈ જો તુમમેંસે કીસી એક કે દરવાજે પર હો, ઔર વો હરરોજ પાંચ મરતબા ઊસ દરિયાસે, ગુસ્લ કરતા હો. રાવી હસનને ફરમાયા, “ફિર ઊસ કે બદન પર બિલકુલ મૈલ નહીં રહેગા.

૧૪૨૩ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, નબીએ કરીમ રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જો શબ્શ સુબહ યા શામ મસ્જીદમેં આતા હૈ, અલ્લાહને ઊસ કે લિયે જન્નતમેં સુબહ યા શામ કી જ્યાકત તૈયાર કર રખી હૈ.

બાબ ૨૩૧ :- ફરજી નમાઝ કે બાદ મુસલ્લો પર બૈઠે રહને કી ઔર મસ્જીદ કી ફઝીલત :-

૧૪૨૪ : સિમાક બિન હર્બ રિવાયત કરતે હૈ કે, મૈને જાબિર બિન સમૂરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે પૂછા, “કયા આપ રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે પાસ બૈઠતે થે ?”

ઊન્હોંને કહા, “હાં, બહોત, આપ જીસ જગહ સુબહ કે નમાઝ પઠહતે થે તુલુઅ આફતાબ તક વહાંસે નહીં ઊઠતે થે. તુલુઅ આફતાબ કે બાદ વહાંસે ઊઠતે, યહાં તક કે લોગ આપસમેં બાતે કરતે, જમાનઅએ જાહિલીયતકા તઝકેરા કર કે હંસતે થે ઔર આપ ભી મુસ્કુરા દેતે થે.”

૧૪૨૫ : હજરત જાબિર બિન સમૂરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ અપને મુસલ્લો પર (નમાઝ કે બાદ) બૈઠે રહતે થે, યહાં તક કે સૂરજ અચ્છી તરહા નિકલ આતા થા.

૧૪૨૬ : એક ઔર સન્દસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૪૨૭ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “શહેરોમેં અલ્લાહ ત્યાલા કી સબસે જ્યાદા પસંદીદા જગહ મસ્જીદ હૈ ઔર સબસે જ્યાદા નાપસંદ જગહ બાઝાર હૈ.”

आय २३२ :- धमाभतका हकदार कीन है ?

१४२८ : हजरत अबु सय्द जुदरी रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जब तीन नमाजीहों तो उनमेंसे एक धमाभत करे. और धमाभ बननेका जयादा हकदार वो है जोसे कुरआनका जयादा धलम हो.

१४२९ : एक और सनहसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है.

१४३० : दूसरी एक सनहसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है.

१४३१ : हजरत अबु मरुअद अन्सारी रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “कीम की धमाभत वो शप्श करे जो सभसे जयादा कुरआनका धलम रभता हो, जो सभसे जयादा हदीषका धलम रभता हो, और अगर धलमे हदीषमें अगर हिरतरतमें भी सभ बराबर हों तो, जो सभसे पहले धरलाम लाया हो, और कोय शप्श मुकरर सुदा धमाभ के होते हुये धमाभत ना कराये और कीसी मसनह पर धगगत के बिना नैह नहीं.”

१४३२ : एक और सनहसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है.

१४३३ : हजरत अबु मरुअद अन्सारी रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “कीम की धमाभत वो शप्श करे जो कित्ताबुल्लाहका सभसे जयादा धलम रभता हो और सभसे अच्छी किरअत करता हो, और अगर उनकी किरअत बराबर हो तो, वो शप्श धमाभत करे जोसने उनमें सभसे पहले हिरतरत की हो. और अगर हिरतरतमें सभी बराबर हो तो वो शप्श धमाभत करे. जोसकी उअ्र सभसे जयादा हो, कीसी के घर और उसकी हुकुमतमें कोय शप्श धमाभ ना बने और कीसी की धगगत के बगैर उसकी मसनह पे ना नैह.”

१४३४ : हजरत मालिक बिन हुवैरीष रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम हमउअ्र नौजवान रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी भिहमतमें हाजिर हुये और आप के पास बीस दिन ठहरे. रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम निहायत शकिक और महेरबान थे आपकी बयाल हुआ के हमें घर की याद सता रही होगी. आपने पुछके, तुम घरमें कीन अजुजोंको छोड आये हो ?

हमने आपकी बताया तो आपने इरमाया, “अपने अेलो अयाल के पास जाओ और वही ठहरो, और उन्हें दीन शिआओ, और जब नमाजका वक्त आ जाये तो तुममेंसे एक शप्श अजान दे और जो बडा हो वो धमाभत कराये.

१४३५ : हजरत मालिक बिन हुवैरीष रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं कुछ लोगों के साथ रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी भिहमतमें हाजिर हुआ. जो सभी हमउअ्र नौजवान थे. बाकी हदीष वैसी है जैसी उपर गुजरि है.

१४३६ : हजरत मालिक बिन हुवैरीषसे रिवायत है के, मैं और मेरा साथी रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी भिहमतमें हाजिर हुये. जब हमने वापीस जानेका धरादा

किया तो आपने हमसे इरमाया, “जब नमाजका वक़्त आये तो तुम अज़ान देना, और धकामत कहेना, और ज़े तुममेंसे बडा हो वोह धमामत कराये.

१४३७ : अेक और सनहसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है ज़समें धतना धज्जक है के, वो दोनो कीरअतमें बराबर थे.

भाब २३३ :- नमाजमें दुआये कुनुत पणहनेका मुस्तहब होने के बयानमें.

जब मुसलमानो पर कोध बला नाज़िल हो तो नमाजमें जुलूह आवाजसे दुआये कुनुत (नाजेलाह) पणहना और अल्लाहसे पनाह मांगना मुस्तहब है. और ये पणहना ठिस जगह पर है (महल व मुक्कम) के आभरी रकअत के इकुअसे सर ठिठाने भाह और इशक्रीनमाजमें कुनुत पर हवाम मुस्तहब है.

१४३८ : हजरत अबु हुरैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लम इशरकी किरअतसे इरिग होकर इकुअसे सर ठिठकर इरमाते, (दूसरी रकअतमें) समीअल्लाहु लेमन हमीहह, रब्बना लकल हम्द. इर भडे होकर ये दुआ पणहते. अल्लाहुम्भ! नज्जल बिन वलीह, सलमा बिन हिशाम, व अयाश बिन अभी रबीआ वल मुस-तह्मोईन मीनल मुअमेनीना, अल्लाहुम्भ! अरहु-हु ताअतेक अला मुहर व ज्वालहा अलयाहम क्सीती युसुफ़ अल्लाहुम्भ! लुअन लहयान, रिअल, अकवान व ठिसैयह अषतिल्लाह व रसुलुहु.”

तरजूमा :- अय अल्लाह ! वलीह बिन वलीह, सलमा बिन हिशाम, और अयाश बिन अभी रबीआ और कमज़ोर मुसलमानोंको इक्फ़ारसे नज़ात दे, अय अल्लाह कपीला मुहरको सप्ततीसे रौह दे, और ठिन पर हजरत युसुफ़ अलयाहिससलाम के जमाने की तरहा कहत (हुकाल) डाल दे, या अल्लाह ! लहयान, रिअल, अकवान और ठिसैयह पर लानत इरमा, ज़े अल्लाह और ठिस के रसूल की नाइरमानी करते है.

इर हमें पता यला के जब ये आयत नाज़िल हुध, “लयलतुल मीनल अमरे शैयधन व यतुबु अलयाहम अय मुअजजेरीन इ धन्नहुम अलेम्नू.” तो आपने दुआको पणहना छोट दिया.

१४३९ : अेक और सनहसे हजरत अबु हुरैरह रदीअल्लाहो अन्होकी रिवायत हजरत युसुफ़ अलयाहिससलाम के कहेत तक आध है ठिस के भाह और कुध बयान नहीं किया है.

१४४० : हजरत अबु हुरैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने अेक महिने तक इकुअ के भाह दुआये कुनुत (नाजेलाह) पणही. समीअल्लाहु लेमन हमीहह कहेने के भाह भडे होकर दुआ इरमाते, अय अल्लाह वलीह बिन वलीहको नज़ात दे, अय अल्लाह सलमा बिन हिशामको नज़ात दे, अय अल्लाह कमज़ोर मुसलमानोंको नज़ात दे, अय अल्लाह मुहर (कपीला)को सप्ततीसे पामाल कर, ठिन पर हजरत युसुफ़ अलयाहिससलाम जैसी कहत साली नाज़िल इरमा. हजरत अबु हुरैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने देभा धस के भाह रसुलल्लाह सललल्लाहो अलयहे

व सल्लमने दुआ करनी छोड दी. मुजसे कहा गया, क्या तुम नहीं देखते वो लोग तो (पुढा के सामने) पेश होंगे.

१४४१ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने धशांकी नमाजमें समीअल्लाहु लेमन हमीदह कहेकर सज्देमें जानेसे पहले ये दुआ की, अय अल्लाह ! अयाश बिन रबियाको नजात दे. उस के बाद कसीय्ही युसुफ तक अवजाह के मुताबिक रिवायत किया और उस के बाद कुछ जिंक नहीं किया.

१४४२ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होने कहा, पुढा की कसम में रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी नमाजकी करीब नमाज पणहोंगा. फिर अन्होंने जुहर, धशां और इजर नमाज पणहोंगे. और अन्होंने कुतुब किया. याने मुसलमानों के लिये दुआ और कुंफर पर लानत की.

१४४३ : हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने तीस (३०) दिन तक अन्होनों के लिये बहदुआ इरमाह अन्होंने अरहाजे भीरे मअिनहको शहीद कर दिया था. आपने रिअल, जकवान, लहयान और अश्या के भिलाइ बहदुआ की अन्होंने अल्लाह और उस के रसूल की नाकरमानी की थी.

हजरत अनस कहते हैं के, जो अरहाजे भीरे मअिनाहमें शहीद हुये थे अन्होंने अन्होंने अल्लाह त्वालांने ये आयत नाजील इरमाह,
"हमारी कौम तक ये पयगाम पलोंया हो के हमने, अपने सभसे मुलाकात की, वो हमसे राज हो गया और हम उससे राज हो गये." हम इस आयत की तिलावत करते थे बादमें ये आयत मन्सूफ हो गई.

१४४४ : मुहम्मद कहते हैं मैंने हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे पुछा, "रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इजरकीनमाजमें दुआये कुतुब पणही है ?"

अन्होंने कहा, "हां, कुछ अरसे तक इकुअ के बाद." (पणही है)

१४४५ : हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अेक माह तक इकुअ के बाद रिअल और जकवान के भिलाइ बहदुआ की और आपने इरमाया, "अशयाने अल्लाह और रसूल की नाकरमानी की है.

१४४६ : हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अेक माह तक इकुअ के बाद दुआये कुतुब पणही. अन्होंने आपने अशिया के लिये बहदुआ इरमाह.

१४४७ : आशीम कहते हैं के, "मैंने हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे पुछा, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इकुअसे पहले दुआये कुतुब पणही या इकुअ के बाद ?"

अन्होंने कहा, "इकुअसे पहले."

मैंने कहा, "कुछ लोग कहते हैं के, रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इकुअ के बाद दुआये कुतुब पणही है."

૧૪૪૮ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલલાહો અન્હોને કહા, “રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમને સીફ એક માહ તક દુઆએ કુનુત (રૂકુઅ કે બાદ) પળહી હૈ, જીસમેં ઊન લોગોં કે ખિલાફ બદદુઆ કી જીન્હોને કારી (કુરુઅ) સહાબાકા કતલ કર દિયા થા.” હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, “મેંને રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમકો કીસી લશ્કર કે લિયે ઇતના ગમગીન હોતે હુએ નહીં દેખા, જીતના આપ સત્તર કુરુઅ અસ્હાબ કે લિયે ગમગીન હુએ જો, બીરે મઊનહુ કે દિન શહીદ હુએ થે. આપ એક માહ તક ઊન કે કાતિલોં કે ખિલાફ દુઆએ જરર ફરમાતે થે.”

૧૪૪૯ : ઔર એક સનદસે ભી એસી હી રિવાયત મન્કુલ હૈ ઔર બઅઝ કુછ રાવીઓને દુસરે રાવીઓં કી રિવાયતમેં ઇજાફા કિયા હૈ.

૧૪૫૦ : હજરત અનસ રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમને એક મહિને તક દુઆએ કુનુત (નાજિલહ) પળહી જીસમેં આપ રઅલ, ઝકવાન ઔર અશિયહ પર લઅનત ભેજતે થે. જીન્હોને અલલાહ ઔર ઊસ કે રસૂલ કી ના ફરમાની કી થી.

૧૪૫૧ : ઔર એક સનદસે ભી એસી હી રિવાયત મન્કુલ હૈ.

૧૪૫૨ : હજરત અનસ રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમને એક માહ તક દુઆએ કુનુત (નાઝેલા) પળહી જીસમેં અરબ કે કઇ કબીલોં કે લિયે દુઆએ જરર ફરમાઇ.

૧૪૫૩ : હજરત બરાઅ બિન આઝિબ રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમ ફજર ઔર મગરીબ કી નમાઝમેં દુઆએ કુનુત (નાઝેલા) પળહાં કરતે થે.

૧૪૫૪ : એક ઔર સનદસે ભી એસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૪૫૫ : ખુફફા બિન ઇમા ગિફારી રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમને નમાઝમેં ફરમાયા, “અય અલલાહ ! બનુ બહયાન, રઅલ ઔર અશિયહ પર લઅનત ફરમા જીન્હોને અલલાહ ઔર ઊસ કે રસૂલ કી નાફરમાની કી ઔર (કબીલા) ગિફાર કી મગફિરત ફરમા ઔર કબીલા અસલમકો સલામત રખ.

૧૪૫૬ : ખુફફા બિન ઇમા ગિફારી રદીઅલલાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસુલલલાહ સલ્લલલાહો અલયહે વ સલ્લમને રૂકુઅ કિયા ફિર રૂકુઅસે સર ઊઠાકર ફરમાયા, “(કાનીલા) ગિફાર કી અલલાહ મગફિરત ફરમાએ, ઔર (કબીલા) અસલમકો અલલાહ મહેફુઝ રખે, અશિયહને અલલાહ ઔર ઊસ કે રસૂલ કી નાફરમાની કી હૈ, અય અલલાહ ! બનુલાહયાન પર લાનત કર ઔર રઅલ ઔર ઝકવાન પર લઅનત કર. ફિર આપને સજદહ કિયા. ખુફફા કહેતે હૈ કે, કુફફાર પર ઇસી વજહસે લાઅનત કી જાતી હૈ.

૧૪૫૭ : એક ઔર સનદસે ભી એસી હી હદીષ રિવાયત હુઇ હૈ. લેકીન ઊસમેં કુફફાર પર ઇસી વજહસે લાનત કી જાતી હૈ ઇસકા ઝિક નહીં હૈ.

भाष २३४ :- कजा नमाजोंकी जल्द अद्दा करनेका भयान

१४५८ : हजरत अबु हुसैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम गजवमे जैबरसे वापसीमें सारी रात सहर करते रहे, यहां तक के आभिरे शभ के वक्त आप पर नींदका गल्पा हुआ, आप ठिस वक्त हहर गये, और हजरत बिलालसे इरमाया, “तुम आज रात हमारी हिकाजत करो.

तो हजरत बिलाल उनकी इस्तीताअत के मुताबिक निहल नमाज पणहुते रहे. और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम और जाकी सहाभा सो गये. फिर जब सुण्ड करीभ हुं तो, हजरत बिलालने अपनी ओटनीसे टेक लगाकर मशरीफ तरफ मुंड कर के (बैठ) और उनकी आंभ लग गइ. फिर ना तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम और ना बिलाल और ने तो कीसी सहाभाकी आंभ खुली यहां तक के उन सभ पर धूप आ गइ.

सभसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम बेदार हुये (धूप देभकर) गभराये और इरमाया, “अय बिलाल !हजरत बिलालने इरमाया, “या रसूलुल्लाह आप पर मेरे भां भाप कुरभान हों, मेरी इहको भी ठिसी जातने ज्वाबिद्दा कर दिया था जसने आपकी जाते करीमको सुला दिया था.

आपने इरमाया, “यहांसे क्यू करो.

थोडी हेर चलने के बाद आपने वुजु इरमाया, “और हजरत बिलालको इकामतका हुकुम दिया और उनहोंने अेकामत पणही और आपने सहाभाको नमाज पणहाइ (कजा)

नमाजसे इरीग होकर आपने इरमाया, “तुममेंसे कोइ भी शप्स जब नमाज लूल जये तो नमाज याद आते ही पणहले, क्युं के अल्लाह त्आला इरमाता है, मेरी याद के लिये नमाज कायम करो.

रावी युनुस भयान करते है के, इब्ने शिहाभ इस आयतको लिज जिकरा (कायम करो नमाज याददास्त के लिये) पणहुते थे.

१४५९ : हजरत अबु हुसैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक बार (वो) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के साथ आभरी शभमें कयाममें जडे हुये और हममेंसे कोइ शप्स बेदार नहीं हुवा यहां तक के सूरज तुलुअ हो गया.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हरेक शप्स अपनी सवारी की लगाम पकड कर यहांसे रवाना हो जये, क्युके, जस जगह हम हहरे थे वहां शयतान (का असर) है.

हमने अैसा ही किया, फिर आपने पानी मंगवा कर वुजु किया. फिर हो रकअत (इजरकी सुन्नत नमाजें) पणहीं फिर अेकामत कही गइ और आपने इजरकी नमाज (कजा) पणहाइ.

१४६० : हजरत अबु कताहह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने हमसे इरमाया, “तुम आज होपहरसे लेकर रात तक यलोगे और अगर अल्लाहने याहा तो कल सुण्ड पानी पर पहोंयोगे.

લોગ એક દૂસરે કી તરફ મુતવજજે હુએ બગૈર સફર કરતે રહે, યહાં તક કે આઘી રાત હો ગઈ. ઊસ વક્ત મેં આપ કે પહેલૂમેં થા. રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકો નીંદ આને લગી, જબ આપ અપની સવારી પર જુ કે તો, મેંને આપકો જગાએ બિના સહારા દિયા યહાં તક કે આપ સીધે હોકર સવારી પર બૈઠ ગએ, ફિર ચલતે રહે યહાં તક કે રાત ઢલી, ફિર આપ સવારી પર જુક ગએ મેંને જગાએ બિના આપકો સહારા દિયા, યહાં તક કે આપ સીધે હોકર સવારી પર બૈઠ ગએ. યહાં તક કે આખિર શબકા અમલ હો ગયા, આપ ફિર સવારી પર પહેલી દો બારસે જ્યાદા જુક ગએ. કરીબ થા કે આપ ગિર પડતે મેંને આપકો સહારા દિયા, આપને સરે અકદસ ઊઠા કર પુછા, તુમ કૌન હો ?

મેંને જવાબ દિયા, અબુ કતાદહ

આપને પૂછા, તુમ કબસે મેરે સાથ ચલ રહે હો ?

મેંને કહા, મેં પુરી રાત ઇસી તરહાં આપ કે સાથ ચલતા રહા હું.

આપને ફરમાયા, “અલ્લાહ ત્યાલા તુમહારી ઇસી તરહાં હિફાઝત કરે. જીસ તરહાં તુમને ઊસ કે નબીકી હિફાઝત કી હૈ. ફિર ફરમાયા, “તુમ દેખ રહેહો કે હમ લોગોં કી નિગાહોંસે ઓઝલ હૈ.

ઔર પુછા, કયા તુમહે કોઈ શખ્શ નજર આ રહા હૈ ?

મેંને અર્જ કિયા, એક સવાર હૈ, ફિર મેંને કહા, એક ઔર સવાર ભી હૈં, યહાં તક કે હમ સાત સવાર જમા હો ગએ, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ રાસ્તેસે કિનારે હો ગએ, ઔર અપના સર મુબારક (સોને કે લિયે) જમીન પર રખ્યા ઔર હમસે કહા, તુમ લોગ (જાગતે રહે કર) મેરી નમાઝ (ફજર)કા ખ્યાલ રખના.

ફિર સબસે પહેલે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ બેદાર હુએ, ઔર ધૂપ આપકી પીઠ પર આ ગઈ. ફિર હમ લોગ ગભરા કર ઊઠે.

આપને ફરમાયા, “ચલો સવાર હોકર યહાંસે નિકલ ચલો.

હમ ચલ પડે, જબ સૂરજ બુલંદ હુઆ તો આપ સવારીસે ઊતરે ઔર મેરે પાસ જો વુજુક બરતન થા વો મંગવાયા ઊસમેં થોડા સા પાની થા. આપને આમ અવકાત કે બનિસ્બત કમ મરતબા પાની ડાલકર ઊસ બરતનસે વુજુ કિયા, ફિર આપને અબુ કતાદહસે ફરમાયા, “ઇસ બરતન કી હિફાઝત કરના કે ઇસમે એક અજબ ખબર જાહિર હોગી.

ફિર હજરત બિલાલને અઝાન કહી, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને દો રકઅત (ફજરકી સુન્નત) નમાઝ પઠી. ઔર સહાબાકો ફજરકી નમાઝ ઐસી હી પઠહાઈ જૈસે કી પહેલે પઠહાતે થે. ફિર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ સવાર હુએ ઔર હમ ભી સવાર હુએ. આપ કે સાથ યહાં તક કે હમમેંસે હર એક શખ્શ એક દૂસરેસે સરગોશી કરતા થા કે આજ જો નમાઝ હમસે કઝા હુઈ ઊસકા કફફારા કયા હોગા ?

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “કયા તુમહારે લિયે મેરી જીન્દગી નમૂના નહીં ? ફિર ફરમાયા, “નીંદમેં કોઈ તકસીર નહીં હૈં, તકસીર ઊસ સૂરતમેં હૈ, જબ કોઈ શખ્શ (જાગતે હુએ ભી) નમાઝ ના પઠહે. યહાં તક કે દૂસરી નમાઝકા વક્ત હો

जग्ये. जस कीसी के साथ अँसी सूरत पेश आये तो वो जगने के भाद नमाज पण्ड ले और दूसरे दिन आपने वक्त पर नमाज अदा करे.

द्वि इरमाया, “तुम्हारा क्या भयाल है ? लोगोंने क्या किया होगा ?

द्वि आपने ही इरमाया, “लोगोंने सुण्ड के वक्त अपने नबीको नहीं देखा.अबु जक और उमर रहीअल्लाहो अन्दुमने कडा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम, तुम्हारे आगे है अगर लोग अबु जक और उमर रहीअल्लाहो अन्दुम की बात मान लेते तो बेहतर होता.

द्वि हुम उन लोगों के पास उस वक्त पहोंये जब हीन यह गया था. और दर चीज गरम हो गइ थी.

सब लोग कहेने लगे, या रसूलुल्लाह, हुम तो प्याससे उलाक हो गये.

आपने इरमाया, “तुम उलाक नहीं लोगे.

द्वि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने पानीका भरतन भंगवाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने उस भरतनसे पानी उडेलना शरू किया, और उजरत अबु कतादह रहीअल्लाहो अन्हो लोगोंको पानी पिलाने लगे.

जब लोगोंने देखा के पानी एक भरतनमें है, तो सभी उस भरतन पर दूट पडे.

आपने इरमाया, “घन्भीनानसे पानी पियो तुम सभी सैराप हो जग्योगे.

और सिई में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम जाकी रहे, आपने पानी उडेला और मुजे इरमाया, “पियो.

मँने कडा, जब तक आप (पानी) नहीं पीयेंगे मैं (पानी) नहीं पियुंगा.

आपने इरमाया, “कौमको पानी पिलानेवाला सभसे आभिरमें पीता है.

यूनांये मँने पानी पिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने भी पानी पिया. द्वि सभी लोग पानी तक आसूङ्गीसे पहोंय गये.

रावीका भयान है के, उजरत अबुदुल्लाह बिन रभाहुने कडा, मैं जामेअ मस्जुदमें लोगोंको यही उदीष सुनाता था.

उजरत धमरान बिन हुसैन कडा, अय नौजवान ! सोथो क्या कहे रहे हो ? क्युं के उस रात के सवारोंमें मैं भी सामिल था.

मँने कडा, द्वि तो आप इस उदीषसे अबूजी वाकिङ्क होंगे ?

उन्होंने पूछा, तुम किस कभीलेसे हो ?

मँने कडा, मैं अन्सारमेंसे हुं.

उन्होंने कडा, द्वि तो तुम अपनी अउदीषको जयादा जानते हो.

द्वि जब मँने लोगों के सामने पुरी रिवायत भयान की तो धमरान बिन हुसीने कडा, मैं भी उस रात मौजूद था, लेकीन तुमने जस तरहां इस वाक्यको याद रभा है मैं नहीं समजता कीसी और ने भी इस तरहां याद रज्भा होगा.

૧૪૬૧ : હજરત ઇમરાન બિન હસીન રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, એક સફરમે મેં રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ કે હમરાહ થા. એક રાત હમ સફર કર રહે થે જબ આબિર રાતકા અમલ હુઆ તો, હમ સવારીયોસે ઊતરે ઔર હમારી આંખ લગ ગઈ. યહાં તક કે ધૂપ નિકલ આઈ.

સબસે પહેલે અબુ બક્ર રહીઅલ્લાહો અન્હો, બેદાર હુએ હમારી આદત થી કે હમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો ઊસ વક્ત તક બેદાર નહીં કરતે થે જબ તક વો ખુદ બેદાર ના હો જાએ, લેકીન હજરત ઊમરને કવી ઔર બુલંદ આવાઝમે અલ્લાહો અકબર કહેના શરૂ ક્રિયા, યહાં તક કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ બેદાર હો ગએ.

આપને અપના સરે અકદસ ઊઠાકર સૂરજ કી તરફ દેખા કે વો નિકલ ચુકા હૈ. આપને ફરમાયા, “યહાંસે ફૂચ કરો. ઔર હમારે સાથ આપ ભી રવાના હો ગએ. યહાં તક કે, ધૂપ ફેલ ગઈ તબ આપને હમારે સાથ ફજરકી નમાઝ પઠહી.

એક શખ્શ જમાઅતસે અલગ રહા ઔર ઊસને હમારે સાથ નમાઝ નહીં પઠહી. જબ આપ નમાઝસે ફારીગ હુએ તો ઊસસે પૂછાકે, તુમને હમારે સાથ નમાઝ ક્યું નહીં પઠહી ?

જવાબ દિયા, યા રસૂલુલ્લાહ ! મુજે જનાબત લાહક હો ગઈ થી.

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ઊસે પાક મીટીસે તયમ્મુમ કરનેકા હુકમ દિયા, ફિર ઊસને તયમ્મુમ કર કે નમાઝ પઠહી.

ફિર આપને મુજે ચંદ સવારોં કે સાથ પાની કી તલાશ કે લિયે ભજા. ઊસ વક્ત હમ પ્યાસકી સખ્ત હાલતસેં ગુજર રહે થે. નાગહા હમને એક ઔરતકો દેખા જો અપને દોનોં પૈર લટકાએ હુએ, દો પખાલોં પર બેઠી સવારી પર ચલી જા રહી થી. હમને ઊસસે પૂછા, પાની કહાં હૈ ?

ઊસને કહા, પાની બહોત દૂર હૈં, તુમ્હેં નહીં મિલ શકતા.

હમને પૂછા, તુમ્હારે ઘરસે પાની કિતની દૂર હૈ ?

ઊસને કહા, એક ફિનકા રાસ્તા હૈ.

હમને ઊસે કહા, તુમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે પાસ ચલો.

વો કહને લગી, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ કૌન હૈ ?

ફિર હમારે પાસ ઊસે જબરદસ્તી લે જાને કે સિવાય કોઈ ચારા નહીં થા.

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ઊસસે ઊસ કે આહવાલ પૂછે, તો ઊસને વહી બાતેં બતાઈ જો હમેં બતા ચુકી થી. ઔર ઊસને યે ભી કહા કે વો યતીમોવાલી હૈ ઔર ઊસ કે પાસ બિના બાપ કે કંઈ યતીમ બચ્ચે હૈ.

આપને ઊસકી સવારીકો બૈઠાનેકા હુકમ દિયા. સવારી બિઠા દી ગઈ. આપને ઊસકી પખાલોં કે મુઠાનોંમે કુલ્લી કી, ઔર ઊંટકો બઝા કર દિયા. ફિર હમ સબને ઊસ પંખાલોસે પાની પિયા. હમ સભી પ્યાસ કે મારે ચાલીસ લોગ થે, હમ સભી સૈરાબ હો ગએ ઔર હમને હમારી મશ કે ઔર બરતન ભી ભર લિયે ઔર હમારે જીસ સાથીકો જનાબત લાઝીમ થી

उसे गुस्ल भी करा दिया. मगर कीसी ओंटको पानी नहीं पिलाया. और उसकी पजालें उसी तरहों पानीसे भरी हुई थी. फिर आपने हमसे इरमाया, “तुम्हारे पास जो कुछ है ले आओ.

हमलोग जहाँत सी रोटी के टुकड़े और जव्वरें ले आये आपने उस सबको अेक थेलीमें बांध कर उस औरतको इरमाया, “ये चीजें है धन्ये ले जाओ और अपने जव्वरोंको जिलाओ, और ये समजलो के हमने तुम्हारे पानीमेंसे कुछ कमी नहीं की है.

वो औरत घर पहुँचकर कहेने लगी आज मैं धनसानोंमे सबसे ँडे जद्दुगरसे भील कर आँ.

या फिर, वो शप्श अपने हावे के मुताबिक नहीं हैं, आज उस के हाथ पर जैसे जैसे निशानात जहिर हुये है. अल्लाहने उसी औरत की वजहसे उस पुरी जस्तीको हियायत ही वो औरत जुद भी मुसलमान हुँ और उसकी पुरी जस्ती भी मुसलमान हो गँ.

१४६२ : जहरत धमरान बिन हसीन रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शज्ज हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व आलेही व सल्लम के साथ रवाना हुये. सुज्ज के क्रीज आभिरी शज्जमें हम लेट गये और उस वक्त कीसी भी शप्शको आरामसे जयादा और कोँ चीज अजीज नहीं थी, फिर हमें धूपकी गरमी के सिवा और कीसी चीजने जेदार नहीं किया.

अेक और रिवायतमें ये अदक़ाज भी हैं, जहरत जमर रहीअल्लाहो अन्हो जेदार हुये और जन्होंने लोगों की ये हालत देखी. तो जन्होंने जुलूँद आवाजमें अल्लाहो अकबर कहेना शरू कर दिया. यहाँ तक के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लम जेदार हो गये.

लोगोंने अपना हाल जयान करना शरू किया.

आपने इरमाया, “कोँ जर्ज नहीं, यहाँसे यल पडो.

१४६३ : जहरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने इरमाया, “जो शप्श नमाज पणहना भूल जाये तो जोस वक्त याद आ जाये उस वक्त पणह ले, यही उसका कइशारा है. कताहहने, ‘व अकीमुससलात लिज-जीकरी वाली आयत पणही.

१४६४ : जहरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे जपर गुजरी वैसी ही अेक और हदीष मन्कुल है जोसमें कइशारेका जोक नहीं है.

१४६५ : जहरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने इरमाया, “जो शप्श कीसी नमाजको भूल जाये, या सो जाये उसका यही कइशारा है के, जज्ज याद आये पणहले.

१४६६ : जहरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमने इरमाया, “जज्ज नीँद की वजहसे कीसी शप्श की नमाज रहे जाये या गइलतसे नमाज कजा हो जाये तो उसे याद आने पर नमाज पणह लेना चाहिये. क्युं के अल्लाहन्जाला इरमाता है, ‘अकीभीरसलात लिज जिकरी.’ तरजुमा :- भेरी याद के लिये नमाज पणही.

मुसाफ़िरोकी नमाज और नमाज कसर करने के अहकाम.

१४६७ : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ज़ौजा मोहतरमा हजरत आअेशा सीदीकह उम्मुल मुअमेनीन रहीअल्लाहो अन्हा जयान करती है के, सफ़र और हजरतमें हो हो रकात नमाज इर्ज हुंघ थी. सफ़रमें नमाज अपने हाल पर कायम रभी गह. और हजरतमें ज़्यादा करदी गह.

१४६८ : नबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ज़वजा हजरत आअेशाह सीदीकह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, जब अल्लाह त्वालाने नमाज इर्ज की तो, हो रकअत इर्ज की थी, फिर हजरतमें नमाज पुरी करदी गह और सफ़रमें नमाजकी इरजयत साबिक पर कायम रभी गह. (हो रकअत पर)

१४६९ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, एन्तेहामे नमाज हो रकअत इर्ज की गह थी. सफ़र की नमाज भरकरार रज्भी गह और हजरतकी नमाज पुरी कर दी गह. जुहुरीने कहा (राचीने कहा) फिर मैंने उर्वहसे पूछा, तो फिर हजरत आअेशाह सफ़रमें पुरी नमाज क्युं पणहती है ?

उन्होंने कहा, हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हाने एंसकी वही ताविल की जो हजरत उरमान रहीअल्लाहो अन्होंने ताविल की थी, मतलब वो भी पुरी नमाज अदा करते थे.

१४७० : यअला बिन उमय्याह कहेते है के, मैंने हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्होसे दरयाक़त कियोक, अल्लाह त्वाला तो इरमाता है के, अगर तुम नमाजमें कसर करलो तो कोह इर्ज नहीं है, जशरते के तुमको काफ़िरोसे जंगका अदेशा हो. और अब तो अमन है (तो फिर सफ़रमें कसर क्युं ?) हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्होने जवाब दिया, मुजे भी एंस प्नात पर ताअज्जुब हुआथा. मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे पूछा तो आपने इरमाथा, "अल्लाह त्वालाने सफ़का किया है. ले हाजा अल्लाह त्वाला के सफ़केको कुबुल करो (नमाज कसर करो)

१४७१ : अेक और सनदसे भी यही हदीष मन्कुल है.

१४७२ : हजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्हो जयान करते है के, अल्लाह त्वालाने तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ज़ुबान से, हजरतमें यार, सफ़रमें हो और जिहादमें अेक रकअत नमाज इर्ज की है.

१४७३ : हजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अल्लाह त्वालाने तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ज़ुबानसे मुसाफ़िर पर हो, मुकीम पर यार और जिहादमें अेक रकअत नमाज इर्ज की है.

१४७४ : मुसा बिन सुलैमान हजती इरमाते है के, मैंने हजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे पुछा के अगर मुजे मक्कामें तन्हा नमाज पणहनी पडे तो कैसे पहुं ?

उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व सल्लमकी सुन्नत हो रकअत नमाज है।

१४७५ : अक और सनदसे भी ऐसी हदीष मन्कुल है।

१४७६ : हजरत हक़स बिन आसिम रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं मक्का की सहरमें अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हो के साथ था। उन्होंने हमें जुहर की नमाज हो रकअत पण्डाछ़ फिर हम और वो अपनी क़्यामगाह पर आकर बैठ गये। अथानक हजरत अब्दुल्लाह बिन उमरने देखा लोग नमाज पण्ड रहे हैं, तो पुछा, ये क़्या कर रहे हैं ? कहा, ये सुन्नतें पण्ड रहे हैं।

आपने कहा, अगरमें सुन्नते पण्डता तो इरज नमाज (जोहर की चार रकअते) ना पण्ड लेता ? अथ लतीजे मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व सल्लम के साथ सहरमें हमराह था। आपने अपनी पुरी ज़ुहगीमें सहरमें हो रकअतसे ज़्यादा नमाज नहीं पण्डी। मैं हजरत अबु अक़ सीदीक़ रहीअल्लाहो अन्हो के साथ भी सहरमें रहा हुं, उन्होंने भी पुरी ज़ुहगीसे (सहरमें) हो रकअतसे ज़्यादा नमाज नहीं पण्डी।

और मैं हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्हो के साथ भी रहा उन्होंने भी (सहरमें) हो रकअतसे ज़्यादा नमाज नहीं पण्डी और अल्लाह त्वाला इरमाता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व सल्लमकी ज़ुहगी तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना है। (लकुम ही रसूलुल्लाहे उस्वतुन हसना)

१४७७ : हजरत हक़स बिन आसिम रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं बिमार हुआ और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हो मेरी अथाहत के लिये आये, मैंने उन्हें सहरमें सुन्नतें पण्डने के बारेमें पुछा, उन्होंने कहा, मैं सहरमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व सल्लम के साथ रहा हुं, मैंने आपको सुन्नतें पण्डते नहीं देखा और अगर मैं सुन्नतें पण्डता तो इरज भी पुरी पण्ड लेता। और अल्लाह त्वाला इरमाता है के, लकुम ही रसूलुल्लाहे उस्वतुन हसना।

१४७८ : हजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व आलेही व सल्लमने मदीना शरीफ़में जुहरकी नमाज चार रकअत और असर की नमाज जुल-हुलैक़ामें हो रकअत पण्डी।

१४७९ : हजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, चार रकअत जुहरकी नमाज पण्डी और मैंने आप के साथ जुल-हुलैक़ामें असर की नमाज हो रकअत पण्डी।

१४८० : याह्या बिन यज़ीदसे रिवायत है के, मैंने हजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे कसर नमाजों के बारेमें पूछा, उन्होंने कहा, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैयहे व सल्लम. तीन मील या तीन इरसफ़ की मुसाफ़तका सहर करते तो हो रकअत नमाज पण्डते थे. शोअभाको मील या इरसफ़ के अलक़ाज़में शक़ है।

१४८१ : ज़ुबैर बिन नकिरसे रिवायत है के, मैं सरज्जल बिन सिमा के साथ सतरह या अठारह मील की मुसाफ़त पर अेक बनस्तीमें गया, तो बिनहोंने दो रकअत नमाज़ पण्डी. मैंने वणह पुछी तो बिनहोंने कडा, मैंने हणरत बमर रदीअल्लाहो अन्होको देणा के वो मुल-हुदुईकमें दो रकअत नमाज़ पण्डी. मैंने बिनसे वणह पुछी तो बिनहोंने कडा, मैं वही करता हुं जे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमको मैंने करते देणा है.

१४८२ : अेक और रिवायतमें बिस जगाका नाम होमयन और मुसाफ़त अद्वारह मील बताध गध है.

१४८३ : हणरत अनस रद्विअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम के साथ मदीना मुनव्वरहसे मक्काकी तरफ़ गये, आप हो रकअत नमाज़ पण्हुते रहे यहां तक के वापस आ गये. मैंने पुछा, मक्कामें कितने दिन कियाम किया ?

बिनहोंने कडा, दस दिन.

१४८४ : अेक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है.

१४८५ : अेक और सनदसे भी हणरत अनस बिन मालिक रदीअल्लाहो अन्होकी रिवायत है के, हम हण के धरहसे गये. बिस के बाद बपर औरी ही हदीष है.

१४८६ : अेक सनदसे भी हणरत अनस बिन मालिक रदीअल्लाहो अन्होसे औरी ही हदीष मन्कुल है जसमें हणका जिक नहीं है.

१४८७ : हणरत अब्दुल्लाह बिन बमर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हुजुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम हणरत अबु बक और हणरत बमर रदीअल्लाहो अन्हुमने भीना वगैरहमें दो रकअत नमाज़ पण्डी. हणरत बिसमान रदीअल्लाहो अन्होने अपनी बिलाफ़त की शुअ्रातमें दो रकअत पण्हुते बिस के बाद चार रकअत पण्हुते लगे.

१४८८ : अेक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है, बिसमें भीनाका जिक है, मगर है का लक़ नहीं है.

१४८९ : हणरत अब्दुल्लाह बिन बमर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हणरत अब्दुल्लाह बिन बमर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम, हणरत अबु बक और हणरत बमर रदीअल्लाहो अन्हुमने भीनामें दो रकअत नमाज़ पण्डी. बिस के बाद हणरत बिसमान रदीअल्लाहो अन्होने चार रकअत नमाज़ पण्डी. हणरत अब्दुल्लाह बिन बमर रदीअल्लाहो अन्हो (सक्रमें होते तो) धमाम के साथ चार रकअत और तन्हा होते तो दो रकअत नमाज़ पण्हुते.

१४९० : अेक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है

१४९१ : हणरत अब्दुल्लाह बिन बमर रदीअल्लाहो अन्होसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम और हणरत अबुबक और हणरत बमर रदीअल्लाहो

अन्दुमने भीनामें कसर (नमाज) पणही. हजरत उरमान रहीअल्लाहो अन्हो ली छे या आठ साल तक कसर नमाज पणहते रहे.

हइस कहेते है के, हजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्हो भीनामें हो रकअत पणहते थे. इर अपने बिस्तर पर चले जाते थे.

मैंने कहा, अय अया, काश आप इर्ज के बाद हो सुन्नतें ली पणह लेते !

आपने इरमाया, “अगर मैं सुन्नतें पणहता, तो इरज पुरी (नमाजें) ना पणह लेता !

१४९२ : अेक और सनहसे ली औरी ही हदीष मन्कुल है ७समें भीनाका जिक् नहीं है लेकीन उन्होंने कहा है की, सइरमें नमाज पणही.

१४९३ : अब्दुर्हमान बिन यकीहसे रिवायत है के, हजरत उरमान रहीअल्लाहो अन्होंने भीनामें हमारे साथ चार रकअत नमाज पणही. जब ये जात हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्होसे कही गइ तो उन्होंने कहा, एन्नालिल्लाहे व एन्ना एलयहे राजेबिन. इर कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम के साथ भीनामें हो रकअत नमाज पणही, हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्हो के साथ (ली) भीनामें हो रकअत नमाज पणही. काश मेरे नसीबमें ये हो के चार की बगअये हो रकअत मकबुल हो जाये.

१४९४ : अेक और सनहसे ली ये रिवायत मन्कुल है.

१४९५ : हजरत हारिष बिन वहब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ भीनामें उिस वक्त हो रकअत नमाज पणही, जब अबसे ज्यादा अमन था.

१४९६ : हजरत हारिष बिन वहब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने अली के मुकाबलेमें ज्यादा लोगों के साथ भीनामें आपकी एकतेदामें नमाज पणही. आपने हजजतुल विदाअ के मौ के पर ली हो रकअत नमाज पणही. एमाम मुस्लिमका ये बयान है के, हारिष बिन वहब अजाइ हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर एब्ने अत्ताब रहीअल्लाहो अन्हो के मां शरीक लाइ है. (दोनों की मां अेक है)

बाब २३५ :- बारीशमें घरोंमें नमाज पणहना जइज है.

१४९७ : नाइअसे रिवायत है के, अेक शई रातमें जब हवा चल रही थी तो हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होंने अजान देकर इरमाया, “सुनो घरोंमें नमाज पणह लो. इर कहा, जब रातको शरही और बारीश होती थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम मुअजजीनको ये कहेनेका हुकम देते, सुनो ! घरोंमें नमाज पणह लो !!

१४९८ : नाइअ बयान करते हैं, अेक रात शरही और आंधी थी, और बारीश हो रही थी, हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होंने अजान दी और आबिरमे इरमाया, “सुनो अपने घरोंमें नमाज पणह लो, सुनो ! अपने घरोंमें नमाज पणह लो.

द्वि कडा, जभ सङ्घमें शरदी या भारीश होती तो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व आलेही व सल्लम मुअज्जीनको ये कहेनेका हुकम देते, सुनो ! अपने घरोंमें नमाज पण्ड लो.

१४९८ : नाफेअसे रिवायत है के, हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहो अन्होने हन्जानमें अजान दी और इरमाया, “अपने अपने घरोंमें नमाज पण्ड लो.

१५०० : हजरत ज़ाबिर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहो व आलेही व सल्लम के साथ सङ्घमें थे, जभ भारीश होने लगी तो आपने इरमाया, “तुममेंसे जोसका हिल चाले वो अपनी कयामगालमें नमाज पण्डले.

१५०१ : अब्दुल्लाह बिन हारीषसे रिवायत है के, भारीश वाले दिन हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहो अन्होने अपने मुअज्जीनसे इरमाया, “जभ तुम अशहदुअल्लाह धलाहा धललल्लाह, अशहदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह, कहे चुको तो हय्या अलस-सलाह के बाद सल्लु-कि-बुयुतेकुम (तरजुमा :- अपने घरोंमें नमाज पण्ड लो.) कहेना.

लोगोंको ये नष्ट बात मालूम हुंछ तो आपने इरमाया, “तुम इस पर तअज्जुब करते हो ? ये बात अन्होने कही है जो मुजसे अहेतर थे, हालां के, जमाअत के साथ नमाज पण्डना सुनते मुअककदह है लेकीन मैं इस बातको पसंद नहीं करता के, तुम कीचय और फिसलनमें चल कर जाओ.

१५०२ : अब्दुल्लाह बिन हारीषसे रिवायत है के, हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहो अन्होने कीचय और पानीवाले दिनमें तक्रीर की. इस हदीषमें जमाअतका जिक्र नहीं है, जैसा की एब्ने उकैयहकी हदीष में है.

और ये है के, हजरत एब्ने अब्बासने इरमाया, “मुजसे अहेतर याने नबी करीम सल्लल्लाहो अल्यहो व आलेही व सल्लमने ये काम किया है.

१५०३ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्डुल है, और उसमें नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहो व सल्लमका जिक्र नहीं किया गया है.

१५०४ : अब्दुल्लाह बिन हारीषसे रिवायत है के, हजरत एब्ने अब्बास रदीअल्लाहो अन्हो के मुअज्जीनने जूम्या के दिन जभ भारीश हो रही थी अजान दी और हजरत एब्ने अब्बासने कडा, मैं इस बातको नापसंद करता हुं के तुम कीचय और पानीमें चलो.

१४०५ : हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास के कुछ अल्हाजमें इरक के साथ वैसी ही हदीष रिवायत हुंछ है जैसी उपर गुजरी है.

१५०६ : अब्दुल्लाह बिन हारीषसे रिवायत है के, हजरत एब्ने अब्बासने जूम्या के दिन भारीशमें अपने मुअज्जीनको हुकम दिया, आकी रिवायत वैसी है जैसी उपर गुजरी है.

आम २३६ :- सहरमें सवारी पर नमाज पणहना.

१५०७ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम अपनी ओटनी पर निइल नमाज पण्डा करते थे. ज्वाह ओटनीका मुंड डीसी भी तरफ होता.

१५०८ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम अपनी ओटनी पर नमाज पण्डा करते थे ज्वाह ओटनीका मुंड डीसी भी तरफ होता.

१५०९ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अपनी सवारी पर नमाज पण्डी, ज्वाह उसका मुंड डीसी भी तरफ हो, यहां तक के आप भक्कासे मदीना की तरफ जा रहे थे घसी मौ के पर ये आयत नाजिल हुइ, इ अयनमा तुवल्लु..... तरजुमा :- तुम जोस तरफ मुंड करोगे अल्लाह ही की आत है.

१५१० : अेक और सनदसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है.

१५११ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम दरअजगोश (अख्यर) पर नमाज पण्डा रहे थे और आपका मुंड जैपरकी तरफ था.

१५१२ : सईद बिन यसार जयान करते है के, मैं हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हो के साथ भक्का मुकर्रमा के रास्ते पर जा रहा था. जब इजर तुलुअ होनेका अरसा हुवा तो मैंने सवारीसे ओतर कर वितर (नमाज) पण्डी और फिर ओनसे जा मिला.

हजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होने मुजसे पुछा, कहां गये थे ?

मैंने कहा, तुलुअ इजर के भौकसे वितर पण्डने.

हजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, "क्या तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी जिन्दगीमें नमूना नहीं है ?

मैंने कहा, भाजुदा, कयुं नहीं ?

तब हजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम ओट पर वितरकी नमाज पण्डा करते थे.

१५१३ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम अपनी सवारी पर नमाज पण्डते थे ज्वाह उसका मुंड डीसी भी तरफ हो. हजरत अब्दुल्लाह बिन किनार रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हो भी ऐसा ही करते थे.

१५१४ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम सवारी पर वितर नमाज पण्डा करते थे. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

અલયહે વ આલેહી વસલ્લામ સવારી પર નિફલ નમાઝ પઠહતે થે મગર ફરજ નમાઝ સવારી પર નહીં પઠહતે થે.

૧૫૧૫ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લામ સવારી પર નિફલ નમાઝ પઠહા કરતે થે. ખ્વાહ ઊસકા મુંહ કીસીભી તરફ હો. ઊસી સવારી પર વિતર પઠહતે થે. મગર ફરજ નમાઝ ઊસ પર નહીં પઠહતે થે.

૧૫૧૬ : હજરત આમિર બિન રબિઅહ બયાન કરતે હૈ કે, મૈને દેખા કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લામ સફરમેં રાતકો અપની સવારી પર નિફલ પઠહાં કરતે થે ખ્વાહ સવારીકા મુંહ કીસી ભી તરફ (ક્યું ના) હો.

૧૫૧૭ : અનસ બિન શીરીન બયાન કરતે હૈ કે, હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હો જબ શામસે આવે તો અયાન તમર કે મુકામ પર હમને ઊનસે મુલાકાત કી. મૈને દેખા કે વો દરાઝગોશ પર નમાઝ પઠહ રહે થે. ઔર ઊસકા મુંહ ઊસ જાનીબ થા. (હમામ કહતે હૈ કે, ઊસકા મુંહ કિબ્લેસે બાંઇ તરફ થા)

મૈને ઊનસે કહા કે, આપ કિબ્લેકો છોડકર દૂસરી જાનીબ મુંહ કર કે નમાઝ પઠહ રહે થે.

ઊન્હોને કહા કે, અગર મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લામકો ઔસા કરતે હુએ નહીં દેખા હોતા તો કભી ના કરતા.

બાબ ૨૩૭ :- સફરમેં દો નમાઝોંકા જમા કરના.

૧૫૧૮ : હજરત ઇબ્ને ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લામ જબ (સફરમેં) જલ્દી ચલના ચાહતે તો મગરીબ ઔર ઇશાં જમ્મ કર કે પઠહતે થે.

૧૫૧૯ : નાફેઅસે રિવાયત હૈ કે, હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોકો જબ જલ્દીસે (સફરમે) જાનેકા ઇરાદા હોતા તો, ગુરૂબે શક્ક કે બાદ મગરીબ ઔર ઇશાંકો જમ્મ કર કે પઠહતે થે ઔર કહેતે થે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લામકો ભી જબ જલ્દી જાના મક્સુદ હોતા તો મગરિક ઔર ઇશાંકી નમાઝોંકી મિલાકર પઠહતે થે.

૧૫૨૦ : સાલિમ કે વાલીદ હજરત ઇબ્ને ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને દેખા કે જબ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લામકો જબ જલ્દ જાના મક્સુદ હોતા તો મગરીબ ઔર ઇશાંકો જમ્મ કર કે પઠહતે થે.

૧૫૨૧ : સાલિમ કે વાલીદ હજરત ઇબ્ને ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને દેખા કે જબ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લામકો જબ જલ્દ જાના મક્સુદ હોતા તો મગરીબ ઔર ઇશાંકો જમ્મ કર કે પઠહતે થે.

૧૫૨૨ : હજરત અનસ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લામ જબ ઝવાલે આફતાબસે પહેલે સફર કરતે તો

जुहरकी नमाजकी असरकी नमाज तक मुअज्जर करते. फिर (सवारीसे नीचे आकर) दोनों नमाजों एक साथ अदा करते, और अगर आपकी सफरमें रवानगी के पहले आइताफका ज्वाल हो जाता तो रवानगीसे पहले नमाजें जुहर अदा इरमाते (ईर रवाना होते).

१५२३ : हुजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम जब सफरमें हो (वक्त की) नमाजोंकी जम्ह करनेका इरादा इरमाते तो जुहरमें धतनी देरी करते की असरका अव्वल वक्त आ जाता. फिर आप दोनों नमाजोंकी जमा करते. (और अदा करते थे)

१५२४ : हुजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमको सफरमें जल्दी जाना मतलुब होता तो जुहरकी असर के अव्वल वक्त तक मुअज्जर कर देते और दोनों नमाजोंकी जमा कर लेते. और शकक गायब होने तक मगरीबकी मुअज्जर इरमाते फिर मगरीब और एशां जम्ह कर के पणहते थे.

१५२५ : हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने मदीना शरीफमें बिना सफर और बिना भौक के जुहर और असर (की नमाजों)की जम्ह कर के पणहा.

१५२६ : हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने मदीना शरीफमें बिना सफर और बिना भौक के जुहर और असर (की नमाजों)की जम्ह कर के पणहा.

अबु जुबैर कहते है के, मैंने सधइसे पूछा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने औसा क्युं किया था ?

अन्होंने कहा, मैंने हुजरत एब्ने अब्बाससे यही सवाल किया था, तो अन्होंने इरमाया, "ता के आपकी अम्मत कीसी दुश्वारीमें मुप्तीला ना हो.

१५२७ : सधइ बिन जुबैर इरमाते है के, हुजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने गजवअ-तबुक के सफरमें हो नमाजोंकी जम्ह किया, जुहर और असर, और मगरीब और एशांकी जम्हा कर के पणहा. सधइ कहते है के, मैंने एब्ने अब्बासको पुछा के हुजुरने औसा क्युं किया ? तो अन्होंने कहा, ता की आपकी अम्मत दुश्वारीमें ना पड़े.

१५२८ : हुजरत मुआज रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लम के साथ गजव अे तबुकमें गये थे, तो आप जुहर और असर, और मगरीब और एशां जम्ह कर के पणहते थे.

१५२९ : हुजरत मआज बिन जबल रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने गजवअे तबुकमें जुहर और असर, और मगरीब और एशांकी जम्हा कर के पणहो. आभीरने (जो हदीष के रावी है) पुछाके, हुजुरने औसा क्युं किया था ?

હજરત મઝ્યાઝને કહા, તા કી આપકી ઊમ્મત દુશ્વારીમ્ને ના પડે.

૧૫૩૦ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મદીના મુનવ્વરામ્ને બિના કીસી ખૌફ ઔર સફર કે નમાઝે ઝોહર ઔર અસર, નમાઝે મગરીબ ઔર ઇશાં જમ્મા કર કે પઠ્ઠી.

વાકીઅકી રિવાયતમ્ને હૈ કે, હજરત ઇબ્ને અબ્બાસસે પુછા ગયાકે, હુઝુરને ઐસા ક્યું કિયા થા ?

ઊન્હોને કહા, તા કે આપકી ઊમ્મત દુશ્વારીમ્ને ના પડે.

અબુ મુઆવિયહકી રિવાયતમ્ને હૈ કે, હજરત ઇબ્ને અબ્બાસસે પુછા ગયા કી, ઇસસે આપકા કયા ઇરાદા થા ?

હજરત ઇબ્ને અબ્બાસને ફરમાયા, “તા કી આપકી ઊમ્મત દુશ્વારીમ્ને ના પડે.

૧૫૩૧ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ, આઠ રકઅત (ઝુહર, અસર) ઔર સાત રકઅત (મગરીબ-ઇશાં) ઇકઠ્ઠી પઠ્ઠી હૈ.

રાવી કહેતે હૈ, મૈને કહા અય અબુ શાઅશાઅ, મેરા ગુમાન હૈ કે, આપને ઝુહરકો મુઅખ્ખર ઔર અસરકો મુકદ્દમ કર કે પઠ્ઠા થા, ઔર મગરીબકો મુઅખ્ખર ઔર ઇશાંકો મુકદ્દમ કર કે પઠ્ઠા થા.

અબુ શાઅશાઅને કહા, મેરા ભી યહી ગુમાન હૈ.

૧૫૩૨ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મદીનામ્ને, સાત ઔર આઠ (રકઅત) યાને ઝુહર ઔર અસર ઔર મગરીબ ઔર ઇશાં ઇકઠ્ઠી પઠ્ઠી.

લોગ કહેને લગે, નમાઝ, નમાઝ ! ફિર બનુ તમીમકા એક શખ્શ આયા વો બિલકુલ ખામોશ નહીં રહેતા થા. ઔર નમાઝ, નમાઝ કહે જાતા થા.

હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “તેરી માં મર જાએ ! તું મુજે સુન્નત શિખાએગા ?

ફિર ફરમાયા, “મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો દેખા હૈ આપ ઝુહર ઔર અસર (કી નમાઝ) ઔર મગરીબ ઔર ઇશાંકી નમાઝકો મિલા કર પઠ્ઠતે થે.

૧૫૩૩ : અબ્દુલ્લાહ બિન શકીક કહેતે હૈ, યે બાત મુઝે ખટક રહી થી. મૈને જાકર હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે યે મરમલા પુછા તો ઊન્હોને હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોકી હદીષ કી તરફીક કર દી.

૧૫૩૪ : અબ્દુલ્લાહ બિન શકીક અલ ઊકયાવી કહેતે હૈ, એક શખ્શને હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે કહા, નમાઝ, નમાઝ. વો ખામોશ રહે... ઊસને ફિર કહા, નમાઝ. આપ ખામોશ રહે.

ફિર આપને ફરમાયા, “તેરી માં, મર જાએ, કયા તું મુજે નમાઝકી તાલીમ દેગા ? હમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે અહેદમેં દો નમાઝોંકી જમ્મ કર કે પળહતે થે.

બાબ ૨૩૮ :- નમાઝ કે બાદ દાએ-બાએ ફિરનેકા (ઇન્શીરાફ)કે જાઇઝ હોને કે બયાનમેં.

૧૫૩૫ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસ્ઉદ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, તુમમેંસે કોઇ શખ્શ અપની જાતકો શયતાનકા જુઝ ના બના દે. ઔર ઔસા ગુમાન ના કરેકે, નમાઝ કે બાદ દાંઇ તરફ હી ફિરા જાતા હૈ, મેંને કઇદફઅમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો બાંઇ જાનીબ ફિરતે ભી દેખા હૈ.

૧૫૩૬ : એક ઔર સનદસે ભી યહી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૫૩૭ : અસ-સુદીસે રિવાયત હૈ કે, મેંને હજરત અનસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે દરયાફત કિયાકે, મેં નમાઝ પળહને કે બાદ કીસ તરફ ફિરે ? દાઇ યા બાઇ ?

હજરત અનસને જવાબ દિયા, મેંને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો જ્યાદાતર દાંઇ તરફ ફિરતે હુએ દેખા હૈ.

૧૫૩૮ : અસ સુદી કહતે હૈ કે, હજરત અનસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ દાંઇ તરફ ફિરાં કરતે થે.

બાબ ૨૩૯ :- ઇમામ કી દાંઇ તરફ ખડે હોનેકા ઇસ્તેહબાબ.

૧૫૩૯ : હજરત બરાઅ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, જબ હમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકી ઇકતેદામેં નમાઝ પળહતે થે તો આપકી દાંઇ તરફ ખડે હોના પસંદ કરતે થે. તા કે હમ આપકા ચહેરા-એ-અનવર પહેલે દેખે. હજરત બરાઅ ફરમાતે હૈ, મેંને સુના આપ ફરમા રહે થે, અય ! અલ્લાહ !હશ્ર કે દિન મુજે અપને અઝાબસે મહેફૂઝ રખના.

૧૫૪૦ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

બાબ ૨૪૦ :- ઇકામત કે બાદ નિક્લ નમાઝ શરૂ કરના મના હૈ.

૧૫૪૧ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ નમાઝકી ઇકામત કહી જાએ તો ઊસ ફરજ નમાઝ કે સિવાય દૂસરી નમાઝ ના પળહી જાએ.

૧૫૪૨ : એક ઔર સનદસે ભી યે હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૫૪૩ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ જમાઅત ખડી હો જાએ તો ફરજ નમાઝ કે સિવાય દૂસરી કોઇ ભી નમાઝ ના પળહી જાએ.

૧૫૪૪ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

१५४५ : हुम्माह कहते हैं के, मैं अन्न बिन दिनार रहीअल्लाहो अन्होसे मिला और अन्होनें धस हदीषको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमसे धसकी निरूपत नहीं की. (मतलब के धसे मचकुइ हदीष करार दीया)

१५४६ : अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन जुहयनह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम अेक शप्श के पाससे गुजरें हालां के वो नमाज पणह रहा था. और इजरकी (इरज) नमाजकी धकामत हो चुकी थी. आपने उससे कुछ इरमाया गुसका हमें कुछ पता नहीं यला. हमने नमाज के बाद उसे घेर लिया और पुछा के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने तुम्हे क्या इरमाया था ?

उसने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया था क्या तुममेंसे अब्ब कोइ शप्श इजरकी चार रकअत पणहने लगा है ?

कअनबीने कहा अब्दुल्लाह बिन मालिक बीन जुहैनह अपने वालीहसे रिवायत करते हैं.

धमाम मुस्लीम रहमतुल्लाहो त्बला अल्यहने इरमाया है के, बाप के वास्तेसे धस रिवायतमें भता है.

१५४७ : जुहैनह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नमाजे इजरकी इरज नमाजकी धकामत पणही गध. (भस उसी वक्त) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अेक शप्शको नमाज पणहते देभा, हालां के मुअजजीन धकामत कहे चुका था. आपने इरमाया, “क्या तुम इजरकी नमाज चार रकअत पणहते हो ?

१५४८ : अबुल्लाह बिन सरजस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्श मरुज्जमें आया हालां की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम इजरकी नमाज पणह रहे थे.

उसने मरुज्ज के कोनेमें हो रकअत सुन्नत नमाज पणही और इर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी धकतेदामें जमाअतमें शरीक हो गया.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने सलाम इरने के बाद उस शप्शसे इरमाया, “अय, शप्श ! तुमने कौनसी नमाजको इरज करार दिया है ? जे हो रकअत पहेले पणही वो या जे हो रकअत हमारे साथ पणही है वो ?

बाब २४१ :- मरुज्जमें दाबिल होने की दुआ.

१५४९ : अबु हुमैद और अबु उसयह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जब तुममेंसे कोइ शप्श मरुज्जमें दाबिल हो तो ये दुआ पणहे, अल्लाहुम्मइतहली अबवाब रहमतके.

(अय अल्लाह मेरे लिये अपनी रहेमत के दरवाजे खोल दे)

और जब मरुज्जसे बाहर आये तो कहे, अल्लाहुम्म धन्नी असअलोका बिन इहलेका.

(अथ अल्लाह मैं तेरे इजलसे सवाल करता हूँ.)

१५५० : अबु हुमैद और अबु विसयद रहीअल्लाहो अन्हुमसे अेक दूसरी सनद सेभी औसी ही हदीष मन्कुल है.

बाब २४२ :- तहय्यतुल मस्जुद के अयानमें. (मस्जुदमें हो रकयत नमाज पणहने के बारेमें, नमाजसे पहलेले मस्जुदमें बैठे रहने की कराहत के अयानमें के जब निकल नमाजे पणहना मना ना हो विस वक्त)

१५५१ : हजरत अबु कतादह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, "जब तुममेंसे कोइ शख्स मस्जुदमें आये तो बैठनेसे पहलेले हो रकयत नमाज पणह ले.

१५५२ : हजरत अबु कतादह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम लोगो के इरम्यान बैठे हुये थे और इस दौरानमें मस्जुदमें हाभिल हुया, और मैं भी बैठ गया.

रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, "बैठनेसे पहलेले हो रकयत नमाज पणहनेसे तुम्हें कीसने रोका था ?

मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह मैंने आपको और लोगोको बैठा हुया देखा.

इरमाया, "तुममेंसे जब कोइ शख्स मस्जुदमें आये तो हो रकयत नमाज पणहनेसे पहलेले बैठे नहीं.

बाब २४३ :- मुसाफिर के वतन पहुँचते ही मस्जुदमें जाकर हो रकयत नमाज पणहनेका इस्तहबाब.

१५५३ : हजरत ज़ाबिर बिन अफ्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम पर मेरा कुछ कर्ज था. आपने वो कर्ज अदा किया और असलमें कुछ जयादा अता इरमाया. मैं आपकी भिदमतमें मस्जुदमें हाज्जर हुया तो आपने इरमाया, "हो रकयत नमाज पणह लो.

१५५४ : हजरत ज़ाबिर बिन अफ्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमने अेक ठीट मुजसे अरीदा, जब मैं मदीना पहुँचा तो मुजसे इरमाया के मस्जुदमें जाकर हो रकयत नमाज पणहो.

१५५५ : हजरत ज़ाबिर बिन अफ्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं अेक गजवहमें रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लम के साथ गया था, मेरा ठीट ज़हीत आहिस्ता अल रहा था. और अलनेसे थक जाता था.

रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम मुजसे पहलेले पहुँच गये और मैं अेक दिन जाद पहुँचा जब मैं मस्जुदमें हाभिल हुया तो आपको मस्जुद के दरवाजे पर पाया.

આપને ફરમાયા, “તુમ અબ પહોંચે હો ?

મૈને કહા, હાં.

આપને ફરમાયા, “ઊંટ છોડ કર મસ્જીદમેં જાઓ ઔર દો રકઅત નમાઝ પઠહો.

મૈને મસ્જીદમેં દાખિલ હોકર દો રકઅત નમાઝ પઠહી ઔર ફિર વાપસ ચલા ગયા.

૧૫૫૬ : હજરત કઅબ બિન માલિક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ સફરસે આસ્ત કે વક્ત હી વાપસ લૌટતે થે, પહેલે દો રકઅત નમાઝ પઠહતે ઔર મસ્જીદમેં ખૈઠતે થે.

બાબ ૨૪૪ :- નમાઝે આસ્તકા ઇસ્તહબાબ.

૧૫૫૭ : અબ્દુલ્લાહ બિન શકીક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે પૂછા કે નખીઅે કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ. આસ્તકી નમાઝ પઠહતે થે ?

આપને ફરમાયા, “નહીં, સિવાય ઇસ કે કે આપ કીસી સફરસે તશરીફ લાઅે હોં.

૧૫૫૮ : અબ્દુલ્લાહ બિન શકીક રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે પૂછા, કયા નખીઅે કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ આસ્તકી નમાઝ પઠહતે થે ?

આપને ફરમાયા, “નહી ઇલ્લા યે કે આપ કીસી સફરસે વાપસ આતે.

૧૫૫૯ : હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, મૈને કભી રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો આસ્તકી નમાઝ પઠહતે નહીં દેખા, ઔર મૈ આસ્તકી નમાઝ પઠહતી હું. વૈસે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ કીસી કામકો પસંદ કરતે થે લેકીન ઇસ ડરસે નહીં કરતે થે કે, આપકો દેખકર મુસલમાન ભી વો કામ કરને લગેંગે. ઔર કામ ઊન પર ફર્જ હો જાઅેગા.

૧૫૬૦ : મુઅાઝ કહેતે હૈ કે, મૈને હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે પૂછા કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ આસ્તકી નમાઝમેં કીતની રકઅતેં પઠહા કરતે થે ?

ફરમાયા, “ચાર રકઅત ઔર જીસ કદર જ્યાદા પઠહના ચાહતે થે, પઠહ લેતે થે.

૧૫૬૧ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી રિવાયત મન્કુલ હૈ મગર ઇસમેં ઔસા બયાન હૈ કે, જીસ કદર અલ્લાહ ચાહતા જ્યાદહ પઠહ લેતે થે.

૧૫૬૨ : હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ આસ્તકી ચાર રકઅત નમાઝ પઠહતે થે ઔર અલ્લાહ જીસ કદર જ્યાદા ચાહતા થા ઊતની પઠહ લેતે થે.

૧૫૬૩ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૫૬૪ : અબ્દુરરહમાન બિન અબી યઅલાસે રિવાયત હૈ કે, મુજે સિફ હજરત ઊમ્મે હાની રદીઅલ્લાહો અન્હાને બતાયા કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકો

यास्तकी नमाज पणहुते हुंये देभा है. ओन्होंने इरमायाके, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम इन्हें मक्का के दिन मेरे घर तशरीफ लाये, और आपने आठ रकअत नमाज घतनी जल्दीसे पणही के मैंने आपको घतना जल्दी नमाज पणहुते हुंये कभी नहीं देभा. लेकिन आप इकुअ और सुनुद मुकम्भील तरीकसे करते थे घंने बरस्सारने अपनी हदीषमें क्त का (कभी) जिक् नहीं किया है.

१५६५ : अब्दुल्लाह बिन हारीषसे रिवायत है के, मुजे एस बात की जबरहस्त ज्वाहिश थी की कोछ मुजे ये बताये के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम यास्तकी नमाजकीस तरहां पणहुते थे. लेकिन मुजे सिई ओम्मे हानी बिनते अबि तालीबने एस बात की जबर ही और जयान किया के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम इन्हें मक्का के रोज दिन यहने पर (मेरे घर) आये और कपडा लाकर परदा किया गया फिर आपने गुसल इरमाने के बाद आठ रकअते पणही. मैं ये नहीं कह सकती के एस (नमाजमें) आपने किया लम्बा किया था इकुअ लम्बा किया था, या सुनुद कुं के तमाम अरकान जराजर थे और एस के पहले या एस के बाद मैंने आपकी कभी यास्तकी नमाज पणहुते नहीं देभा.

१५६६ : हजरत ओम्मे हानी बिनते अभीतालीब रहीअल्लाहो अन्हाका जयान है के, इन्हें मक्का के साल मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमकी भिदमतमें हाज्जर हुं ये देभा के आप गुसल कर रहे थे. और आपकी सालज्जादी सैयदह इतेमह जहरा रहीअल्लाहो अन्हाने अेक याहर तान कर आपका परदा किया हुंया था.

मैंने आकर सलाम किया, आपने इरमाया, “ये कौन है ?

मैंने जवाब दिया, ओम्मे हानी बिनते अभी तालीब.

आपने इरमाया, “ओम्मे हानीकी भरहुभा हो.

गुसलसे शरीग होकर आपने आठ रकअत नमाज पणही, और ये की आप अेक कपडेमें लिपटे हुंये थे.

जब आप नमाजसे शरीग हुंये तो मैंने अर्ज किया, मेरे मां ज्जये अली घंने अभी तालीब अेक अैसे शक्को क्तल करनेवाले है ज्जसको मैं पनाह दे चुकी है वो इलां बिन हुंयजरह है.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “अय ओम्मे हानी ज्जसको तुमने पनाह दी उसको हमने पनाह दी.

हजरत ओम्मेहानी रिवायत करती है के, (रहीअल्लाहो अन्हा) ये नमाज यास्तकी थी. १५६७ : हजरत ओम्मे हानी रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमने इन्हें मक्का के दिन ओन के घर आठ रकअत नमाज पणही. और ये के आपने अपने गिह अेक कपडा लपेट रभा था. ज्जसकी दोनों तरईं मुजालिह जनीब थी.

१५६८ : हजरत अबु जर रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, नबीये करीम सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “जब कोछ शक्श सुज्हा ओहता है तो उस के हर ज्जोड पर

સદકા વાજીબ હોતા હૈ. ઔર ઊસકા એક બાર સુબહાન અલ્લાહ કહે દેના સદકા હૈ, એક બાર અલ્હુમ્મુલિલ્લાહ કહે દેના સદકા હૈ. એક બાર લા ઈલાહા ઈલ્લાલ્લાહ કહે દેના સદકા હૈ. એક બાર અલ્લાહો અકબર કહે દેના સદકા હૈ. કીસી શખ્શકો નેકીકા હુકમ દેના સદકા હૈ. કીસીકો બુરાઈસે રોકના સદકા હૈ. ઔર યાસ્તકી નમાઝ પઘલ લેના ઈન તમામ ઊમૂરસે કિફાયત કર જાતા હૈ.

૧૫૬૯ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મુજે મેરે ખલીલને ત્રીન ચીજોંકી વસીયત કી, હર મહિનેમૈં ત્રીન રોઝે રખને કી, દો રકઅત નમાઝ યાસ્તકી ઔર સોનેસે પહેલે વિતર પઘલને કી.

૧૫૭૦ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૫૭૧ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી રિવાયત હૈ જીસમૈં યે હૈ કે, હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયાકે, મેરે ખલીલ અબુલ કાસીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મુજે ત્રીન ચીજોંકી વસીયત કી હૈ.

૧૫૭૨ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયાકે, મુજે મેરે ખલીલને ત્રીન ચીજોંકી વસીયત કી, હર મહિનેમૈં ત્રીન રોઝે રખને કી, દો રકઅત નમાઝ યાસ્તકી ઔર સોનેસે પહેલે વિતર પઘલનેકી જીસે મૈં કબી નહીં છોડુંગા.

બાબ ૨૪૫ :- ફજરકી સુન્નત કી રકઅતોંકા ઈસ્તહબાબ ઔર ઊસકી તાકીદ.

૧૫૭૩ : હજરત ઊમ્મુલ મુઅમેનીન હફ્સા રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, જબ મુઅઝ્ઝીન અઝાન દે કર ખામોશ હો જાતા ઔર ફજર જાહિર હો જાતી ઊસ વક્ત રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ ઈકામતસે પહેલે ફજરકી દો રકઅત સુન્નત મુખ્તસર તરકીસે પઘલતે થે.

૧૫૭૪ : એક ઔર સનદસે ભી યહી હદીષ રિવાયત હુઈ હૈ.

૧૫૭૫ : હજરત હફ્શા રદીઅલ્લાહો અન્હા, બયાન કરતી હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ ફજર તુલુઅ હોને કે બાદ દો રકઅત હલકી સુન્નત નમાઝ ફજરકી પઘલતે ઊસ કે અલાવા ઔર કોઈ નમાઝ નહીં પઘલતે થે.

૧૫૭૬ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૫૭૭ : હજરત હફ્શા રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, જબ ફજર રોશન હો જાતી તો નખીએ કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ દો રકઅત નમાઝ પઘલતે.

૧૫૭૮ : હજરત આઅેશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ અઝાન સુનને કે બાદ દો રકઅત ફજરકી સુન્નત નમાઝ હલકી કર કે પઘલતે થે.

૧૫૭૯ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ જીસમે તુલુઅ ફજરકા ઝિક હૈ.

१५८० : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लम इजरकी अजान और धकामत के दरम्यान हो रक्यत सुन्नते इजर धस तरह हलकी कर के पणहते थे.

१५८१ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लम इजरकी अजान और धकामत के दरम्यान हो रक्यत सुन्नते इजर धस तरह हलकी कर के पणहते थे. के में हिलमें सोयती थी के क्या आपने सू-अे-इतेहा धन रक्यतोंमें पणही होगी या नही?

१५८२ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम तुलुअे इजर के भाह की हो रक्यतें सुन्नत पणहते के में हिलमें सोयती थी के क्या आपने सू-अे-इतेहा धन रक्यतोंमें पणही होगी या नही?

१५८३ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम कीसी निहलका धतना भयाल नही रभते थे जुतना की इजरकी हो रक्यत सुन्नतका.

१५८४ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मेंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमको कोध निहल धस कहर सरअत के साथ पणहते हुअे नही देभा जुस कहर सरअत के साथ आप इजरकी सुन्नत पणहते थे.

१५८५ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमायाके, इजरकी हो रक्यते सुन्नत की दुनिया और जो कुछ दुनियामें है उन सभसे ज्याहा भहेतर है.

१५८६ : हुजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “मेरे नजदिक, तुलुअे इजर के भाह की हो रक्यतें (सुन्नत) पणहना मेरे नजदिक तमाम दुनियांसे ज्याहा भहेतर है.

१५८७ : हुजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने सुन्नते इजरकी हो रक्यतसे कुल या अय्योहल कइइन और कुल होवलाहो अहद (की सूते) पणही.

१५८८ : हुजरत धन्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम इजरकी हो रक्यत सुन्नत नमाओंमें पडलीमें, कुलु आमन्ना बिल्लाहे वमा उन्जेला धलयना (सूअे बकर) और हुसरीमें सूअे आमन्ना बिल्लाहे व-शहदु अन-ना मुसलेमुन ..वाली आयते पणहते.

१५८९ : हुजरत धन्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम इजरकी हो रक्यत सुन्नत नमाओंमें, कुलु आमन्ना बिल्लाहे वमा उन्जेला धलयना (सूअे बकर) और सूअे धभरान की तयालव धला कलेभतीन सवाधन भयनना. वभयनकुम. (वाली आयते पणहते)

१५९० : अेक और सनहसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

બાબ ૨૪૬ :- સુન્નતોં કી ફઝીલત ઓર ઊનકી તાઅદાદ કે બયાનમેં.

૧૫૯૧ : અમ્ર બિન અવસ બયાન કરતે હૈ કે, અન્બસા બિન અબુ સુફિયાનને અપને મરઝુલ મૌતમેં મુજસે ઓસી હદીષ બયાન કી જીસે સુન કર ખુશી હોગી, ઊન્હોંને ઊમ્મુલ મુઅમેનીન ઊમ્મે હબીબા રહીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત કી હૈ કે, જીસ શખ્શને દિન રાતમેં બારહ રકઅત પઠ્ઠી ઊસ કે લિયે જન્નતમેં એક ઘર બનાયા જાએગા.

હજરત ઊમ્મે હબીબા રહીઅલ્લાહો અન્હા ફરમાતી હૈ જબસે મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમસે યે હદીષ સુની હૈ, મૈને ઊન રકઅતોંકો (કભી) તર્ક નહીં ક્રિયા, અન્બસા કહેતે હૈં જબસે મૈને ઊમ્મે હબીબાસે યે હદીષ સુની હૈ મૈને ઊન રકઆતકો તર્ક નહીં ક્રિયા.

અમ્ર બિન અવસ કહેતે હૈ કે, જબસે મૈને અન્બસાસે યે હદીષ સુની હૈ, મૈને ઇન રકઆતકો તર્ક નહીં ક્રિયા.

ઓર નોઅમાન બિન સાલિમ કહેતે હૈ કે, જબસે મૈને અમ્ર બિન અવસસે યે હદીષ સુની હૈ ઇન રકઅતોંકો તર્ક નહીં ક્રિયા.

૧૫૯૨ : ઇસ સનદ કે સાથ હજરત નોઅમાન બિન સાલિમને કહા, જીસ શખ્શન એક દિનમેં, યે બારહ રકઅતેં સુન્નત પઠ્ઠી. ઊસ કે લિયે જન્નતમેં ઘર બનાયા જાએગા.

૧૫૯૩ : રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકી જવાઝા હજરત ઊમ્મે હબીબા રહીઅલ્લાહો અન્હો બયાન કરતી હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ફરમાયા, “જો મુસલમાન બંદા હરરોજ અલ્લાહ ત્યાલા કે લિયે બારહ રકઅત નિફલ (સુન્નત) પઠ્ઠેગા. અલ્લાહ ત્યાલા ઊન કે લિયે જન્નતમેં ઘર બનાએગા.

યા ફરમાયા ઊસ કે લિયે જન્નતમેં ઘર બનાયા જાએગા. હજરત ઊમ્મે હબીબા ફરમાતી હૈ મૈ ઊસ દિનમેં હંમેશા યે સુન્નતેં પઠ્ઠતી હું. ઇસ તરહાં બાકી રાવીઓને ભી કહા.

૧૫૯૪ : હજરત ઊમ્મે હબીબા રહીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ફરમાયા, “જો બંદા મુસલમાન બંદા કામિલ વુઝુ કરે ફિર અલ્લાહ ત્યાલા કે લિયે હર દિન..(ઓર) બાકી હદીષ વૈસી હૈ જૈસી આગે ગુજરી હૈ.

૧૫૯૫ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ દો રકઅત ઝુહરસે પહેલે ઓર દો રકઅત ઝુહર કે બાદ, દો રકઅત ઇશાં કે બાદ ઓર દો રકઅત જુમ્આ કે બાદ પઠ્ઠી. બહરહાલ મગરીબ, ઇશાં ઓર જુમ્આકી સુન્નતેં મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ આપ કે ઘરમેં પઠ્ઠી.

બાબ ૨૪૭ :- નવાફિલ પઠ્ઠનેકા તરીકા.

૧૫૯૬ : અબ્દુલ્લાહ બિન સકીફ ફરમાતે હૈ કે, મૈને હજરત આએશહ સિદ્દીકા રહીઅલ્લાહો અન્હાસે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકી નફિલ નમાઝ કે બારેમેં પુછા હજરત આએશહ રહીઅલ્લાહને ફરમાયા, “રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ ઝુહરસે પહેલે ચાર રકઅત મેરે ઘરમેં અદા કરતે થે. ફિર હજરેસે (બાહર) તશરીફ

ले जाते और लोगोको जुद्धकी नमाज पण्डाते, फिर लोगोको धशांकी नमाज पण्डाते, फिर मेरे हुजुरेमें आ कर हो रक्यत पण्डते. रातको छिठकर वितर के साथ नौ (९) रक्यतें पण्डते, रातको क्याम और कुछि लम्बे करते, जब भंडे होकर किरयत करते तो इकुय्य और सुजुदभी क्याम की लाततमें करते और जब बैठ कर किरयत करते तो इकुय्य और सुजुद भी बैठ कर ही करते और तुलुय्य इजर के बाद हो रक्यत पण्डते.

१५९७ : हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम लम्बी रात तक क्याम करते, जब भंडे होकर नमाज पण्डते तो भंडे होकर इकुय्य करते और जब बैठ कर नमाज पण्डते तो बैठ कर इकुय्य करते.

१५९८ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन शकीकसे रिवायत है के, मैंने हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे ये मस्अला पूछा तो अन्हांने इरमाया, "रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम हेर रात तक बैठ कर नमाज पण्डते थे. फिर उपर जैसी गुजरी है वैसी ही लहीष भयान की.

१५९९ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन शकीक रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, मैंने हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमकी रातकी नमाज के बारेमें पूछा तो आपने इरमाया, "रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम हेर रात तक भंडे होकर नमाज पण्डते और हेर रात तक बैठ कर नमाज पण्डते थे. जब भंडे होकर किरयत करते तो इकुय्य भी भंडे होकर करते और जब बैठ कर किरयत करते तो इकुय्य भी बैठकर करते.

१६०० : अब्दुल्लाह बिन शकीकसे रिवायत है के, हमने हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमकी नमाज के बारेमें पूछा तो इरमाया, "रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम कसरतसे भंडे होकर और बैठ कर नमाज पण्डते थे. जब आप भंडे होकर नमाज पण्डना शइ करते तो इकुय्य भी भंडे होकर करते और जब बैठ कर नमाज पण्डते तो इकुय्य भी बैठ कर करते.

१६०१ : हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, मैंने रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमकी कभी रातमें बैठकर नमाज पण्डते हुअे नहीं देभा, लता के आपका जुरम सुन्न रह जाता तो आप बैठ कर नमाज पण्डते. और जब डीसी सूरतकी तीस या चालीस आयतें आकी रहती तो भंडे होकर किरयत इरमाते और भंडे होकर ही इकुय्य करते.

१६०२ : हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम बैठकर (नमाजकी) किरयत करते और जब आपकी तीस या चालीसी के करीब आयतें आकी रह जाती तो आप भंडे होकर किरयत करते और इकुय्य और सुजुद भी करते और दुसरी रक्यतमें फिर अैसा करते.

१६०३ : हुजरत आअेशाद रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम नमाजमें बैठकर किरयत करते और जब आप इकुय्य करनेका

धरादा करते तो उतनी देर के लिये भंडे हो जाते जितनी देरमें धन्सान आलीस आयतें पणह लेता है.

१६०४ : अल्कमा बिन वकाससे रिवायत है के, मैंने हजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्हासे पूछके, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम हो रकअत (नमाज निश्कल) भैठ कर किस तरहां पणहते थे ? हजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमाया, “आप हो रकअतोंमें भैठकर किरअत करते और जब रुकुअका धरादा करते तो भंडे हो जाते फिर रुकुअ करते.

१६०५ : अब्दुल्लाह बिन शकीकसे रिवायत है के, मैंने हजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्हासे पूछके, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम भैठकर नमाज पणहते थे ?

इरमाया, “हां, जब लोगोंने आपको पुणहा कर दिया था.

१६०६ : अक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है.

१६०७ : हजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम विसालसे पहले बकसरत भैठकर नमाजें पणहते थे.

१६०८ : हजरत आग्नेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमका बदन लारी और भोजिल हो गया तो आप बकसरत भैठकर नमाजें पणहते थे.

१६०९ : हजरत हक़शह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम सिर्फ़ विसालसे अक साल पहले भैठकर नवाक़िल पणहते थे. और नवाक़िलमें आप बडीसे बडी सूत तरतीबसे पणहते थे.

१६१० : अक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है. लेकीन इसमें विसालसे अक साल या दो सालका जीक है.

१६११ : हजरत ज़ाबिर बिन समूरह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने विसालसे पहले भैठ कर नमाजें पणही है.

१६१२ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, मैंने ये हदीष सुनी थी के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया था, भैठ कर नमाज पणहनेका आधा अजर होता है. अक दिन आपकी बिदमतमें हाज़र हुआ तो आपको भैठकर नमाज पणहते हुअे देभा, मैंने अपना हाथ आप के सरे-अकदस पर रज्भा.

आपने इरमाया, “अथ अब्दुल्लाह बिन उमर क्या बात है ?

मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! मुझे ये बताया गया है के, आपने ये इरमाया है के, भैठकर नमाज पणहनेका आधा अजर होता है, जब के आप खुद भैठकर नमाज पणह रहे है.

आपने ये इरमाया है के, भैठकर नमाज पणहुनेका आधा अजर होता है, जब के आप भुद भैठकर नमाज पणहु रहे है.

आपने इरमाया, "हां, लेकीन मैं तुम जैसे कण हुं ?

१६१३ : अेक और सनदसे भी जैसे ही हदीष मन्कुल है.

भाब २४८ :- तहज्जुद की नमाजमे नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी रकअतोंका और वितर की रकअतोंका भयान.

१६१४ : हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम रातको आरह रकअत नमाज पणहुते थे. अेक रकअत के साथ रकअत की ताअदाहको ताक (अेकी संख्यामें) बना लेते थे. नमाजसे शरिग होकर हांघ करवट लेट जाते, यहां तक के आप के पास मुअजजीन आता, फिर आप हो रकअत हलकी सी नमाज पणहुते.

१६१५ : नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमकी जबज-अे-मोहतरमा हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम हांघांकी नमाज जसे लोग अिन्मह कहते है (अिस वक्त)से इजर तक आरह रकअत पणहुते. हर हो रकअत के भाद सलाम इरते और (मिलाकर) अिनको वितर (ताक) बना लेते, जब मुअजजीन अजान देने के भाद आमोश हो जाता और आप पर सुणहुका वक्त मुन्कशीक हो जाता और मुअजजीन आप के पास आता तो आप भेडे होकर हो रकअत मुप्तसरन (सुन्नत) नमाज पणहुते फिर हांघ करवट लेट जाते यहां तक के आप के पास हांघामत के लिये मुअजजीन आता.

१६१६ : अेक और सनदसे भी ये हदीष मन्कुल है. लेकीन हांसमें हांसका अिक नहीं है के, इजर जाहिर हो गह और आप के पास मुअजजीन आया. और ना ही हांघामतका अिक है.

१६१७ : हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम रातको तेरह रकअत नमाज पणहुते, और पांच रकअत वितर पणहुते और सिर्फ आभिरमें भैठते.

१६१८ : अेक और सनदसे भी जैसे ही हदीष मन्कुल है.

१६१९ : हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम सुणहु की हो रकअत सुन्नत समेत तेरह रकअत (नमाज) पणहुते थे.

१६२० : अबु सलमा अिन अब्दुर्रहमानसे रिवायत है की, मैंने हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हासे सवाल किया के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम रमजानमें कीस तरहां नमाज पणहुते थे ?

हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमायाके, रमजान हो या गैर रमजान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम आरह रकअतसे ज्यादा (नमाज) नहीं

पणहते और रक्यत की बात मत पूछो. फिर चार रक्यत नमाज पणहते और धन के हुस्त और तुलकी बात मत पूछो. इस के बाद तीन रक्यत वितर पणहते थे. मैंने आपसे दरयाइत किया, या रसूलुल्लाह क्या आप वकतसे पहले सो जाते हैं ?

तो आपने इरमाया, “अथ आयेशह ! मेरी आंभे सो जाती है पर हिल नहीं सोता.

१६२१ : अबु सलमासे रिवायत है के, मैंने हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दासे रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सललमकी नमाज के बारेमें दरयाइत किया तो आपने इरमाया, “रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही वसललम तेरह रक्यत पणहते थे. आठ रक्यत पणहते के बाद वितर पणहते थे फिर दो रक्यत भैठकर पणहते थे. जब इकुअका धरादा इरमाते तो जेडे होकर इकुअ करते. फिर इशरकी अजान और धकामत के दरम्यान दो रक्यत पणहते थे.

१६२२ : अेक और सनहसे भी ये रिवायत मन्कुल है. मगर इसमें वितर समेत नौ (९) रक्यतका जिक है.

१६२३ : अबु सलमासे रिवायत है के, मैंने हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दा की जिहमतमें हाजिर हुआ और अर्ज किया, “अथ मां ! मुजे रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सललमकी नमाज के बारेमें बताइये.”

हजरत आयेशहने इरमाया, “रमजान हो या गैर रमजान रातकी सुन्नते-इशर समेत तेरह रक्यत पणहते थे.

१६२४ हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही वसललम रातको दस रक्यत पणहते और अेक रक्यत पणहकर नमाजकी वितर (ताक - अेकत्री) करते थे. और दो रक्यत (सुन्नते) इशरकी पणहते. और ये कुल तेरह रक्यत है.

१६२५ : अबु इस्हाकसे रिवायत है के, मैंने अरवह बिन यजीदसे कहा, मुजे वो हदीष बताओ जसमें तुमने हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दासे रसूलुल्लाह सललल्लाहो त्वाला अलयहे व सललमकी नमाज के बारेमें पूछा था.

बिन्होंने कहा की हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दाने इरमायाके, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही वसललम रात के अक्वल हिस्सेमें सो जाते थे और आभिर हिस्सेमें बेदार होते थे. अगर आपकी अपनी जबजासे कोइ जइरत होती तो विसे पुरा इरमाते, इस के बाद सो जाते और जब पहलेी अजान होती तो वीक जाते जभुदा हजरत आयेशहने ये वही इरमाया के उपर पानी डालते और ना कसम, जभुदा ये इरमायाके, आप गुसल करते और मैं ये जूब जानता हूँ के आपका धरादा क्या था. अगर आप जनुषी नहींते तो नमाजका पुजु करते फिर दो रक्यत नमाज पणहते थे.

१६२६ : हजरत आयेशह रदीअल्लाहो अन्दा इरमाती है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही वसललम रातकी उठकर नमाज पणहते और आभिरमें वितर पणहते थे.

१६२७ : मशरूफ इरमाते है के, मैंने हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी अमल के बारेमें सवाल किया. हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमाया, “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम दाअेभी अमलको पसन्द करते थे. मैंने पूछा के आप किस वकत नमाज पणहुते थे ?

इरमाया, “जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम मुर्गे की आंग सुनते तो ખेडे होकर नमाज पणहुते.

१६२८ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हा भयान करती है के, मैंने हंमेशा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम को, रातको आभिरा हिरसेमें अपने घरमें या अपने नजदिक सोता हुआ पाया.

१६२९ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है की, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम इशरकीहो रकअत पणहुने के बाद अगर मैं जागती होती तो मुजसे आते करते वरना लेट जाते.

१६३० : अेक और सनदसे भी अेसी ही हदीष मन्दुल है.

१६३१ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम रातको नमाज पणहुते जब आप वितर पणहुनेका धरादा करते तो मुजसे इरमाते, अथ आअेशाह ! उठ कर वितर पणहु लो.

१६३२ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम रातको नमाज पणहुते और हजरत आअेशाह हुअुर के सामने अरद की ज़ानीब लेटी हुअु होती. जब आपकी वितर आकी रह जाते तो आप हजरत आअेशाहको जगा देते फिर हजरत आअेशाह वितर पणहुती.

१६३३ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने रात के हर हिरसेमें वितर पणहुी है और इशर तक आप के वितर पणहुंय गअे.

१६३४ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अव्वल, औरसत, आभर हर हिरसेमें वितर पणहुी है और आप के वितर इशर तक पणहुंय गअे.

१६३५ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने रात के हर हिरसेमें वितर पणहुी है. यहाँ तक के आप के वितर रात के आभरी हिरसे तक पणहुंय गअे.

१६३६ : जरारह भयान करते है के, साअद बिन हिशाम बिन आभिरने अल्लाह त्वाला की राहुमें जिहाद करनेका धरादा किया तो मदीना आ गअे और अन्हींने मदीनामें अपनी जमीन भेयनेका करद किया ताकी, अससे हथियार और धाँडे वगैरह अरीद ले और ता-हयात इमीअोंसे जिहाद करें, मदीना आकर जब अन्हींने मदीने के कुछ लोगोंसे मुलाकात की तो अन्हींने साअदको धस धकदाभसे मना किया और कहा के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व

सल्लम के जमानेमें जो सदाबाने यही धरादा किया था तो नपी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने उन्हें धस धकदाभसे आज रब्बा और इरमाया, “क्या तुम्हारे लिये मेरी जुन्हगीमें नमूना नहीं है ?”

जब अहेले मदीनाने साय्यदसे येह उदीष भयान की तो उन्होंने अपनी उस जवजहसे इणुअ कर लिया जुसको वो पहले तलाक दे चु के थे और अपनी इणुअ पर लोगोंको गवाह कर लिया. फिर हजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्हो के पास गये और उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के वित्तर के बारेमें सवाल क्या.

हजरत एब्ने अब्बासने इरमायाके, “क्या मैं तुम्हें, वो शप्श ना बताहुं जो इये जमीन पर सभसे ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के वित्तरको ज्ञानता हो ?”

साय्यदने कहा, “वो कौन है ?”

इरमाया, “हजरत आय्येशह रहीअल्लाहो अन्हो, उन के पास ज्ञानो और उनसे सवाल करो फिर मेरे पास आकर मुझे भी उनका जवाब बताता.”

साय्यद इरमाते है के, मैं हजरत आय्येशह की तरफ रवाना हुया और हकीम बिन अइहद के पास गया और कहा के, मुझे हजरत आय्येशह के पास ले खलो. उन्होंने कहा के, मैं हजरत आय्येशह के पास नहीं जाउंगा क्युं की मैंने उनको रोका था. उन हो गिरोहों के दरम्यान मुदाबिलतसे, (हजरत उरमान रहीअल्लाहो अन्हो के किंसास के तालेपीन और हजरत अली कर्मल्लाहो वजहहु) लेकीन आप नहीं मानी और खली गध.

साय्यद इरमाते है, मैंने हकीमको कसम दी पस वो खल दिये और हम दोनों हजरत आय्येशह रहीअल्लाहकी तरफ गये, हमने आपसे हाजूर होने की एज्जत मांगी. आपने एज्जत ही, हम आपकी बिदमतमें हाजूर हुये.

आपने हकीमको पहलेयान कर इरमाया, “क्या हकीम हो ?”

उन्होंने कहा, “हां.”

इरमाया, “तुम्हारे साथ कौन है ?

उन्होंने कहा, “साय्यद बिन हिशाम”

इरमाया, “कौन हिशाम ?”

हकीमने कहा, आभिरका भेटा.

हजरत आय्येशहने आभिर के लिये रहम की दुया की और महेरबानी की. कताहद इरमाते है के, आमीर जंगे ओहदमें शहीद हो गये थे,

मैंने कहा, “अथ उम्भूल मुयभेनीन मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के अज्जाक के बारेमें बतायें.”

आपने इरमाया, “क्या तुम कुरयान नहीं पणहते ?”

मैंने कहा, “क्युं नहीं ?”

इरमाया, “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमका फुलुक कुरयान ही तो है.”

साअहने कहा, मैंने ठिठनेका धरादा किया और सोचा आधन्दा भरते हम तक कीसीसे सवाल नहीं करुंगा, फिर मुझे भयाल आया तो पुछा, मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के क्रियाम के बारेमें बताधये.

आपने इरमाया, “क्या तुम या अय्योहल मुजम्मील नहीं पणहते ?”

मैंने अर्ज किया, “क्युं नहीं ?”

आपने इरमाया, “अल्लाह त्वालाने इस सूत के शुर्भमें आप पर रातका क्रियाम इर्ज किया था तो, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम और आप के सहाभा अेक साल तक रातको क्रियाम करते रहे. अल्लाहने इस सूत के आभरी हिरसेको बारह महिने तक आसमान पर रो के रब्बा इस के बाद अल्लाहने इस सूत के आभिरमें तफकिई नाजिल इरमाध फिर रातका क्रियाम इरज की जगह निखल हो गया.”

साअहने कहा, “मैंने अर्ज किया, अय ओम्मुल मुअमेनीन मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के वितर के बारेमें बताधये.”

आपने इरमाया, “ हम हुजुर के लिये भिश्वाक और पुजुका पानी तैयार रभते थे अल्लाह त्वाला आपको रातको जब चाहता ठिठा देता, आप भिश्वाक, पुजु करने और नौ (९) रकअत नमाज पणहते, जिनमेंसे आप सिई आठ (८) रकअतमें षैठते और अल्लाहका जिक् और ठिसकी हम्द करते और अल्लाह त्वालासे दुआ करते फिर षेठे होते और सलाम ना इेरते और षेठे होकर नववीं रकअत पणहते. (९वीं) फिर षैठ जते. अल्लाहका जिक् और ठिसकी हम्द करते और ठिससे दुआ मांगते फिर ठिस के बाद जुलूह आवाअसे सलाम इेरते और हमें सलाम डी आवाअ सुनाते. सलाम इेरने के बाद षैठकर दो रकात नमाज पणहते. अय भेरे षेठे ! ये आरह रकअत है. फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम ठिअ रशीदा हो गये और आपका बदन मुभारक ठारी हो गया, अय षेठे ! ये नौ (९) रकअत है. और नबी सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमका ये भअमूल था के जब कोध काम करते तो ठिस पर मुहावमत करते और जब कभी आप पर नीह या दईका गलभा होता और रातको ना ठिठ शकते तो दिनमें बारह रकअत पणहते और भेरे धलममें ये नहीं है के, कभी आपने अेक रातमें पुरा कुरआन करीम पणहा हो और ना कभी आपने सारी रात सुणहा तक नमाज पणही और ना रमजान के अलावा पुरा माह रोणे रब्भे.”

साअह इरमाते है के, “मैं हजरत धंने अब्बास के पास गया और ठिन्हें हजरत आअेशह रहीअल्लाहो अन्हा की हदीष सुनाध. हजरत धंने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होने कहा, हजरत आअेशहने सय इरमाया, “अगर मैं ठिन के करीब होता था मैं ली हाण्ठर होता तो आपसे बिल मुशाक्ष ये हदीष सुनाता.

साअहने कहा, अगर मुझे ये धलम होता के आप हजरत आअेशह के पास नहीं जते तो मैं आपको ये हदीष ना सुनाता.

१६३७ : जरारह बिन अवदीसे रिवायत है के, सायद बिन हिशामने अपनी बीबीको तलाक देदी और मदीना मुनव्वरहमें अपनी जमीन बेचने आये उस के बाद आपर जैसी ही रिवायत मन्दुल है.

१६३८ : सायद बिन हिशामसे रिवायत है के, मैं हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रहीअल्लाहो अन्हो के पास गया और उनसे वितर के मुताअल्लीक पुछा, उस के बाद पुरी हदीष है इसमें ये ली है के, हजरत आयेशहने इरमाया, "हिशाम कौन है ?

मैंने कहा, धुने आमीन. वो बोली वो अहेतरीन शप्श और आमीर जंगे ओहदमें शहीद हुये थे.

१६३९ : जरारह बिन अवदी भयान करते हैं के, सायद बिन हिशाम उन के पंडोशी थे, उन्होंने कहा की, उन्होंने अपनी बीबीको तलाक दे दी है, और आपरवाली रिवायत की तरहां पुरा वाक्या भयान किया, और उसमें ये है के हजरत आयेशहने कहा, की कौन सा हिशाम ?

अन्होंने कहा, आभिरका भेटा.

हजरत आयेशहने इरमाया, "आभिर अहोत अय्या शप्श था. और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के साथ जंगे ओहदमें शहीद हो गया. और उसमें ये ली है के, हकीम बिन अइलहने कहा, अगर मुझे पहले एहम होता के तुम हजरत हजरत आयेशह के पास नहीं जाते तो मैं (तुमसे) ये हदीष भयान ना करता.

१६४० : सायद बिन हिशामसे रिवायत है के, हजरत आयेशह रहीअल्लाह अन्होसे रिवायत है के, हर्द या कीसी और वजहसे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी नमाज छूट जाती तो आप दिनमें बारह रकअत नमाज पणहते.

१६४१ : हजरत आयेशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम जब कोछ काम करते तो उस पर हुंमेशगी करते और अगर कभी आप रातको सो जाते या आपको हर्द होता तो दिनमें (१२) बारह रकअत पणहते. हजरत आयेशह इरमाती है के, मैंने कभी नहीं देखा के आप, सारी रात सुण्डा तक नमाज पणहते रहे हों और ना कभी ये देखा के रमजान के सिवा आपने कीसी मांहु पुरे महिने के रोजे रज्जे हों.

१६४२ : हजरत उमर धुने भत्ताब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, "जुस शप्शसे उसका कोछ माअमूल या उसका कोछ हिस्सा छूट जाये और उसको वो इजर और जुहर की जनाजों के हरभ्यान अदा करे तो उस के आमाअनामें मैं वो अमल रात ही का लिज्जा जायेगा.

१६४३ : हजरत अईद बिन अरकम रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, उन्होंने कुछ लोगोंको आशतकी नमाज पणहते देखा तो कहा ये लोग भूण ज्ञानते है के, नमाज इस वक्त के अलावा दूसरे वक्तमें पणहना अइजल है. क्युं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व

सल्लमने इरमाया, “तौबा करनेवालों की नमाज ठिस वक्त होती है जब अंत के अर्थों के पुर धूपमें गरम रेत पर अलनेसे गरम हो जाये.

१६४४ : हुजरत अँद बिन अरकम रहीअल्लाहो अन्हो भयान करते है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम अेहले कुबा के पास गये. वो लोग ठिस वक्त नमाज पणह रहे थे. आपने इरमाया, “तौबा करनेवालों की नमाज ठिस वक्त होती है जब अंत के अर्थों के पैर गरम होने लगे.

१६४५ : हुजरत एब्ने उमरसे रिवायत है के, अेक शप्शने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमसे रातकी नमाज के आरमें सवाल किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “रातकी नमाज हो-हो रक्यत हैं, जब तुममेंसे कीसी शप्शको (तुलुअ) इजरका डर हो तो (आजरी रक्यतों के साथ मिला कर) अेक रक्यत पणहले तो वो ठिसकी तमाम नमाजोंको वितर (ताक, अे की अंक वाली) कर हेगी.

१६४६ : हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्शने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमसे रातकी नमाज के आरेमें पुछा तो आपने इरमाया, “हो-हो रक्यत पणहो और जब तुलुअे इजरका भौक हो तो अेक रक्यत पणह कर नमाजोंको वितर कर लो.

१६४७ : हुजरत अफ्दुल्लाह बिन उमर एब्ने अताब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्शने अडे होकर सवाल किया, या रसूलुल्लाह ! रातकी नमाज किस तरहां पणही जाये ?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “रातकी नमाज हो, हो रक्यत हैं, जब सुणह होनेका भौक हो तो अेक रक्यत के अरीअे उनको वितर करलो.

१६४८ : हुजरत अफ्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्शने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमसे रातकी नमाज के आरेमें दर्याकत किया, जब के मैं साधल और आप के दरभ्यान था. आपने इरमाया, “हो रक्यत कर के नमाज पणहो. और जब सुणह होनेका अतरा हो तो अेक रक्यत पणहकर नमाजको वितर करलो.

किर अेक शप्शने अेक साल के आह सवाल किया, और ठिस वक्त भी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के साथ ठिसी जगह था. मुजे पता नहीं के ये साधल वही पहेलेवाला था या कोध और था. अहरहाल आपने ठिसको उपर के मुताबिक जवाब दिया.

१६४९ : अैसी ही रिवायत हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे अेक और भी है लेकीन ठिसमें ये नहीं के, ठिसने साल अतम होने पर या ठिस के आह सवाल किया.

१६५० : हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “सुणह होनेसे पहेले वितर पणह लिया करो.

१६५१ : हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “जे शप्श रातकी नमाज पणहे. वो वितरको आभिरमें पणहे. अ्युं की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम यही हुकम देते थे.

१६५२ : हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “अपनी रातकी नमाजमें वितरको आभिरमें पण्डां करो।

१६५३ : हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “जो शप्श रातको नमाज पण्डे. वो वितरको आभिरमें पण्डे. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम उन्हें एस तरहां हुकम देते थे।

१६५४ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “वितर रातकी नमाज (की आभीरमें पण्डी ज़नेवाली हो रकअतोंमें से) अेक रकअत है।

१६५५ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “वितर रातकी नमाज (की आभीरमें पण्डी ज़नेवाली हो रकअतोंमें से) अेक रकअत है।

१६५६ : अबु भिजलजसे रिवायत है के, हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे वितर के बारेमें दर्याइत किया. उन्होंने कहा के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “वितर रातकी आभिरमें अेक रकअत है.”

हुजरत एब्ने उमर रहीअल्लाहो अन्होसे पूछा तो उन्होंने कहा के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “वितर रात के आभिरमें अेक रकअत है.”

१६५७ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, “अेक शप्शने आपको आवाज ही ज़ब के आप मस्जुदमें थे. उसने पूछा, या रसूलुल्लाहमें अपनी रातकी नमाजकी वितर कैसे करूं ?”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “जो शप्श रातको नमाज पण्डे तो वो हो हो रकअत पण्डे और ज़ब सुण्ड होनेका ज़याल हो तो अेक रकअत पण्डे. उसकी तमाम रकअतें वितर हो ज़रमेंगी.”

१६५८ : अनस बिन सीरीनने कहा मैंने, हुजरत एब्ने उमरसे कहा, “मुजे उन हो रकअतों के बारेमें बताइये जो मैं इजरकी नमाजसे पहले पण्डता हुं. क्या मैं उनमें लम्बी किरअत करूं ?”

हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमायाके, “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम हो रकअतें पण्डते थे. और अेक रकअत के साथ उन नमाजोंकी वितर कर देते थे.”

उन्होंने कहा, “मैं आपसे एस के मुतअल्लीक नहीं पुछ रहा.”

हुजरत एब्ने उमरने कहा, “तुम ज़होत सप्त हो. क्या तुम मुजे (पुरी) इदीष ज़यान करने नहीं देते. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम रातको हो हो रकअत पण्डते. आभरी रकअतसे उन रकअतोंको वितर कर देते. और इजर के इर्जेसे पहले हो रकअतें पण्डते थे. यहां तक के आप के कानोंमें अज़ानकी आवाज आ रही होती थी.”

जलक़ ने अपनी रिवायतमें, 'मुझे दो रक़यत के बारेमें बताइये' का ज़िकर किया है और नमाज़का ज़िकर नहीं किया।

१६५६ : अ़क़ और सनहसे भी अ़सी ही हदीष मन्डुल है। मगर इसमें ये धज़ाक़ा है, "क़हरो, क़हरो तुम मोटे आदमी हो।"

१६६० : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, "रातकी नमाज़ दो-दो रक़यत है (तहेज़जुद की नमाज़)। जब तुम दैणो के सुब्ह हो रही है, तो अ़क़ रक़यत मिला कर वितर करलो। (मिलाकर पणह लो) हज़रत ध़बने उमरसे पूछा गयाके, "दो दो रक़यतका मतलब क्या है?" तो उनहोंने इरमाया, "हर दो रक़यत के बाद सलाम इरे दे।"

१६६१ : हज़रत अबु सध़द़ जुदरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, "सुब्ह होनेसे पहले वितर पणह लो।"

१६६२ : हज़रत अबु सध़द़ जुदरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, सहाबाने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे वितर के बारेमें पूछा तो आपने इरमाया, "सुब्ह होनेसे पहले वितर पणह लो।"

१६६३ : हज़रत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, "जुस शफ़शको ये हद़सा हो के वो रात के पिछले पहर नहीं उठ पायेगा, वो अक्वल रातमें वितर पणह ले। और जुस शफ़शको रात के आभिरि हिस्सेमें उठनेका शौक़ हो वो रात के आभिरि हिस्सेमें वितर पणह ले। क्युं की आभिरि शफ़ की नमाज़में इरीस्ते हाज़र होते है। और ये अइज़ल है।"

१६६४ : हज़रत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, "तुममेंसे जुस शफ़शको ये हद़शा हो के वो रात के पिछले पहर नहीं उठ पायेगा। वोह वितर पणहकर सोयां करे। और जुस शफ़शको रातको उठने पर यकीन हो तो वोह रात के पीछले पहर वितर पण के क्युंके, रातकी आभिरकी किरअत के लिये इरीस्ते हाज़र होते हैं, और ये अइज़ल है।"

१६६५ : हज़रत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, "वो नमाज़ ज़यादा इज़ीलतवाली है जुसमें क़ियाम लम्बा हो।"

१६६६ : हज़रत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमसे पूछा गया। कौनसी नमाज़ ज़यादा अइज़ल है?"

आपने इरमाया, "जुस नमाज़में लम्बा क़ियाम हो।"

१६६७ : हज़रत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, "रातमें अ़क़ लम्हां अ़सा आता है, जुसमें अंदा-अे-मुस्लीम अल्लाह त्वालासे दुनिया और आभिरत की जुस औरका सवाल करता है, अल्लाह त्वाला उसको वोह अता करता है। और ये लम्हां हर रातमें आता है।"

१६६८ : हजरत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “रातमें ओक औसा लम्हां आता है जोस लम्हेंको पाने के बाद बन्द-अ-मुस्लीम अल्लाह त्वालासे जो सवाल करे अल्लाह त्वाला अता इरमाता है.”

१६६९ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हमारा रब तभारक व त्वाला हर रात के आभरी ओक तिहाय हिस्सेमें आसमान और दुनियां की तरफ़ तवज्जो करता है और इरमाता है, कोय है जो मुजसे दुआ मांगे और मैं ओसकी दुआ कुबुल करूं ? कोय है जो मुजसे सवाल करे और मैं अता करूं ? कोय है जो मुजसे बज्शीश तलब करे और मैं ओसे बज्श हूं ?”

१६७० : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “अल्लाह तभारक व त्वाला हर रात के पहले ओक तिहाय हिस्से के गुजर जाने के बाद आसमान और दुनियाकी तरफ़ मुतवज्जोह होता है. और इरमाता है, मैं बादशाह हूं. कोय है जो मुजसे दुआ मांगे ? और मैं ओसकी दुआको कुबुल करूं ? कोय है जो मुजसे सवाल करे और मैं ओसे अता करूं ?

कोय है जो मुजसे बज्शीश तलब करे और मैं ओसे बज्श हूं ?”

अल्लाह त्वाला युं ही इरमाता रहता है, यहां तक के, सुफ्हा रोशन हो जाती है.

१६७१ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब रातका आधा या ओसका दो-तिहाय हिस्सा गुजर जाता है, तो अल्लाह तभारक व त्वाला आसमानो दुनियांकी तरफ़ मुतवज्जोह होता है और इरमाता है, “है कोय मांगने वाला जोसको मैं अता करूं ? है कोय दुआ मांगनेवाला जोसकी दुआको मैं कुबुल करूं ? है कोय बज्शीश तलब करनेवाला जोसको मैं बज्श हूं ?” यहां तक के सुफ्हा हो जाती है.

१६७२ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “अल्लाह तभारक व त्वाला निस्ख या तिहाय रात गुजर जाने के बाद आसमान व दुनियाकी तरफ़ मुतवज्जोह होता है और इरमाता है, “कोय है जो मुजसे दुआ मांगे और मैं ओसकी दुआ कुबुल करूं. या मुजसे सवाल करे और मैं अता करूं ओसको?” फिर इरमाता है, “ओस ज़तको कौन कर्ज देगा जो ना कल्मी इना दुय ना किसी पर जुल्म करेगी.”

१६७३ : ओक और सनदसे ली जैसी ही हदीष मन्कुल है. और इसमें ये फज़ाहा है के, अल्लाह त्वाला अपने हाथ फैलाकर इरमाता है, ओसको कौन कर्ज देगा जो ना कल्मी इना होगा और ना कल्मी जुल्म करेगा.

१६७४ : हजरत अबु सय्द और हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “अल्लाह त्वाला मुहलत देता रहता है यहां तक के रातकी पहली तिहाय हिस्सा गुजर जाता है तो अल्लाह त्वाला असमान और दुनियां की तरफ़ मुतवज्जोह होता है, और इरमाता है, “कोय बज्शीश तलब करनेवाला

है ? कोछ तौबा करनेवाला है ? कोछ दुआ मांगने वाला है ?” यहाँ तक के इशरकी पौ इट पडती है.

१६७५ : अेक और सनदसे भी ये रिवायत मन्दुल है मगर पहेली रिवायत मुकम्भील और मुइरसल है.

बाब २४९ :- तरावीह की इकीलत और ऒसकी तरगीब

१६७६ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “अस शफ्शने रमजानमें इमान के साथ और सवाबकी नियतसे कियाम किया ऒस के पीछले गुनाह बफ्श हिये ज़यमेंगे.”

१६७७ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम कियामे रमजानकी तरगीब देते थे और ऒसका ताअकिदह न हुकम नहीं देते थे. इरमाते थे, “अे शफ्श रमजानमें इमान के साथ और सवाबकी नियतसे कियाम करेगा ऒस के पीछले गुनाह बफ्श हिये ज़यमेंगे.”

रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमका विसाल हो गया और ये मामला युं ही बाकी रहा. इर हजरत अबु बक रहीअल्लाहो अन्हो के पुरे दौरे जिलाइतमें और हजरत ऒमर रहीअल्लाहो अन्होकी जिलाइत के शुइयाती दौर तक ये मुआमला युं ही रहा.

१६७८ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “अस शफ्शमें रमजानमें इमान के साथ और सवाबकी नियतसे रोज़ा रफ्मा ऒस के पिछले गुनाह मुआइ कर हिये जाते है. और अस शफ्शने लयलतुल कद्रमें इमान के साथ और सवाबकी नियतसे कियाम किया ऒस के गुनाह मुआइ कर हिये जाते है.”

१६७९ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “अे शफ्श लयलतुल कद्रमें कियाम करे और ऒसको पा ले तो ऒसकी मगइरत कर ही जाती है. रावी कहेते है के, मेरा जयाल है के, अबु हुरैरहने ये भी कहा था के इमान के साथ और सवाबकी नियतसे.”

१६८० : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सल्लमने अेक शब मरजुहमें नमाज पणही तो आपकी इकतेदामें लोगोंने नमाज पणहना शुइ करही. इर दूसरी शब नमाज पणही तो और जयादा लोग जमा हो गये. इर तीसरी या चौथी शबको रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम तशरीफ़ नहीं लाये.

सुबह आपने इरमाया, “मैंने तुम लोगोंको देखा था और मुजे तुम्हारे पास आनेसे इस ऒईने रोक रभा के तुम पर तरावीह इरज हो ज़यमेंगी. और ये रमजानका वाक़ेआ था.”

१६८१ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम आधी रातकी तशरीफ़ ले गये और मरजुहमें नमाज पणही.

लोगोंने ली आपकी धकतेदामें नमाज पणहनी शुद्ध करदी. सुणह लोगोंने धस वाकेआका जिक्र किया और पहलेली बारसे ज्यादह लोग जम्म हो गये. दूसरी रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम तशरीफ ले गये और लोगोंने आपकी धकतेदामें नमाज पणही. फिर लोगोंने सुणहा धस वाकेआका जिक्र किया, तीसरी रात मरुजुहमें जलहत लोग जम्म हो गये. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम तशरीफ लाये और आपकी धकतेदामें नमाज पणही और चौथी रात धस कहर ज्यादा त्वाहादमें सदाया जम्म हुये के मरुजुह तंग पड गध. और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम उन के पास तशरीफ ना लाये.

लोगोंने नमाज-नमाज पुकारना शरू किया. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम नहीं आये. यहां तक के इजरकी नमाज के वक्त तशरीफ लाये, जब इजरकी नमाज हो गध तो आप लोगोंकी तरफ मुतवज्जेह हुये. कलम-ये-शहादत पणहा और उस के बाद इरमाया, “पिछली रातका तुम्हारा हाल मुजसे छुपा हुआ नहीं था. मगर मुजे ये ખौफ था के तुम पर रातकी नमाज इरज करदी जामेगी. और तुम धसकी अदायगीसे आजुज हो जामेगे.”

भाब २५० :- शमे कद्रमें क्यामकी ताकिह और सत्ताधसवी रातभशमे कद्र होनेकी हलील.

१६८२ : मुहम्मद धप्ने मिहरान अर-राजीसे वलीह धप्ने मुस्लीम अवजाधसे जिरा रिवायत करते हे के, उभे भिन कयम रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “कसम हे उस जगतकी सिवाय जस के कोध मायभुद नहीं हे शमे कद्र रमजान ही में हे. हजरत उभे भिन कयम रहीअल्लाहो अन्हो भिना कीसी धस्तीश्ना के कसम भा कर कहेते थे. भुहाकी कसम में यकीन के साथ जन्ता हुं के शमे कद्र कौनसी शम हे, जसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो त्वाला अल्यहे व आलेही व सल्लमने हुमें क्यामका हुकम दिया हे. ये सत्ताधसवी इरजरी रात हे और धसकी अलामत ये हे के, सत्ताधसवीकी सुणह सूरज उस हालमें तुलुय होता हे की उसकी साथें जलिर नहीं होती.

१६८३ : जिरां भन उभेस इरमाते हे के, हजरत उभे भिन कयम रहीअल्लाहो अन्होने मुजे शमे कद्र के बारेमें जयान किया, और कदा के अल्लाहकी कसम में यकीन के साथ लयतुल कद्रको जन्ता हुं और मेरा ज्यादा यकीन ये हे के, यही वो रात हे जस रातमें, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने क्यामका हुकम दिया था.

शोयभा कहेते हे के, ये बात मेरे अेक साथीने उनसे नकल की थी.

१६८४ : अेक और सनहसे ली अैसी ही हदीष मन्कुल हे जसमें शोयभाक शक जयान नहीं किया गया हे.

भाब २५१ :- हुजुरे अनवर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमकी नमाजे तहज्जुद और हुआयोंका भयान.

१६८५ : हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक रात में अपनी भाला हुजरत मयमूनह रहीअल्लाहो अन्हो के वहां था. नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम रातको बेदार हुअे. कजाअे हाजतसे शरीग होने के बाद हाथ मुंह धोअे, फिर सो गअे फिर दोबारा ठिठे, और मशक के पास जाकर उसका मुंह जोला, फिर दोबारा पुजु किया, पानी ज्यादा नहीं पहाया, लेकीन मुकम्मिल पुजु किया, फिर आपने षडे होकर नमाज पणहनी शर की, मैं भी ठिठा और अंगडाध ली ता की हुजुर गुमान करे के, मैं आप के अहेवाल के तजरसुस के लिये बेदार हुआ हुं. मैं पुजु करने के बाद आपनी बांघ जनीब नमाज के लिये पडा हो गया. आपने मेरा हाथ पकड कर मुजे धुमाकर अपनी हांघ जनीब पडा कर लिया.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम तेरह रकअत पणहने के बाद लेट कर सो गअे यहां तक के भरटि लेने लगे. और आप जब भी सोते थे भरटि लेते थे. इस के बाद हुजरत बिलाल रहीअल्लाहो अन्हो आअे और आपकी नमाजकी (इजरकी भजर ही. आपने षडे होकर बिना पुजु कीये (इजरकी सुन्नत) नमाज पणही. और ये हुआ मांगी, “अय अल्लाह मेरे दिलमें नूर पयदा कर दे. मेरी आंषोंमे नूर पयदा कर दे, मेरे कानोंमें नूर पयदा कर दे, मेरे हाअें नूर और मेरे बाअे नूर और मेरे उपर नूर और मेरे नीचे नूर, और मेरे सामने नूर और मेरी पीठ के पीछे नूर करे.”

करीबकी रिवायत है के, आपने सात कलेमात और इरमाअे थे. जुन्हे मैं भूल गया, फिर मेरी मुलाकात हुजरत अब्बासकी अवलादमेंसे बाअज लोगोंसे हुं तो उनहोंने मुजसे भयान किया के वो सात कलेमान ये थे, “अय अल्लाह मेरे पुद्रो, मेरे गोशत, मेरे भून, मेरे भाल और मेरे भालकी नूरसे भरदे.” इन कलेमात के अलावाह दो और कलेमातका भी जिकर किया है.

१६८६ : हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक रात वो अपनी भाला अब्मूल मुअमेनीन हुजरत मयमूनह रहीअल्लाहो अन्हो के वहां रहे थे. हुजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं बिस्तरकी चौडाधमें (तकिये पर) सर रभ कर सोया. और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम और आपकी अहल्या रहीअल्लाहो अन्हो बिस्तरकी लांभाधमें (तकिये पर) सर रभ कर सोअे. और आधी रात या उससे कुछ कम या ज्यादा के बाद आप ठिठे और नींदकी वजहसे अपनी आंषोकी अपने हाथोंसे मला. फिर आपने सू-अे-आले एभरानकी आभरी दस आयतें तिलावत की, फिर अेक लटकी हुं पुरानी मशक के पास गअे और उससे अअधी तरहां पुजु किया. फिर षडे होकर नमाज पणहने लगे.

हुजरत एब्ने अब्बास इरमाते है के, मैंने भी अैसा ही किया, जैसा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने किया. फिर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमकी पहेलुमें नमाज पणहना शुरू की.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने अपना हाथ मेरे सर पर रखा और मेरा कान भरोडा. फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने दो रक्यत नमाज पण्डना शरू कर दी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने दो रक्यत नमाज पण्डी. फिर दो रक्यत पण्डी. फिर दो रक्यत पण्डी. फिर दो रक्यत पण्डी, फिर दो रक्यत पण्डी, फिर दो रक्यत पण्डने के बाद खेत गये.

यहां तक के आप के पास मुअजजीन आया, आपने भंडे ढोकर दो रक्यत (सुन्नत) मुफ्तसर तरकीसे पण्डी. फिर जकर आपने नमाजे इजर पण्डाछ.

१६८७ : धसी सनदसे अक और रिवायत मन्कुल है जूसमें ये अल्लह है, आपने बेदार ढोकर अक पुरानी भशकसे पानी लिया. भिस्वाक किया और मुकम्भील वुजु किया. और है के, पानी बहाया, फिर मुजे आवाज दे कर उठाया.

१६८८ : हजरत धप्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हजरत मयमूनह रहीअल्लाहो अन्हा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी पाक भीभी है उन के वहां अक रात में सोया था. जबकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम भी उस रात वहां थे.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने वजु कर के नमाज पण्डी में आपकी बांछ जनीब भडा हो गया. आपने मुजे पकड कर दांछ जनीब कर दिया. आपने उस रात तेरह रक्यत नमाज पण्डी. फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम सो गये यहां तक के भरटि लेने लगे. आप जब भी सोते थे भरटि लेते थे. फिर आप के पास मुअजजीन आया, आप उठ भंडे हुये और आपने अहेतर वुजु किया. और नमाज पण्डी.

रावी अम्र कहते हैं मैंने बुकैर बिन असज्जको ये हदीष सुनाछ तो उन्होंने कहा के डुरैबने उनसे धसी तरहां रिवायत की थी. कहते हैं

१६८९ : हजरत धप्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं अक रातकी अपनी आला हजरत मयमून बिनते हारीष रहीअल्लाहो अन्हा के पास रहा. और मैंने उनसे कहा के जूस वकत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम बेदार हो गये तो मुजे भी उठा दे. जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम बेदार हुये तो मैं भी आपकी बांछ तरफ भडा हो गया. आपने मेरा हाथ पकडकर अपनी दांछ जनीब भडा कर दिया. मुजे जब उांछ आती तो मेरा कानकी लो पकडते थे. हजरत धप्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, आपने ग्यारह रक्यत नमाज पण्डी फिर आप सो गये यहां तक के मैंने आप के भरटि सुने और जब इजर नमहार हो गछ तो आपने मुफ्तसर तरकीसे दो रक्यत नमाज (सुन्नते इजर) पण्डी.

१६९० : हजरत धप्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अक रात वो अपनी आला हजरत मयमूनह रहीअल्लाहो अन्हा के वहां रहे, रातको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम उठे और अक लटकी हुंछ पुरानी भशकसे मुफ्तसर वुजु किया. हजरत धप्ने अब्बासने मुफ्तसर वजुकी तशरीहमें इरमाया के आपने वुजुमें कम पानी

ઇસ્તેમાલ ક્રિયા. હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહને ફરમાયા કે મેં ભી ઊઠા ઔર મેંને ભી વો સભી કુછ ક્રિયા જો આપને ક્રિયા થા. ફિર મેં આપકી બાંધ જાનીબ ખડા હો ગયા. આપને મુજે પીછેકી તરફસે (લે જાકર) દાંધ જાનીબ ખડા કર દિયા. નમાઝ પઠ્ઠને કે બાદ આપ લેટકર સો ગયે, યહાં તક કે ખરટિ લેને લગે. ફિર હજરત બિલાલ રદીઅલ્લાહો અન્હોને આકર આપકો ફજરકી નમાઝકી ઇત્તેલા દી. આપને બગેર વુજુ ક્રિયે જાકર ફજરકી નમાઝ પઠ્ઠા દી.

સુક્રિયાન કહેતે હૈ કે, વુજુ ક્રિયે બગેર નમાઝ પઠ્ઠાના સિર્ફ આપહી કે લિયે ખાસ હૈ,ક્યુ કે હમૈં યે હદીષ પહુંચી હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમકી આંખ સો જાતી હૈ,ઔર દિલ નહીં સોતા.

૧૬૯૧ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મેં એક રાત અપની ખાલા મયમૂનહ રદીઅલ્લાહો અન્હાકે વહાં રહા. મેં યે દેખને કે લિયે જાગતા રહા કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ કીસ તરહાં નમાઝ અદા કરતે હૈ.

હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હો ફરમાતે હૈ કે, આપ ઊઠકર પેશાબસે ફારીગ હુયે ફિર આપને હાથ, મુંહ ધોયે ફિર સો ગયે. ફિર ઊઠકર એક મશક કે પાસ ગયે ઊસકા મુંહ ખોલા ઔર ઊસકા પાની એક નાંદ યા કીસી ખંડે ખાલેમૈં ડાલા ફિર ઊસ ખરતનકો અપને હાથોસે ઝુકાયા. ફિર ખહોત અચ્છે તરફસે દરમ્યાની વુજુ ક્રિયા. ફિર ખંડે હોકર નમાઝ પઠ્ઠને લગે. મેં આકર આપ કે બાઅૈં પહેલુમૈં ખડા હો ગયા.

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને મુજે પકડકર અપની દાંધ તરફ કર દિયા.

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને તેરહ રકઅતૈં મુકમ્મિલ કી ફિર સો ગયે, ઔર ખરટિ લેને લગે. હમ જાનતે યે કે આપ સોને કે બાદ ખરટિ લેતે હૈ.

ફિર આપને ખંડે હોકર નમાઝ પઠ્ઠની શરૂ કી. આપ નમાઝમૈં ઔર સજ્દૈંમૈં યે દૂઆ માંગતે થે, “અય અલ્લાહ મેરે દિલમૈં નૂર કરદે, મેરે દાંઅે નૂર કરદે, મેરે બાંઅે નૂર કરદે, મેરે આગે નૂર કરદે, મેરે પીછે નૂર કરદે, મેરે ઊપર નૂર કરદે, મેરે નીચે નૂર કરદે, મેરે લિયે નૂર કરદે, યા ફરમાતે મુજે નૂર બના દે.”

૧૬૯૨ : સલામા ફરમાતે હૈ કે, મેરી કુરૈબસે મુલાકાત હુઇ તો, ઊન્હોંને કહા, હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા કે મેં એક રાત અપની ખાલા હજરત મયમૂનહ રદીઅલ્લાહો અન્હા કે વહાં રહા, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ તશરીફ લાઅે ફિર ઊપર જૈસી ગુજરી વૈસી હી હદીષ હૈ. રાવી ગુન્દરને બિના કીસી શક કે કહા કે, હુઝુરને ફરમાયા, “અય અલ્લાહ મુજે નૂર બના દે.”

૧૬૯૩ : હજરત અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “એક રાત મેં અપની ખાલા હજરત મયમૂનહ રદીઅલ્લાહો અન્હા કે વહાં થા, બાકી હદીષ ઊપર જૈસી હી હૈ. ઇસ રિવાયતમૈં હાથ મુંહ ધોનેકા ઝિકર નહીં, વૈસે યે ખાત હૈ કે, હુઝુર મશક કે પાસ આઅે ઊસકા મુંહ ખોલા, દરમ્યાની વુજુ ક્રિયા, ફિર બિસ્તર કે પાસ આકર લેટ ગયે. ફિર આપ દોબારા

ઊઠે, મશક કે પાસ આવ્યે, ઊસકા મુંહ ખોલા ફિર દોબારા વુઝુ ક્રિયા. ફિર ફરમાયા, “અય અલ્લાહ મુજે અઝીમ નૂર કરદે.” ઔર યે નહીં ફરમાયા, “મુજે નૂર કરદે.”

૧૬૯૪ : સલમા બિન કુહૈલ ફરમાતે હૈ કે, હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રહીઅલ્લાહો અન્હોને એક રાત હુઝુર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ ગુજરી. હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રહીઅલ્લાહો અન્હો ફરમાતે હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ ઊઠકર મશક કે પાસ ગયે ઔર ઊસસે પાની ખહાયા વુઝુ ક્રિયા ઔર ઊસમૈસે જ્યાદા પાની ખર્ચ નહીં ક્રિયા ઔર નાહી વઝુમૈં કોઈ કમી કી. ઊસ કે બાદ વૈસી હી હદીષ હૈ જૈસી ઊપર બયાન હુઈ હૈ.

ઔર ઇસ હદીષમૈં હૈ કે, ઊસ રાત રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ઊત્રીસ કલેમાત કે સાથ દુઆ કી. સલમા ફરમાતે હૈ કે, મુજે કરીબને વો કલેમાત ખતાબે યે મુજે (ઊસમૈસે બારહ યાદ રહે ઔર બાકી ભૂલ ગયા) રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “અય અલ્લાહ મેરે દિલમૈં નૂર કરદે, મેરી જબાનમૈં નૂર કરદે, મેરે કાનોમૈં નૂર કરદે, મેરી આંખોમૈં નૂર કરદે, મેરે ઊપર નૂર કરદે, મેરે નીચે નૂર કરદે, મેરે દાઅૈં નૂર કરદે, મેરે બાંચે નૂર કરદે, મેરે સામને નૂર કરદે, મેરે પીછે નૂર કરદે, ઔર મેરે અંદર નૂર કરદે ઔર મેરે લિયે અઝીમ નૂર કરદે.”

૧૬૯૫ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, એક રાત મૈં હજરત મયમૂનહ રહીઅલ્લાહો અન્હા કે ઘર રહા હુઝુર સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ ઊન કે પાસ યે, તા કી મૈં રાતકો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી નમાઝકો દેખ શકું.

હજરત ઇબ્ને અબ્બાસને ફરમાયા, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને રાતકો કુછ દેર અપની અહલ્યા કે સાથ ખાત ચીત કી ફિર સો ગયે.

ઊસ કે બાદ ઊપર જૈસી હી હદીષ બયાન હુઈ હૈ ઔર ઊસમૈં યે ભી હૈ કે, આપ ઊઠે આપને વુઝુ ક્રિયા ઔર મિસ્વાક કીયા.

૧૬૯૬ : અલી બિન અબ્દુલ્લાહ બિન અબ્બાસ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, એક બાર હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રહીઅલ્લાહો અન્હો રાતકો હુઝુર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે ઘર સો ગયે.

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ રાતકો બેદાર હુગ્યે આપને વુઝુ ક્રિયા ઔર મિસ્વાક ક્રિયા યહાં તક કે યે આયાત પઠ્ઠી, ‘ઇન્ના ફી ખલહિસ સમાવાતે વલ અરદે વખતિલા-ફિલ લયલે વનન્હાર વ આયાતીલ લી ઊલીલ અલબાબ.’ આપને યે આયાતકી ફિરઅત આબિર સૂરત તક કી ફિર ખંડે હોકર દો રકઅત નમાઝ પઠ્ઠી ઔર ઊસમૈં તવીલ કયામ, રુકુઅ ઔર સુજુદ ક્રિયા. ફિર આપ સો ગયે. યહાં તક કે ખરટિ લેને લગે.

ફિર આપને ઇસ તરહાં છહ રકઅત નમાઝ પઠ્ઠી (જુસમૈં) હરબાર મિસ્વાક કરતે, વુઝુ કરતે ઔર યે આયાત પઠ્ઠતે, ફિર આપને ત્રીન રકઅત વિતર પઠ્ઠી. ફિર મુઅઝઝીનને આકર આપકો નમાઝે ફજરકી ખબર દી. આપ નમાઝ પઠ્ઠાને ગયે. યહાં તક કે આપ યે

हुआ कर रहे थे. 'अथ अल्लाह मेरे दिलमें नूर करे, मेरी ज़बानमें नूर करे, मेरे कानोंमें नूर करे, मेरी आंखोंमें नूर करे, मेरे पीछे नूर करे, मेरे सामने नूर करे, मेरे ऊपर नूर करे, मेरे नीचे नूर करे, अथ अल्लाह मुझे नूर अता करे.'

१६६७ : हज़रत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, ओक रात में अपनी आला हज़रत मयभूतह रहीअल्लाहो अन्हो के पास रहा.

नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम रातको निखल पणहुने के लिये उठे. नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने मशक के पास गये और वुजु किया और नमाज़ पणहुने षडे हो गये. मैंने भी वैसे ही किया जैसे नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमको करते देखा था. मशकसे वुजु किया और आपकी जांघ ज़नीब षडा हो गया.

आपने मेरी पुस्त के पीछेसे हाथ पकडकर अपनी पुस्त के पीछेसे हांघ और षडा कर दिया.

रावीने पुछा, "क्या ये अमल नखलमें हुआ था ?"

हज़रत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, "हां.

१६६८ : हज़रत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मुझे हज़रत अब्बास रहीअल्लाहो अन्होने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के पास लेजा. ज़ब के आप मेरी आला मयभूतह के घर तशरीक़ इरमा थे (रहीअल्लाहो अन्हो) उस रातमें आप के पास रहा. आप रातको उठकर नमाज़ पणहुने लगे. मैं आपकी जांघ ज़नीब षडा हो गया. आपने मुझे पीछेसे पकडकर अपनी हांघ ज़नीब षडा कर दिया.

१६६९ : जैसे ही हदीष हज़रत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे ओक और भी मन्कुल है.

१७०० : हज़रत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम रातको तेरह रकअत नमाज़ पणहुते थे.

१७०१ : हज़रत अैद आलिह जुहुनी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने सोचा की आज रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी नमाज़ पणहुनेका मुशाहेदा करूं, आपने दो रकअत नमाज़ मुप्तसर सी पणही. फिर आपने दूसरी दो रकअत षहुत ही लम्बी उससे भी लम्बी पणही. फिर पहलेली नमाज़से कुछ कम दो रकअत पणही. फिर उससे मुप्तसर दो रकअतें पणही. फिर उससे मुप्तसर दो रकअतें पणही, फिर उससे मुप्तसर दो रकअतें पणही फिर वितर नमाज़ पणही. और ये तेरह रकअतें है.

१७०२ : ज़रत ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ ओक सहरमें जा रहा था, हम ओक घाट पर पहुँचे आपने इरमाया, "ज़ाबिर, क्या तुम पार नहीं गितरते ?

मैंने कहा, क्युं नहीं ?

हज़रत ज़ाबिर कहते है के, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम गितरे और मैं भी गितरा.

द्वि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम कजा-अे-हाजत के लिये गये और मैंने आप के लिये पुत्रुका पानी रखा. हजरत ज़ाबिरका कहना है के, आपने आकर पुत्रु किया और भंडे होकर नमाज पढ़ने लगे. यहां तक के आपने अेक कपडा पहना हुआ था. और उस के हाथे किनारेको बांध ज़ानीय और बांये किनारेको हांध तरफ़ डाला हुआ था. मैं आप के पीछे भडा हो गया. आपने मुझे मेरे कानसे पकडकर अपनी हांध ज़ानीय कर लिया.

१७०३ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हा रिवायत इरमाती है के, जब रातको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम नमाज के लिये भंडे होते तो मुप्तसर नमाजोंसे शुरुआत करते थे.

१७०४ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “जब तुममेंसे कोइ शफ़श रातको नमाज पढ़ने के लिये भडा हो तो वो मुप्तसर रकअतसे नमाज पढ़ना शुरु करे.”

१७०५ : हजरत एब्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम जब रातको नमाज पढ़ने के लिये भंडे होते तो इरमाने, अय अल्लाह तमाम तारीफ़े तेरे ही लीये हैं, तु ज़मीनो आसमानोका नूर है, और तेरे ही लीये इम्ह है, तुं ही आसमानों और ज़मीनोंको कायम करनेवाला है, तेरे लिये ही इम्ह है. तुं सअ्यां है, तेरा वादा सअ्या है, तेरा कौल सअ्या है, तुजसे मुलाक़त हक है, जन्नत हक है, जहन्नम हक है, और कयामत हक है, और अल्लाह मैं तेरी धताअत करता हुं, तुज पर धमान रभता हुं. तुज पर ही भरोसा करता हुं, तेरी ही तरफ़ रज़ा करता हुं, तेरी वजहसे जग करता हुं और तुज ही को हाकिम बनाता हुं.

उन कामोंको ज़ाबिर जे मैंने पहले किये और बादमें किये, और छुपकर किये और ज़ाहिरमें किये, तुंही मअ्युह है, तेरे सिवा कोइ धबाहत के लायक नहीं है.

१७०६ : ताउसने हजरत एब्ने अब्बासकी रिवायत धस तरहां रिवायत की है एब्ने जरीज और धमाम मालिककी रिवायत भी अैसी ही है, एब्ने जरीजने कयामकी जगह कय्यीम कहा, और वमा असर-रतुका लख़ कहा है.

हालां के अय्येनाहकी रिवायत, धमाम मालिक और जरीजकी रिवायत के ज़िलाफ़ है और उसमें कुछ अल्लख़ कम या ज़्यादा है.

१७०७ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीथ मन्दुल है.

१७०८ हजरत अबुहुरैरहमान (बिन अौक़ रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने उम्मुल मुअमेनीन हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे सवाल किया, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम रातको नमाज के लिये भंडे होते तो कीस तरहां नमाज शुरु करते थे.

हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमाया, “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही वसल्लम रातकी नमाज धस दुआसे शुरु करते, “अय अल्लाह ! ज़ुब्रील, मिकाएल

और इस्त्राकिल के रब, आसमानों और जमीनों के जालिक गैब और शहादत के आलिम, जब बन्दे आपसमें धिप्तिलाइ करते है तो तुं हीं उनका ईसला करनेवाला है.”

“अय अल्लाह ! हुककी जून बातोंमें धिप्तिलाइ हो गया है तुं उनमें मुजको राहे इस्तेकामत पर रब और तुं जूसे याहता है शिराते मुस्तकीमकी हिदायत अता इरमाता है.”
 १७०८ : इजरत अली धप्ने अली तालीब रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम नमाज पण्डने के लिये भडे होते तो इरमाते, “मैं अपना मुंह ठिस जातकी तरफ करता हुं जूसने आसमानों और जमीनोंकी ठीक ठीक बनाया. और मैं मुशेकिनमेंसे नहीं हुं. इरगाह मेरी नमाज और मेरी कुरबानी और मेरी जूनदगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये है, जूसका कोइ शरीक नहीं मुजे ठिसी बातका हुकम दिया गया है और मैं मुसलमानोंमेंसे हुं. अय अल्लाह तुं बादशाह है और तेरे सिवा कोइ इबाहत के लायक नहीं है.”

“तु मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हुं, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया, मैं अपने लगजीशोंका अंतराइ करता हुं, मेरे तमाम लगजीशोंको बप्श दे, क्युं के तेरे सिवा कोइ और लगजीशोंका बप्शनेवाला नहीं है. मुजे अक्छे अबलाककी हिदायत दे और तेरे सिवा कोइ अक्छे अबलाककी हिदायत नहीं दे सकता, मुजसे बुरे अबलाकको दूर करे और तेरे सिवा कोइ मुजसे बुरे अबलाकको दूर नहीं कर सकता. मैं तेरी धताअत के लिये दाजूर और इरमाबरदार हुं, हर और तेरे इस्ते-कुदरतमें है और कोइ बुराइ तेरी तरफ मन्सूब नहीं है, मैं तुजसे इस्तेअनानत करता हुं और तेरी पनाहमें आता हुं, तुं परकतवाला और बुलंद है मैं तुजसे मुआझी याहता हुं, और तेरी तरफ रजु करता हुं और आप इकुअममें ये इरमाते, अय अल्लाह मैं तेरी रजामन्दी के लिये जुका तुज पर इमान लाया और तेरी इरमा बरदारी की, मेरे कान, मेरी आंभे, मेरा मगज, मेरी हड्डीयां और मेरे पुठे सब तुजसे उरते है.”

जब इकुअसे भडे होते तो इरमाते, “अय अल्लाह ! हमारे रब तेरे लिये औसी इम्ह है जूससे तमाम आसमान और जमीन और जे उन के अंदर है सब लर जामे बदेके जूस कदर तुं याहे ठिसमें तेरी इम्ह लर जामे.”

और सनदहमें इरमाते, “अय अल्लाह मैंने तेरी रजामन्दी के लिये सजदह किया. तुज पर इमान लाया और तेरी इरमाबरदारी की. मेरा यहैरा ठिस जातकी सजदा कर रहा है जूसने ठिसको पयदा किया और ठिसकी सूत बनाध और ठिस के आंभो और कानोंको तराश कर बनाया. अल्लाह परकतवाला है और सभसे अक्छा बनाने वाला है.”

इर आभिरमें तशहदुह और सलाम के दरमियान इरमाते, “अय अल्लाह ! मेरे उन कामोंको बप्श दे जे मैंने पहिले किये और बादमें किये, जे मैंने छिपकर किये और जाहिरमें किये, और जे मैंने जयाहती की और उन कामों को बप्श दे जूनको तुं मुजसे जयादा जानता है, तुं हीं आगे और पीछे करनेवाला है, और तेरे सिवा कोइ इबाहतका हुकदार नहीं है.

१७१० : धसी सनदसे अेक और रिवायत आध है जूसमें है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम नमाज शुरू करते तो अल्लाहो अकबर कहेते इर इरमाते,

‘વજજહતો, વજહિયા’ ઔર ફરમાતે, ‘વ અના અવ્વલુલ મુસ્લેમીન’ ઔર જબ રુકુઅસે સર ઊઠાતે તો ફરમાતે ‘સમીઅલ્લાહુ લેમન હમીદહ, રબ્બના વ લકલ હમ્દ’ ફરમાતે, અલ્લાહને સૂરત બનાઈ ઔર અચ્છી સૂરત બનાઈ ઔર જબ સલામ ફેરતે તો ફરમાતે, અય અલ્લાહ મેરે ઊન કામોંકો બખ્શદે જો મૈને પહલે કીયે, ઊસ કે બાદ ઊપર જૈસી હી હદીષ રિવાયત કી ગઈ હૈ. ઔર તશહહુદ ઔર સલામ કે દરમ્યાન (કહે હુએ) કલેમાતકા ઝિક્ર નહીં કીયા હૈ.

બાબ ૨૫૨ :- તહજજુદમે લામ્બી કીરઅત પઠહનેકા ઇસ્તહબાબ.

૧૭૧૧ : હજરત હુઝૈફા રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, એક રાતકો મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી ઇકતેદામે નમાઝ પઠહી. આપને સૂર-એ-બકર પઠહના શરૂ કીયા. મૈને સોચા શાયદ આપ એકસો આયતે પઠહને કે બાદ રુકુઅ કરેંગે. લેકીન આપ મુસલસલ પઠહતે રહે ઔર આપને સૂર-એ-નિશા શરૂ કરદી. ફિર સૂર-એ-આલે ઇમરાન શરૂ કરદી. ઔર તરતીલ કે સાથ કીરઅત કરતે રહે.

જબ કોઈ ઔસી આયત પઠહતે જીસમે અલ્લાહકી તસ્બીહકા ઝિક્ર હોતા તો આપ અલ્લાહકી તસ્બીહ પઠહતે (સુબ્હાનઅલ્લાહ) કહેતે, ઔર જબ કોઈ ઔસી આયત પઠહતે જીસમે સવાલકા ઝિક્ર હોતા તો અલ્લાહ ત્યાલાસે સવાલ કરતે ઔર જબ કોઈ ઔસી આયત પઠહતે જીસમે અલ્લાહસે પનાહ માંગનેકા ઝિક્ર હોતા તો અલ્લાહસે પનાહ માંગતે, ફિર આપને રુકુઅ કીયા ઔર રુકુઅમે સુબ્હાન રબ્બીયલ અઝીમકી તસ્બીહ પઠહતે રહે. યહાં તક કે આપકા રુકુઅ કયામ કે જીતના (કરીબન) હો ગયા. ફિર આપને ‘સમેઅલ્લાહુ લેમન હમીદહ’ કહા ઔર ખડે હુએ, ઔર તકરીબન રુકુઅકે બરાબર કીયામ કીયા. ફિર આપ સજદેમે ગચે ઔર ‘સુબ્હાન રબ્બેયલ અઅલા’ પઠહતે રહે ઔર કીયામ કરીબ સજદા કીયા. જરીરકી રિવાયતમે હૈ કે, આપને ‘સમેઅલ્લાહુ-લેમન હમીદહ રબ્બના લકલ હમ્દ’ ફરમાયા થા.

૧૭૧૨ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઉદ રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, મૈને એક રાતકો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ એક રાત નમાઝ પઠહી. રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને બહુત હી લામ્બા કીયામ કીયા, યહાં તક કે મૈને એક બુરી ખાતકા ઇરાદા કર લીયા.

રાવીકા બયાન હૈ કે, ઊન્હોંને ઇબ્ને મસઉદસે પૂછા કીસ ચીજકા ઇરાદા આપને કર લીયા થા ?

ઇબ્ને મસઉદને ફરમાયા, “મૈને ઇરાદા કીયા થા કે હુઝુરકો કીયામમે ખડા રેહને દેકર મૈ ખુદ બૈઠ જાઊ.”

૧૭૧૩ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

आम २५३ :- तहज्जुहकी तरगीब चाहे कभ रकअतें हों.

१७१४ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के सामने अेक अैसे शअशका जिक् हुआ जे सुणहा तक सोता था.

आपने इरमाया, “उस शअश के कानमें शयतान पेशाब कर देता है.

१७१५ : हजरत अली धुने अभी तादीब रहीअल्लाहो त्याला अन्होसे रिवायत है के, अेक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम आप के और हजरत शतेभद रहीअल्लाहो अन्हो के पास तशरीफ़ लाये और इरमाया, “तुम लोग नमाज (इजर) क्युं नहीं पणहते ?”

हजरत अली इरमाते है मैंने जवाब दियाके, “हमारी ज्ञानें अल्लाह त्याला के हाथमें है, जभ वो हमें ठिठाना चाहता है तो ठिठा देता है.”

जभ मैंने ये कहा तो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम वहांसे वापस तशरीफ़ ले गये और यहां तक के आप अपनी जानु पर हाथ मार रहे थे और मैंने सुना आप इरमा रहे थे के, “धन्सान जहोत जगडालु है.”

१७१६ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जभ तुममेंसे कोछ शअश सो ज्ञाता है तो शयतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है और हर गिरह पर इंक देता है के, रात जहोत लम्बी है. जभ वो जेदार होकर अल्लाह त्यालाका जिक् करता है तो अेक गिरह भुल जाती है और जभ पुजु करता है तो दुसरी गिरह भुल जाती है. और जभ वो नमाज पणह लेता है तो तमाम गिरहें भुल जाती है. किरवो सुणहको हस्सास असास भुश भिजाज ठिठता है और नहीं तो जभासत के साथ सुस्तीसे ठिठता है.”

आम २५४ :- नक़ल नमाजका घरमें पणहना मुस्तहब होनेका अयान.

१७१७ : अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “अपनी कुछ नमाजें घरोंमें पणहा करो और घरोंको कअ्रस्तान ना बनाओ.”

१७१८ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “अपने घरोंमें नमाज पणहो और उनको कअ्रस्तान मत बनाओ.”

१७१९ : हजरत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जभ तुममेंसे कोछ शअश अपनी मस्जुदमें नमाज पणहले तो वो अपनी नमाजोंका कुछ हिस्सा अपने घरमें पणहने के लिये ली रज ले क्युं की अल्लाह त्याला उसकी नमाजोंकी वजहसे उस के घरमें अहेतरी पयदा करेगा.”

१७२० : हुजरत अबु मुसा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “जुस घरमें अल्लाहका जिंक किया जाये और जुस घरमें अल्लाहका जिंक ना किया जाये उसकी मिसाल जिन्दा और मुरदह की जैसी है.”

१७२१ : हुजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है की, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “अपने घरोंको कफ्रस्तान मत बनाओ, और शयतान उस घरसे लागता है जुस घरमें सू-अे-अकरहुकी तीलावत की जाती है.”

१७२२ : हुजरत जैद बिन साबित रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने जुरुर के पत्ते या अटाईका हुजरा बनाया. फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम उसपे नमाज पण्डने के लिये तशरीक लाये. सहाबाने आपकी धकतेदामें आकर नमाज पण्डना शुरू किया.

हुजरत जैद इरमाते है के, अेक दिन बहुत ज्यादा सहाबा आ गये और आप सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने तशरीक लानेमें देर कर दी. सहाबा बुलंद आवाजमें जाते करने लगे. और दरवाजे पर कंकरीयां ईकनी शरू करदी.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम तशरीक लाये यहां तक के आप अहोत गुरसेमें थे फिर आप सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “अगर तुम औसा ही करते रहे तो मेरा गुमान है के, ये नमाज तुम पर इर्ण कर दी जायेगी. तुम अपने घरोंमें नमाज पण्डां करो क्युं के इराईज के आद कीसी भी शअशदी अहेतरीन नमाज वो है जुसे वो अपने घरमें अदा करे.”

१७२३ : हुजरत जैद बिन साबित रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने मरजुहमें अटाईसे अेक हुजरा बना लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने कंध राते उसमें नमाज पण्डी यहां तक के, सहाबा जम्भ हो गये उस के आद वैसी ही हदीष मन्कुल है जैसी अपर गुजरी है. और इसमें ये धजा है “अगर ये नमाज तुम पर इर्ण कर दी जाती तो तुम उसे कायम ना रण सकते.”

आप रपप : हुंमेशगीसे अमल करनेकी इजीलत

१७२४ : हुजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के पास अेक अटाई थी रातको आप उसका हुजरा बनाकर उसमें नमाज पण्डते थे. सहाबा किराम भी आप के साथ नमाज पण्डने लगे. दिनमें आप वो अटाई बिछा लेते थे. अेक रात सहाबा अडी तादाहमें आ गये आपने इरमाया, “अय लोगो अपनी ताकत के मुताबिक अमल कियां करो. क्युं की अल्लाह त्वाला उस वक्त तक नहीं अकताता. जब तक तुम ना अकता जाओ. (धआहतका अजर देनेमें) और अल्लाह त्वाला के नजदीक पसंदीदा अमल वो है जो हुंमेशा किया जाये. ज्वाह वो अमल कम ही (क्युं ना) हो !!” और आले मुहुम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमका यही तरीका था के जब कोछ अमल करते तो उसे हुंमेशगीसे करते.

१७२५ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमसे सवाल किया गया के अल्लाह त्वालाकोकौन सा अमल ज्याहल पसंद है ?

आपने इरमाया, “जे हंमेशा किया ज़अे आहे कम ही अमल हो.

१७२६ : अल्लमासे रिवायत है के, मैंने ओम्मुल मुअमेनीन आअेशाह सिदीकह रहीअल्लाहो अन्होसे सवाल क्या, अय ओम्मुल मुअमेनीन, “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमका अमल कीस तरहांका होताथा? क्या आप कीसी अमल के लिये कुछ पास दिन तय कर लेते थे ?”

आपने इरमाया, “नहीं, आपका अमल हंमेशगी वाला होता था. तुममेंसे कौन धतनी ताकत रभता है ज़तनी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम रभते थे ?”

१७२७ : हजरत आअेशाह सिदीकह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “अल्लाह के नजदीक सभसे ज्यादा पसंदीदा अमल वो है ज़स पर ज्याहल हंमेशगी हो, ज्वाह वो अमल कम हो !”

रावीका भयान है के, हजरत आअेशाह सिदीकह रहीअल्लाहो अन्हो ज़स अमलको शइ करती तो ओसको लाज़ीम कर लेती.

१७२८ : हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम मस्जुदमें तशरीफ़ लाअे, यहां तक के मस्जुद के दो सूतुनों के दरभ्यान रस्सी तानी हुंथ थी.

आपने इरमाया, “ये क्या है ?”

सहाभाने इरमाया, “हजरत अयनभकी रस्सी है वो नमाज़ पणहती हैं, और ज़भ ओन पर थकान या सुस्ती तारी होती है तो ये रस्सी पकड लेती है.”

आपने इरमाया, “धस रस्सीको भोल हो, तुममेंसे हर शअश ओस वकत तक नमाज़ पण के ज़भ तक वो आसानीसे नमाज़ पणह शके. और ज़भ ओस पर थकान या सुस्ती तारी हो तो वो भैक ज़यां करे.”

१७२९ : अेक और सनहसे भी हजरत अनस रहीअल्लाहो अन्होकी ओपरवाली हदीष के जैसी ही हदीष मन्कुल है.

१७३० : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम ओन के पास तशरीफ़ इरमाथे ओस वकत हवल्लाह भिन्ते सुवैभ ओन के पाससे गुजरी.

हजरत आअेशाह इरमाती है के, मैंने हुजुरसे कहा, “ये हवल्लाह भिन्ते सुवैभ है लोग कहते है के, ये रात भर नहीं सोती.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “रात भर नहीं सोती !! धतना अमल कियों करो ज़तनां आसानीसे कर शको, भजुदा ! अल्लाह त्वाला ओस वकत तक नहीं ओकताअेगा ज़भ तक तुम ना ओकता ज़अो.”

१७३१ : हजरत आब्वेशह रहीअल्लाहो अन्हा इरमाती है के, (मेरे पास) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम तशरीफ लाये और उस वक्त मेरे पास अेक औरत भैठी हुध थी. आपने पुछा, “ये कौन है ?”

मैंने कहा, “ये औसी औरत है जे सोती नही और नमाज पणहती रहेती है. आपने इरमाया, “छतना अबल किया करो जे आसानीसे कर शको, भजुदा ! अल्लाह त्वाला उस वक्त तक नही उकतायेगा जब तक के तुम ना उकता जाओ.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमको हीनमें वही चीज पसंद थी जस पर हुंमेशगी की जाये. अबु उसामकी रिवायतमें है के, ‘वो औरत अनु असहसे थी.’

भाष :- २५६ नमाज, तिलावत या जिंक के हरभ्यान ओंधने के हुकुम के भयानमें.

१७३२ : हजरत आब्वेशह सिद्दीकह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब तुममेंसे कीसी शज्शको नमाजमें ओंध आये तो वो सो जाये, यहां तक के उसकी ओंध जाती रहे. क्युं के जब तुममेंसे कीसी शज्शको नमाज के दौरान ओंध आयेगी तो वो मुमकिन है के, अपने आप के लिये हुआ करनेकी भजाये जुहको भुरा भला कहेने लगे.”

१७३३ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब तुममेंसे कोछ शज्श रातको कुरआन पण के और उसकी जुआन पर कुरआन अटकने लगे और वो समज ना शके के वो क्या पणह रहा है तो लेट जाये.”

किताबुल इआधले कुरआन

कुरआन करीम और उस के मुताबिलकात के इआधलाका अयान.

भाष २५७ : :- कुरआन करीमको याद रफनेका हुकम.

१७३४ : हुजरत आबुशहद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने रातको मरजुहमें अेक शफशसे कुरआन करीम सुना. आपने इरमाया, “अल्लाह त्वाला इस शफश पर रहम इरमाये, उसने मुजे, इलां-इलां आयत याद दिला दी. जूसको मैं इलां-इलां सुरतमें छोड देता था.”

१७३५ : हुजरत आबुशहद रहीअल्लाहो अन्हो अयान करती है के, नबीये करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने मरजुहमें अेक शफशसे कुरआन सुना तो आपने इरमाया, “अल्लाह त्वाला इस पर रहम इरमाये इसने मुजे अेक आयत याद दिलादी जे मुजसे मुलाध ज़ चुकी थी.”

१७३६ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन अब्र रहीअल्लाहो त्वाला अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इशाद इरमाया, “कुरआन करीमको हिफ्ज करनेवालेकी मिसाल ओट जैसी है जूसका अेक पैर बंधा हुआ हो अगर उस के मालिकने उसका अयाल रफ्फा तो वो रहेगा वरना यला ज़अेगा.”

हुजरत अब्दुल्लाह बिन ओमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “कुरआन करीम हिफ्ज करनेवालेकी मिसाल ओटकी तरहां है, जूसका अेक पैर बंधा हुआ हो, अगर उस के मालिकने उसका अयाल रफ्फा तो वो रहेगा. वरना यला ज़अेगा.”

१७३७ : अेक और सनदसे हुजरत अब्दुल्लाह बिन ओमर रहीअल्लाहो अन्हो रिवायतमें ये इज्जा है, कुरआन करीम पण्डनेवाला अगर रात और दिनको उठकर पण्डता रहेता है तो कुरआन मजुह याद रहेता है, वरना भूल जाता है.

१७३८ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन मसओद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “तुममेंसे कोइ शफश ये कहै के मैं इलां-इलां आयत भूल गया अटके, कुरआन मजुहने इसे भूला दिया. कुरआन मजुहको अयालसे याद रफो क्युं के वो लोगों के सीनेसे अंधे हुअे ज़ानवरकी तरहां ज़्यादा भागने वाला है.”

१७३९ : शकीक इरमाते है के, हुजरत अब्दुल्लाह बिन मसओद रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया कुरआन मजुहको अयालसे याद रफो. क्युं के वो लोगों के सीनोंसे अंधे हुअे ज़ानवरकी बनीरफ्त ज़्यादा भागनेवाला है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “तुममेंसे कोइ शफश ये ना कहै के वो इलां आयत भूल गया अटके ये कहै के वो भूला दिया गया.”

१७४० : शकीक बिन सलमा इरमाते है के, मैंने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्होसे सुना ओन्होंने इरमाथा के मैंने रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमे सुना है आपने इरमाथा, “कीसी शफ़ा के लिये ये भुरी भात है के, वो ये कहै के मैंने इलां-इलां सूत लूला ही या इलां-इलां आयत लूला ही. अदेके युं कहै के वो लूला हिया गया.”

१७४१ : हजरत अबु मुसा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाथा, “कुरआन करीमकी याद रणो, इसम है ओस ज़ातकी ओस के इब्न-अे-इदरतमें मुहम्मद सललल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ज़ान है कुरआन मज्द रस्सीयां तुडानेवाले ओंटकी तरहां (हिलसे) ज़्यादा निकलने वाला है.”

भाब २५८ :- भुश धलहानी (भीडी आवाज़) के साथ कुरआन मज्द पणहनेका धस्तहूभाब.

१७४२ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाथा, “अल्लाह त्आला कीसी काम पर धस कदर अजर नहीं देता. ओतना नबी के भुश धलहानी के साथ कुरआन मज्द पणहने पर अजर अता इरमाता है.”

१७४३ : अेक और सनदसे भी औसी ही हदीष मन्कुल है.

१७४४ : हजरत अबु हुरैरह भयान करते है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाथा, “अल्लाह त्आला कीसी चीज पर धस कदर अजर नहीं अता इरमाता ओतना भुश धलहानी और अलं आवाज़से कुरआन मज्द पणहने पर अजर अता इरमाता है.”

१७४५ : अेक और सनदसे भी औसी ही हदीष मन्कुल है.

१७४६ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाथा, “अल्लाह त्आला कीसी चीज पर धतना अजर नहीं धनायत इरमाता ओतना नबीकी भुश धलहानी और अलं आवाज़से कुरआन मज्द पणहने पर अजर अता इरमाता है.”

१७४७ : अेक और सनदसे औसी ही हदीष मन्कुल है.

१७४८ : अब्दुल्लाह बिन भुरैदह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, : रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाथा, “हजरत अब्दुल्लाह बिन या हजरत अबु मुसा असअरीखे आले दाओदकी भुश आवाज़ीसे हिरसा मिला है.”

१७४९ : रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व सल्लमने अबु मुसासे इरमाथा, “अगर तुम भुजे डल रात देभते ज़भमें तुम्हारा कुरआन सुन रहा था, धसमें कोध शक नहीं के तुम्हें आले दाओदकी भुश आवाज़ीसे हिरसा मिला है.”

१७५० : हजरत अब्दुल्लाह बिन मुहदल रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इहे मक्का के साल रास्तेमें अपनी सवारी पर सू-अे-इतह तिलावत की और आप किरअत दौहराते रहे, मुआवियह बिन कर्रह कहेते है

के, अगर मुझे ये भुद्द सा नहोता के लोग मुझे घेर लेंगे तो मैं आपको आप सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमकी डिरअत सुनाता.

१७५१ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मुद्दल रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैंने इत्हे मक्का के दिन देखा के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लम अपनी ओटनी पर सूरे अत्ह पण्ड रहे थे. रावी कहते है के, हजरत एब्ने मुद्दल रहीअल्लाहो अन्होने कुरआन पण्डा और होहराया, मुआवियह बिन कर्रह इरमाते है के, अगर मुझे लोगोका भदसा ना होता तो मैं भी तुम्हे उसी तरहां पण्डकर सुनाता. उस तरहां हजरत एब्ने मुद्दल रहीअल्लाहो अन्होने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे रिवायत कर के सुनाया था.

१७५२ : अेक और सनदसे भी औरी ही रिवायत मन्कुल है.

आब रपह :- कुरआन मज्जद पण्डने पर सकीनतका नाजिल होना.

१७५३ : अराअ्य बिन आजिब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्श सूरे-अे-कह्क पण्ड रहा था और उस के पास अेक घोडा हो लम्बी रस्सीयोसे बंधा हुआ था. अयानक उस घोडेको अेक बादलने ढांप दिया, और वो बादल उस के धर्दे गिर्दे घूमने लगा, और आहिस्ता आहिस्ता उस के करीब होने लगा. और उसका घोडा लडकने लगा. सुण्डाको वो नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमकी भिदमतमें हाज्जर हुआ और उस वाकीअेका जिक् किया तो आप सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, "ये सकिना है जे कुरआन मज्जदकी अरकतसे नाजिल हुंछ है. उसकी वजहसे इत्मिनान हासील होता है. और उस के साथ इरीशते भी होते है."

१७५४ : हजरत अराब बिन आजिब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अेक शप्श सूरे-अे-कह्क पण्ड रहा था, और यहां तक के उस के घरमें अेक ज्ञानवर बंधा हुआ था. अयानक वो ज्ञानवर बुदकने लगा. उस शप्शने देखा की अेक बादलने उसे ढांप दिया है, उस शप्शने उस वाकिअेकी जिक् नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे किया. तो इरमाया, "अय शप्श ! पण्डते रहो ये सकीना है जे कुरआन मज्जदकी तिलावत के वक्त नाजिल होती है."

१७५५ : अेक और सनदसे भी औरी ही हदीष मन्कुल है.

१७५६ : हजरत अबु सधद भुदरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, वो अेक शप अापने अलीहानमें कुरआन मज्जद पण्ड रहे थे. अयानक अिनकी घोडी कुदने लगी, अन्होंने पण्डा तो वो इर कुदने लगी, अन्होंने इर पण्डा तो वो इर कुदने लगी, वो इरमाते है के, मुझे डर लगने लगा के कहीं ये घोडी याह्या (जे अिनका अय्या था)को कुयल ना दे. इसलिये मैं घोडी के पास जाकर अडा हो गया. तो क्या देअता हुं के अेक सायबान मेरे सर पर है. और उसमें अरागकी तरहां कुछ थीर्जे रोशन है. वो सायबान अपर चढने लगा, यहां तक के मेरी नजरोंसे ओजल हो गया.

सुल्हको मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी बिहमतमें हाजूर हुआ, और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! कल रात मैं अपने जलीयानमें कुरआन मज्जद पण्ड रहा था के अचानक मेरी घोड़ी बिहकने लगी.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “अय धप्ने भुदर ! पण्डते रहा करो.”

अन्होंने कहा, “मैं पण्डता रहा, वो फिर बिहकने लगी.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने फिर इरमाया, “अय धप्ने भुदर ! पण्डते रहा करो.”

अन्होंने कहा, “मैं पण्डता रहा, वो फिर कुदने लगी.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने फिर इरमाया, “अय धप्ने भुदर ! पण्डते रहो.”

अन्होंने कहा, “मैं वापस चला गया और याह्या (घोडेके) पास था. मुझे अतरा महेसूस हुआ (के कहीं ये याह्याको कुयल ना दे) मैंने देखा के सायभानकी तरहां कुछ खीज है जसमें कुछ खीज थिरागोंकी तरहां है, वो आसमानकी तरफ चढ रही है, यहां तक के मेरी नजरसे ओउल हो गध.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “ये इरिस्ते ये जो तुम्हारा कुरआन सुन रहे थे. अगर तुम सुल्ह तक पण्डते रहे तो तो दूसरे लोग भी अन्हें देष लेते. और ये अिनसे छूपे हुअे ना रहे शकते.”

१७५७ : अजरत अबु मुसा असअरी रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जो मुअमीन कुरआन करीम पण्डता है, अिसकी मिसाल तरंज डी तरहां है. जो भुशु पसंदीदा और जसका स्वाद भुशगवार है. और जो मुअमीन कुरआन करीम नहीं पण्डता अिसकी मिसाल अजुर के जैसी है जसमें भुशु तो नहीं है लेकीन आयका भीका है, और जो मुनाकिक कुरआन करीम पण्डता है अिसकी मिसाल रेहान के जैसी है जसकी भुशु अच्छी है लेकीन आयका कणवा है. और जो मुनाकिक कुरआन मज्जद नहीं पण्डता अिसकी मिसाल अन्जल (कलोनी) के इल के जैसी है जसमें भुशु भी नहीं और स्वाद कडवा है.”

१७५८ : अेक और सनदसे भी अैसी ही अदीष मन्कुल है.

भाष २६० :- हाकिमे कुरआनकी इजीलत.

१७५९ : अजरत आअेशद रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “जो शप्श कुरआन मज्जदमें माहिर हो, वो अिन इरीस्तों के साथ रहेता है जो मुअज्जज और भुजुर्ग है और जो लिअते है (नाम-अे आभाल या लौहे महुइअ पर लिअते है वो इरीस्ते) और जो शप्शको कुरआन मज्जद पण्डनेमें दुस्वारी लोती है और अटक अटक कर पण्डता है अिसे दो अजर मिलते है.”

૧૭૬૦ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

બાબ ૨૬૧ :- અફઝલકા મફઝૂલ કે સામને કુરઆન મજીદ પઠહનેકા બયાન.

૧૭૬૧ : હજરત અનસ બિન માલિકસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને હજરત ઊબય બિન કઅબ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે ફરમાયકે, અલ્લાહ ત્યાલાને મુજે હુકમ દિયા હૈ કે, “મૈં તુમહારે સામને કુરઆન મજીદ પઠું.”

ઊન્હોને અર્ઝ કિયા, “કયા અલ્લાહ ત્યાલાને આપસે મેરા નામ લિયા થા ?”

આપને ફરમાયા, “હાં !અલ્લાહ ત્યાલાને મુજે તુમહારા નામ લિયા થા. રાવીકા બયાન હૈ કે, યે સુનકર હજરત ઊબય બિન કઅબ રદીઅલ્લાહો અન્હો રોને લગે.”

૧૭૬૨ : હજરત અનસ બિન માલિકસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહસલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને હજરત ઊબય બિન કઅબ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે ફરમાયા, “અલ્લાહ ત્યાલાને મુજે હુકમ દિયા હૈ કે, મૈં તુમહારે સામને લમ ચકુનીલ્લઝીના કફર પઠું. હજરત ઊબય બિન કઅબ રદીઅલ્લાહો અન્હોને અર્ઝ કિયા, કયા અલ્લાહ ત્યાલાને આપસે મેરા નામ લિયા હૈ ?

આપને ફરમાયા, “હાં.

હજરત ઊબય બિન કઅબ રદીઅલ્લાહો અન્હો (યે સુનકર) રોને લગે.

૧૭૬૩ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી રિવાયત મન્કુલ હૈ.

બાબ ૨૬૨ :- કુરઆન મજીદ સુનનેકી ફઝીલત ઔર કુરઆન મજીદ સુનતે વક્ત રોના.

૧૭૬૪ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને મુજસે ફરમાયા, “મેરે સામને કુરઆન મજીદ પઠહો.

ઇબને મસઊદને ફરમાયા, “યા રસૂલુલ્લાહ !મૈં આપ કે સામને કેસે કુરઆન મજીદ પઠું જબ કે કુરઆન મજીદ આપ પર નાઝિલ હુઆ હૈ ?”

આપને ફરમાયા, “મૈં ચાહતા હું કી કીસી ઔરસે કુરઆન મજીદ સુનું.”

મૈંને સૂર-એ-નીશા પઠહની શરૂ કી યહાં તક કે મૈં ઇસ આયત પર પહોંચા. ‘ફકયશ ઇઝા જીઅના..... હા ઊલાએ-શહીદા.’

તરજુમા :- ઊસ વક્ત કયા હાલ હોગા જબ હમ હર ઊમ્મતસે એક ગવાહ લાઅંગે, ઔર આપકો ઊન તમામ પર ગવાહ બના લાઅંગે.

મૈંને ખુદ સર ઊઠાકર દેખા યા કિસીને મુજે ટહુકા દિયા તબ મૈંને સર ઊઠા કર દેખા તો આપકી આંખોસે આંસુ જારી થે.

૧૭૬૫ : એક ઔર સનદસે ભી યે રિવાયત મૌજુદ હૈ ઔર ઇસમં યે ઇજાફા હૈ કે, જબ આપને મુજસે કુરઆન મજીદ પઠહને કે લિયે ફરમાયા ઊસ વક્ત આપ મિમ્બર પર થે.

१७६६ : हजरत अब्राहिमसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्होसे इरमाया, “मुझे कुरआन मज्जद सुनाओ.”

मैंने अर्ज किया, “मैं आपको कैसे कुरआन मज्जद सुनाऊँ जब के कुरआन मज्जद आप पर नाज़िल हुआ है ?”

आपने इरमाया, “मैं इस बातको पसंद करता हूँ के मैं कीसी औरसे कुरआन मज्जद सुनूँ.”

मैंने आपको सू-अ-निशाकी इफ्तदाइ आयात सुनाएँ जब मैं इस आयात पर पहुँचा, “इकयफ़ा..... शहीदा.”

तरजूमा :- जिस वक़्त क्या हाल लोग जब हम हर इम्मतसे अेक गवाह लायेंगे और आपको इन तमाम पर गवाह बनायेंगे ?

तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम रोने लगे.

१७६७ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “मैं जिस वक़्त गवाह था जब तक मैं इन के इरम्यान रहा.”

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, “मैं हमसमें था. मुझे लोगोंने कहा हमें कुरआन मज्जद सुनाइये. मैंने उनहें सू-अ-युसुफ़ सुनाएँ. उनमेंसे अेक शफ़ाने कहा, सू-अ-युसुफ़ इस तरहां नाज़िल नहीं हुआ. मैंने कहा, तुम पर अफ़सोस होता है, मैंने ये सूत (धसी तरहां पण्डकर) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमको सुनाएँ थी.”

जिसने कहा, “यलो हीक है.”

जिस वक़्त मैं उससे बात कर रहा था, मैंने अचानक उस के मुंहसे शराबकी बढ्नु महेसूस की. मैंने कहा, “तु शराब पीता है और अल्लाहकी डिताबकी तकज़ीब करता है तुझे यहाँसे जाने नहीं दूंगा. यहाँ तक के तुज पर शराब पीने के बढ्ले हफ़ लगाहुं.” फिर मैंने उसे कोडे लगाये.

१७६८ : अेक और सनदसे भी ये इदीष मन्डुल है.

बाब २६३ :- नमाज़में कुरआन मज्जद पण्डने और उसको शीषनेकी इज़ीलत.

१७६९ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “क्या तुममेंसे कीसी शफ़ाको ये पसंद है के, जब वो घर जाये तो वहाँ तीन हाभेला ओटनीयां मौजूद हो, जो निहायत बडी और इरबा हो ?”

हमने अर्ज किया, “यकीनन !”

आपने इरमाया, “जिन तीन आयतोंको तुममेंसे कोइ शफ़ा नमाज़में पण्डता है वो तीन आयतें, बडी और इरबा ओटनीयांसे बहेतर है.”

१७७० : हजरत उकबल बिन आमीर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम तशरीक लाये (उस वक्त) जब के हम अबुतरे पर (बैठे) थे.

आपने इरमाया, “तुममेंसे कीसीको ये पसंद है के, वो भतभान (भदीना शहुरकी पथरीली जगह) या अकीक (जन्नर) जग्ये और वहांसे जगैर कीसी गुनाह और कत्ल-रहमी के भंडे भंडे कोहान वाली छिंटनीयां ले आये ?”

हमने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! हम सबको ये बात पसंद है.”

आपने इरमाया, “तो फिर तुममेंसे कोछ शप्श सुण्डा मश्जुदमे क्युं नहीं जाता ता के कुरआन मश्जुदकी हो आयतें भुद शिभे या किसीकी शिभाये ?”

और ये हो आयते (शिभना या शिभाना) उन हो छिंटनीयोंसे अहेतर है, और तीन (आयतें) तीन (छिंटनीयों)से अहेतर है, और चार, चारसे, और यहां तकके, आयतोंकी ताअदाद छिंटनीयोंकी ताअदादसे अहेतर है. (याहे छुतनी ज्यादा हो)

भाष २६४ :- कुरआन मश्जुद और सुरअ-अकरह पण्डनेकी इमीलत.

१७७१ : हजरत अबु उमामा आहिली रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “कुरआन शरीक पण्डां करो क्युं के वो आपने पण्डनेवालौकी कयामत के दिन शक्षयत करेगा. और हो रोशन सूरतोंको पण्डां करो. सूर-अ-अकरह और सूर-अ-आले धमरान क्युं की, वो कयामत के दिन धस तरहां आअंगी छुस तरहां, हो आहल हों या, हो साअेभान हों, या हो उडते हुअे परीहोकी कतारे हों और वो अपने पण्डनेवालौकी वकालत करेगी. सूरअे अकर पण्डां करो, उसका पण्डना अरकत है और ना पण्डना असरत है, जहुर उस के असूलकी धस्तेतायत नहीं रहते.

१७७२ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१७७३ : नवास बिन सुलैमान कलाभी रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “कयामत के दिन कुरआन मश्जुद और उस पर अमल करनेवालौको लाया जायेगा. उन के आगे सूर-अ-अकर और सुर-अे आले धमरान होंगी.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने धन सूरतों के लिखे तीन मिसालें अयान इरमाध, छुनकी में आअतक नहीं लूला.”

इरमाया, “वो अैसी है जैसे हो आहल हों, या हो श्याह साअेभान हों, छुन के दरम्यान रोशनी हो या सक्ष आंधे हुअे हो परीहोकी कतारें हों, वोह अपने पण्डने वालौकी वकालत करेगी.”

कयामत के दिन अपने पण्डनेवालौकी शक्षयत करेगा. और हो रोशन सूरतोंको पण्डां करो, सूर-अ-अकर और सूर-अ-आले धमरान, क्युं के वो कयामत के दिन धस तरहां आअंगी छुस तरहां, हो आहल हों या हो साअेभान हों, या हो उडते हुअे परीहोकी कतारे

हो, और वोह अपने पण्डनेवालेकी वकालत करेगी. सू-अ-अकर पण्डां करो जिसका पण्डना भरकत है और ना पण्डना इसरत है. जद्दुगर धस के इसूलकी धस्नेताअत नही रभते.

अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

नवास बिन सयान रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया,

बाब २६५ :- सू-अ-अतेहा और सू-अ-अकरहकी आभरी आयतकी इजीलत.

१७७४ : हजरत धने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हजरत ज़ुब्रील अतयहिस सलाम नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लम के पास अैके थे के अयानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने अेक आवाज सुनी, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने सर उपर उठाया.हजरत ज़ुब्रील अल्यहिससलामने कहा, "थे आसमानका अेक दरवाजा है, जिसको सिर्फ आज भोला गया है, आजसे पहले कभी नही भोला गया, फिर जिससे अेक इरीस्ता नाजिल हुआ."

हजरत ज़ुब्रील अल्यहिससलामने इरमाया, "थे इरीस्ता जे आज नाजिल हुआ है ये आजसे पहले कभी नही नाजिल हुआ."

जिस इरीस्तेने सलाम किया, और कहा "आपको जिन दो नुरोंकी बशारत हो जे आपको दिये गये अेक सू-अ-अतेहा और दूसरा सू-अ-अकरहका आभरी हिससा आप जिनमेंसे जे दुइकी पण्डेगे आपको जिसका मुस्दाक मिल जायेगा."

१७७५ : अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बयान करते है के, "मैं जयतुल्लाह के करीब हजरत अबु मसूद रहीअल्लाहो त्वाला अन्होसे मिला, और मैंने कहा के, सू-अ-अकरहकी दो आयतोंकी इजीलतमें आपसे रिवायत करदह अेक हदीष सुनी है."

जिन्होंने इरमाया, "हां.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, "जे शप्श रातको सू-अ-अकरहकी आभरी दो आयतें पण्ड लेगा. वो जिको काही होंगी." (याने ये आयतें नागहानी मशाअेब, शयतानकी इत्ना अंगेजीसे बयाअेगी)

१७७६ : अेक और सनदसे भी अैसी ही अेक हदीष मन्कुल है.

१७७७ : हजरत अबु मसूद अन्सारी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, "जे शप्श सू-अ-अकरहकी आभरी दो आयतें रातमें पण्डले, वो जिको काही होंगी." अब्दुर्रहमान (जे रावी है हदीषके) इरमाते है के, "मैं अेक बार हजरत अबु मसूद रहीअल्लाहो अन्होको मिला जे के वो जयतुल्लाहका तवाक कर रहे थे, मैंने जिनसे (धस हदीष के मुताअलतीक) दरयाइत किया तो जिन्होंने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमसे रिवायत कर के यही हदीष बयान की."

१७७८ : अेक और सनदसे भी औरी ही हदीष हजरत अबु मरुअि रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत हुं है.

१७७९ : अबु मरुअि रहीअल्लाहो अन्होसे औरी ही अेक और हदीष मन्कुल है.

भाष २६६ :- सू-अे-कुरु और आयतल कुसीकी इजीलत.

१७८० : हजरत अबु दरहा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सललमने इरमाया, “ओ शअश सू-अे-कहइकी पहली दस आयतें याद करलेगा वो इज्जलसे महेकुं रहेगा.”

१७८१ : अेक और सनदसे मन्कुल हदीषमें षोअभासे रिवायत है के, ‘सू-अे-कहइकी आभरी दस आयते.

और हम्माभने इरमायाके, पहली दस आयतें औरी की हिसाभने कहा है.’

१७८२ : हजरत ओमै भिन काअभ रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सललमने इरमाया, “अय अबुल मन्जर ! क्या तुम जानतेहो के तुम्हारे नजदीक किताबुल्लाहकी सभसे अजीम आयत कौनसी है ?”

मैने अर्ज किया, “अल्लाह और ओस के रसूल ही जानते है.”

आपने इरमाया, “क्या तुम्हारे नजदीक किताबुल्लाहकी सभसे अजीम आयत कौनसी है ?”

मैने कहा, “अल्लाहो ला-धलाहा धला होवल हय्युल कय्युम.”

आपने मेरे सीने पर हाथ मार कर कहा, “अय अबुल मन्जर ! तुम्हें ये धलम मुभारक हो.”

भाष २६७ :- सू-अे-कुलहो वल्लाहो अहइकी इजीलत.

१७८३ : हजरत अबु दरहा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सललमने इरमाया, “क्या तुममेंसे कोइ शअस हर रात अेक तिहाइ कुरआन नहीं पणह सकता ?”

सहाभाने अर्ज किया, “तिहाइ कुरआन मणइ कीस तरहां पणहेगा ?”

आपने इरमाया, “कुलहोवल्लाहो अहइ, तिहाइ कुरआन मणइ के भराभर है.”

१७८४ : हजरत कताहइ रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व सललमने इरमाया, “अल्लाह त्आलाने कुरआन मणइ के तीन हिससे किये है, और कुल होवल्लाहो अहइ ओनमेंसे अेक हिससा है.”

१७८५ : हजरत अबु हुरैरइ रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सललल्लाहो अललयहे व आलेही व सललमने इरमाया, “तुम सभ जम्अ हो जअे ता के मै तुम्हारे सामने अेक तिहाइ कुरआन मणइ पहुंच.”

तो ओन्हें जम्अ होना था वो जम्अ हो गअे, इर नभीअे करीम भाहर तशरीफ लाअे, (सललल्लाहो अललयहे व सललम) और आपने कुलहोवल्लाहो अहइ पणही और

अंदर तशरीक ले गये, हुम अेक दूसरेसे कहेने लगे, शायद आसमानसे कोछ ञपर आ गछ है ञस वञहसे आप अंदर तशरीक ले गये.

द्वर नबीअे करीम ञाहर तशरीक लाअे, सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लम और आपने इरमाया, “मैने तुमसे कहा था के मैं तुम पर तिहाछ कुरआन पणहुंगा, सुनो ! ये सूत तिहाछ कुरआन के ञराञर है.”

१७८६ : हुजरत अबु हुरैरह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व आलेही व सल्लम हुमारे पास तशरीक लाअे, और आपने इरमाया “मैं तुमहारे सामने अेक तिहाछ कुरआन मञ्जद पणहुंगा, और आपने कुलहोवल्लाहो अहद पणही.”

१७८७ : हुजरत आअेशह रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे वसलमने अेक शअशको अेक लशकरका अमीर ञनाकर लेञा वो अपने साथीयोंकी इमामत करते थे और हर सूत के ञाह कुलहोवल्लाहकी सूत पणहते थे. ञव लशकर वापर आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमसे इसका ञिक किया.

आपने इरमाया, “ञस शअशसे पुछो, वो अैसा क्युं करता था ?”

ञव ञनसे पूछा गया तो, ञन्होने कहा, अूंकी इस सूतमें, रहमानकी शिक्त है इस लिये मैं इसे पणहनेसे मुहुअत करता हुं. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “ञससे कहे हो के अल्लाह त्वाला ली ञससे मुहुअत करता है.”

ञाव २६८ : - मुअव्वअतैन (सूरअे-इलक और सूअे-नास) पणहनेकी इअीलत.

१७८८ : हुजरत ञकअह ञिन आभिर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “कया तुमहे नहीं मालुम के आजरत अैसी आयत नाअील हुछ है ञैसी कभी नहीं देअी गछ ! कुल आञञो ञे रअमील इलक और कुल आञञो ञे रअमीननास.”

१७८९ हुजरत ञकअह ञिन आभिर रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “आञ मुञ पर अैसी आयत नाअिल हुछ है के, अैसी आयत कभी नहीं देअी गछ.

कुल आञञो ञे रअमीन-नास, कुल आञञो ञे रअमील इलक.”

१७९० : : अेक और सनदसे ली अैसी ही हदीअ मन्कुल है.

ञाव २६९ :- कुरआन मञ्जद पर अमल करनेवाले और ञसकी तालीम देनेवालेकी इअीलत

१७९१ : हुजरत अब्दुल्लाह ञिन अअ रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अललयहे व सल्लमने इरमाया, “हो आहमीयों के सिवा और किसी पर रशक नहीं करना आहिये, अेक वो शअश ञसे अल्लाह त्वालाने कुरआन मञ्जद अता किया और वो रात और दिन ञसकी तिलावत करता हो. दूसरे वो शअस ञसको अल्लाह त्वालाने माल अता इरमाया हो और वो रात और दिन ञस मालको ञर्य करता हो.”

१७८२ : हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “दो आदमीयो के सिवा और किसी पर रश्क करना नहीं चाहिये, अेक वो शप्श जसे अल्लाह त्वालाने किताब (कुरआन मज्दका धलम) अता किया और वो शप्श रात दिन उसकी तिलावत करता रहेता हो. और अेक वो शप्श जसे अल्लाह त्वालाने माल दिया हो और वो शप्श रात दिन उस मालसे सद्का करता रहेता हो.”

१७८३ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मरुउद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, “दो आदमीयो के सिवाय और कीसी पर रश्क नहीं करना चाहिये, अेक वो शप्श जसे अल्लाहने माल अता इरमाया और उसे राहे भुदामें माल भर्थ करनेकी तौफिक अता इरमाय, दूसरा वो शप्श जसे अल्लाह त्वालाने धलम (कुरआनका) अता किया और वो उस के मुताबिक ईसले करता है और लोगोको तालीम देता है.”

१७८४ : आमीर बिन वासेलहसे रिवायत है के, नाईअ बिन अब्दुल हारीष ने हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्होसे उरफानमें मुलाकातकी हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्होने उन्हें मक्काका हाकिम मुकरर करनेका हुकुम दिया हुआ था. आपने पूछा, “आपने कीसीको मक्काका हाकिम बनाया हुआ है ?”

जवाब दिया, “धब्ने अबज्जीको.”

पुछा, “धब्ने अबज्जी कौन है ?”

जवाब दिया, “हमारे गुलामोंमेंसे अेक गुलाम है.”

इरमाया, “तुमने गुलामको उन पर हाकिम बना दिया ?”

उन्होंने कहा, “वो कुरआन मज्दका कारी है और इराधजका धलम रभता है.”

हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “सुनो तुम्हारे नबीने क्या इरमाया है, अल्लाह त्वाला धस कुरआन मज्दसे कुछ लोगोको धज्जत देता है, और कुछ लोगोको जिल्लतमें मुज्तिला कर देता है.”

१७८५ : अेक और सनदसे भी औसी हदीष मन्कुल है.

बाब २७० :- कुरआन मज्द के सात हुक्मों पर नाजिल होनेका मतलब (लुगात के सात तरिके)

१७८६ : हजरत उमर बिन अत्ताब रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, अेक दिन मैंने हकीम बिन हम्माको देखा के वो सूर-अे-इरकानको उन अल्लफ़ा के साथ नहीं पणहते थे उन अल्लफ़ा के साथ मैं पणहता हुं, और उन अल्लफ़ा के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने मुजे तालीमकी थी. अत करीब के मैं उनको (गिरइत करनेमें) जल्दी करता, लेकीन मैंने उनको नमाजसे इरीग होने दिया, फिर मैं उनको आदरसे पडडकर भियता हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी जिदमतमें ले आया.

मैंने अर्ज किया, “या रसूलुल्लाह ! मैंने इनको सूर-अ-इरकान गिन अल्लाह के साथ पण्डने सुना है जो अल्लाह के साथ पण्डनेकी आपने मुझे तालीम नहीं दी है.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “घसको छोड़ दो ?”

किर गिनसे इरमाया, “आप पण्डो.”

गिनहोंने गिरी तरहां वो सूरत पण्डी जोस तरहां मैं गिनसे सुन चुका था.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “ये सूरत घसी तरहां नाजिल हुं है.”

किर मुजसे इरमाया, “पण्डो. मैंने वो सूरत पण्डी.”

आपने इरमाया, “घसी तरहां (ये सूरत) नाजिल हुं है.”

किर आपने इरमाया, “ये कुरआन सात हुं पर नाजिल हुं ग्या है जोस तरहां तुमहें आसान लगे पण्डो.”

१७८७ : इजरत गभर धंने भत्ताभ रहीअल्लाहो अन्हो इरमाते है के, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी गन्हीमें हुकीम गिन हुमाभको सूरअे इरकान घस तरहां पण्डने हुं सुना...

घस के भादकी भाकी हुदीष गभर वाली हुदीष के गैसी ही है घसमें ये घज्ज है के, 'अन करीभ के मैं गिसको हालते नभाजमें ही घसीटत हुं ग्या लाता लेकीन मैंने गिस के सलाम इरने तक सप्र किया.'

१७८८ : अक और सनदसे ली अैसी ही अक हुदीष मन्कुल है.

१७८९ : इजरत धंने अब्बास रहीअल्लाहो अन्होसे रियायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “इजरत जोभ्रील अल्लयहिससलामने मुजे अक हुं पर कुरआन मण्डी तालीम दी, (हुं-लुगात) मैंने गिनहें ग्याह हुं के लिये कडा, वो ग्यद (लुगात पर कुरआन) करते रहे, यहां तक के सात हुं तक, कुरआन मण्डी तिलावत हो गध.”

धंने सिलाभका कौल है के, मुजे मालुम हुं है के, घन सात हुंका माअना वाहद होता है, और घनमें इराम और हलाल के तिलाजसे कोध धंनेलाइ नहीं होता.

१८०० : अक और सनदसे ली अैसी ही रियायत मन्कुल है.

१८०१ : इजरत गभय गिन कअभ रहीअल्लाहो अन्होसे रियायत है के, “मैं मरुहमें था, अक शप्श आकर नभाज पण्डने लगा, और नभाजमें कुरआन मण्डी अैसी किरअतकी जोसकी मुजे गानकारी नहीं थी, किर अक दूसरा शप्श आया गिसने अक और तरहसे कुरआन मण्डी पण्डना शइ कर दिया. गभ हुम नभाजसे शरीग हो गये तो हुम सभ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी भिदमतमें हाजीर हुं.”

मैंने अर्ज किया, “घस शप्शने घस तरहां कुरआन मण्डी पण्डां, जोसकी मुजे गानकारी नहीं थी. और दूसरा शप्श आया तो गिसने अक और तरीकेसे किरअत की.”

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने उन दोनोंको पणहनेका हुकम दिया, उनदोनों पणहकर सुनाया, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने दोनोंको सही करार दिया. जिससे मेरे दिलमें (आप के लिये) तकज़ीब पैदा हुई जो जमाना-अ-जालिलिय्यतमें नहीं थी. जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने मेरा ये हाल देखा तो, मेरे सीने पर हाथ मारा जिससे मैं पसीना पसीना हो गया. और मुझ पर ओंके धलाहीकी औसी कैफ़ियत तारी हो गई जैसे के मैं अल्लाह त्वालाको देण रहा हूँ.

फ़िर आपने मुझसे इरमाया, “अय उभय ! मुझे पहले इरमाया गया था के, मैं अके हुज़्र पर कुरआन मज्जदकी डीरअत करुं. मैंने अल्लाह त्वालासे अरज की मेरी उम्मत पर आसानी इरमा, फ़िर मुझे दो हुज़्रों पर पणहनेका हुकम दिया गया. फ़िर मैंने फ़िरसे अरज किया, मेरी उम्मत पर आसानी इरमा, फ़िर मुझे तीसरी बार सात हुज़्रों पर पणहनेका हुकम हुआ और इरमाया, “तुमने ज़तनी बार उम्मत पर आसानीकी दुआ की है उतनी बार के एवज़ तुम हमसे अके दुआ मांग लो.”

मैंने अर्ज किया, “अय अल्लाह मेरी उम्मतकी मग़्दरत इरमा, अय अल्लाह मेरी उम्मतकी मग़्दरत इरमा. और तीसरी दुआ मैंने उस दिन के लिये महुज़्ज करली जिस दिन सारी मज्जुद हत्ताके, हज़रत एब्राहिम अल्यहिससलातो वरसलाम भी मेरी तरफ़ मुतवज्जहेह होंगे.”

१८०२ : हज़रत उभय बिन कय्यब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, “वो मस्जिदे हुराममें ओंके थे. के अके शफ़्शने आकर कुरआन मज्जद पणहा.... ” जाकी हदीष वैसी ही है जैसी उपर गुजरी.

१८०३ : हज़रत उभय बिन कय्यब रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम, अपनी गिफ़ार के तालाब पर तशरीफ़ इरमा थे, आप के पास हज़रत ज़ब्रील अल्यहिससलाम तशरीफ़ लाये, और इरमाया, “अल्लाहत्वालाने आपको हुकम दिया है के, आप अपनी उम्मतको अके हुज़्र पर कुरआन मज्जद पणहाय्ये.”

आपने इरमाया, “मैं अल्लाह त्वालासे अइव और मग़्दरतका सवाल करुंगा, और ये के मेरी उम्मत धसकी ताकत नहीं रहेगी.”

हज़रत ज़ब्रील दोबारा आप के पास आये और कहा की “अल्लाह त्वाला इरमाता है के, आप अपनी उम्मतको दो हुज़्रों पर कुरआन पणहाय्ये.”

आपने इरमाया, “मैं अल्लाह पर अइव और मग़्दरतका सवाल करुंगा, मेरी उम्मत धसकी ताकत नहीं रहेगी.”

हज़रत ज़ब्रील अल्यहिससलाम आप के पास तीसरी बार आये और कहाके, “अल्लाह त्वाला इरमाता है के, आप अपनी उम्मतको तीन हुज़्रों पर कुरआन मज्जद पणहाय्ये.”

आपने इरमाया, “मैं अल्लाहसे अइव और मग़्दरतका सवाल करुंगा और ये के मेरी उम्मत धसकी ताकत नहीं रहेगी.”

ફિર જીબ્રીલ અલયહિસસલામ આપ કે પાસ ચૌથી બાર આવ્યે ઔર કહા કે અલ્લાહ ત્યાલા ફરમાતા હૈ કે, “આપ અપની ઊમ્મતકો સાત હુરુફ પર કુરઆન મજીદ પઠાવ્યે, વો જીસ હુરુફ (લુગાત)મેં ભી કુરઆન મજીદ પઠહેગા સહીહ હોગા.”

૧૮૦૪ : ઊબૈદુલ્લાહ બિન મુઆઝસે રિવાયત સનદસે એક ઔર રિવાયત મન્કુલ હૈ.

બાબ ૨૭૧ :- કુરઆન મજીદકો તરતીલ કે સાથ પઠહેને ઔર એક રકઝતમેં એકસે જ્યાદા સૂરતોંકો પઠહેનેકી ઇજાઝત.

૧૮૦૫ : અબુ વાઇલ ફરમાતે હૈ કે, નુહૈક બીન સિનાન નામકા એક શખ્શ હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હોકી ખિદમતમેં હાજીર હુઆ ઔર કહા, યા અબુ અબુર્હમાન આપ લફઝકો અલીફ કે સાથ પઠહતે હો યા યા.. કે સાથ ? ‘યાને મન મા ગયરે આસેનીન’ યા ‘મન મા ગયરે યાસેનીન’

હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હોને જવાબ દિયા, “ઇસ લફઝ કે સિવાય કુરઆન મજીદ કે બાકી સારે અલ્ફઝકી તુમને તહકીક કરલી હૈ ?”

ઊસને કહા, “મેં મુફરસલકો એક આયતમેં પઠહતા હું.”

હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “તુમ ઇસ તરહાં જલ્દી જલ્દી પઠહતે હો જીસ તરહાં શેર પઠ કે જાતે હૈ, ખેશક કુછ લોગ કુરઆન પઠહતે હૈ ઔર કુરઆન ઊન કે ગલે કે નીચે નહીં ઊતરતા લેકીન કુરઆન મજીદ જબ જહેન-નશીન ઔર રાશિયા હો જાતા હૈ તો ફાયદા પહોંચાતા હૈ, નમાઝ કે અરકાનમેં જ્યાદા ફઝીલત રુકુઅ ઔર સુબુદકી હૈ ઔર મેં ઔસી બાહમ મુતમાસીલ સૂરતોંકો જાનતા હું, જીનમેસે એક રકઝતમેં દો દો સૂરતેં મિલાકર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ પઠહતે થે.”

ફિર હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હો ખડે હો ગયે ઔર અલ્કમા ઊન કે પીછે ગયે ફિર બાહર નિકલે ઔર કહા, “મુજે ઊન્હોંને ઇસકી ખબર દી.”

૧૮૦૬ : અબુ વાઇલસે રિવાયત હૈ કે, નુહૈક બિન સિનાન નામી એક શખ્શ હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હો કે પાસ આયા.

ઊસ કે બાદકી રિવાયત ઊપર જૈસી હી હૈ ઇસમેં યે ઇજાઝા હૈ કે, ફિર અલકમા હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદ કે પાસ ગયે, હમને ઊનસે કહા, “હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઊદસે ઇન સૂરતોં કે મુતાલ્લીક પુછ લો જીનકો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વસલ્લમ એક રકઝતમેં મિલા કર પઠહતે થે.”

ઊન્હોંને હજરત ઇબ્ને મસઊદકો જાકર પુછા. ફિર હુમેં આકર ખતાયા.

“વો મુફરસલકી બીસ સૂરતેં હૈ જો દસ રકઝતમેં પઠહી જાતી થી ઔર વો મુસ્હફ ઇબ્ને મસઊદમેં હૈ.”

૧૮૦૭ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી રિવાયત હૈ ઇસમેં યે હૈ કે, હજરત ઇબ્ને મસઊદ રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “મેં ઊન મુતમાઇલ સૂરતોંકો જાનતા હું, હુઝુર સલ્લલ્લાહો

१८१० : अबु वाईलसे रिवायत है के, अेक शप्श हजरत ईप्ने मसओइ रदीअल्लाहो अन्हो के पास आया और कहेने लगा मैंने आज रात अेक रकअतमें पुरी मुफ्रसल पणही. हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “तुमने ईसी तरहां पणहां अस तरहां शैर पणहते है इर हजरत ईप्ने मसओइ रदीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “मैंं ओन मुतमास्सील सूरतोंको ज्ञानता हुं ओनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम मिला कर पणहते थे. इर हजरत ईप्ने मसओइ रदीअल्लाहो अन्होने मुफ्रसलमेंसे भीस सूरतोंका जिक्क डिया हो-हो सुरतें अेक अेक रकअतमें.

(१. अर रहमान-नज्म २. ईक़तरब-अल हाक्क़ ३.तुर-आरियात ४. वाक़्या-नून ५. सल साईल(मअरीज)-नाजेआत ६. मुतईईन - अबस ७. मुफ्रसर-मुजम्बील ८. हल अता (सुरे ईन्सान)- ला ओक़्सेमु (सुरे क़्यामत) ९. अम्मा-मुरसलात १०. सुरे हुपान- ईअश-शप्श ईस तरहां हो-हो सुरतें अेक अेक रकअतमें मिला कर पणहते थे.)

भाब २७२ :- इरअत के मुताअल्लीक़ात

१८११ : अबु ईरहाक़से रिवायत है के, मैंने अेक शप्शको देभा असने अस्वद बिन यज़ीदसे सवाल डिया, अस वक्त के वो मरओइमें कुरआनकी तिलावत दे रहे थे के तुम हल भिम मुफ्रईर मैंं दाल पणहते हो या अल.

ओन्होने कहा दाल और जताया के हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमसे दाल के साथ सुना है.

१८१२ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम पणहते थे.

१८१३ : अलक़मा इरमाते है के, हम शाम गये तो, हजरत अबु इरदा रदीअल्लाहो अन्हो हमारे पास आये और इरमाया, “तुमहारे पास कोई शप्श है जो हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्होकी इरअतमें पणहनेवाला हो ?

मैंने कहा, “ मैंं हुं.

ओन्होंने कहा, “तुमने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्होसे ईस आयतको किस तरहां सुना है ?

(वल-लयले ईअ-यशा वन्नहारे ईअ तजल्ला व मा जलक़-अक़े वल ओन्सा)

मैंने कहा, “हजरत अब्दुल्लाह बिन मसओइ रदीअल्लाहो अन्हो ईस आयतको ईस तरहां पणहते थे. (इरअत सुनाई)

हजरत अबु इरदा रदीअल्लाहो अन्होने इरमाया अल्लाहकी कसम मैंने ली रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी ईसी तरहां पणहते हुये सुना है, और ये लोग आहते है के, मैंं व मा जलक़-अक़े वल ओन्सा पदुं मगर मैंं नही मानता.

१८१४ : ईब्राहिम इरमाते है के, वो शाममें अलक़मा के पास गये मरओइमें दाबिल होकर नमाज पणही और लोगों के हलकेमें जैक़ गये. इर अेक शप्श आया अससे देअकर मैंने

મહેસૂસ ક્રિયા કે વો ઊન લોગોંસે નારાજ થા. વો આકર મેરે પહેલુમે બૈઠ ગયા. ઔર પુછા કયા તુમહે યાદ હૈ કે, હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઉદ રદીઅલ્લાહો અન્હો કીસ તરહાં કિરઅત કરતે થે ? ઇસ કે બાદ ઊપર જૈસી હી હદીષ બયાન હુઇ હૈ.

૧૮૧૫ : અલકમા ફરમાતે હૈ કે, મેરી હજરત અબુ દરદા રદીઅલ્લાહો અન્હોસે મુલાકાત હુઇ. ઊન્હોંને મુજસે પુછા, તુમ કહાં કે રહેનેવાલે હો.

મૈને કહા, ઇરાકકા.

ઊન્હોંને પૂછા, કયા તુમ હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઉદ રદીઅલ્લાહો અન્હોકી કિરઅતમેં પળહતે હો ?

મૈને કહા, હાં

ઊન્હોંને કહા, વલ લાયલે ઇઝા યગશા. પળહો.

મૈને વલ-લાયલે ઇઝા યગશા, વન-નહારે ઇઝા તજલ્લા વઝ-ઝકરે વલ ઊન્સા વો ખુશ હુએ ઔર કહને લગે મૈને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમસે યે સૂરત ઇસી તરહાં સૂની હૈ.

૧૮૧૬ : એક દૂસરી સનદસે ભી યે રિવાયત ઇસી તરહાં મન્કુલ હૈ.

બાબ ૨૭૩ :- ઊન અવકાતકા બયાન જુસ વક્તમેં નમાઝ નહીં પળહી જા શક્તી.

૧૮૧૭ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને અસર કે બાદ ગુરૂબે આફતાબ તક ઔર ફજર કે બાદ તુલુ-એ-આફતાબ તક નમાઝ પળહનેસે મના ક્રિયા હૈ.

૧૮૧૮ : હજરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે મુતઅદદ સહાબા ખાસ કરકે, હજરત ઊમર ઇબ્ને ખત્તાબ રદીઅલ્લાહો અન્હો જો મુજે બહુત અજીઝ હૈ વો રિવાયત કરતે હૈ કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફજર કે બાદ તુલુઅ આફતાબ તક ઔર અસર કે બાદ ગુરૂબ આફતાબ તક નમાઝ પળહનેસે મના ફરમાયા હૈ.

૧૮૧૯ : એક ઔર સનદસે ભી યે રિવાયત મન્કુલ હૈ ઔર સઈદ ઔર હિશામકી રિવાયતમેં યે ઇબ્બાફા હૈ કે, સુબ્હ કે બાદ ઊસ વક્ત તક કે સૂરૂજ નિકલ આએ.

૧૮૨૦ : હજરત અબુ સઈદ ખુદરી રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “નમાઝે અસર કે બાદ ગુરૂબે આફતાબ તક કોઈ નમાઝ નહીં, ઔર નમાઝે ફજર કે બાદ તુલુઅ આફતાબ તક કોઈ નમાઝ નહીં હૈ.

૧૮૨૧ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “તુમ મૈસે કોઈ ભી શખ્શ તુલુઅ આફતાબ તક નમાઝ પળહનેકી તકલીફ ના લે ઔર (વૈસે હી) ગુરૂબ આફતાબ કે વક્ત (તક નમાઝ ના પળહે)

૧૮૨૨ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “તુલુઅ આફતાબ કે વક્ત નમાઝ (પળહને કી)

तकलीक ना लें और (वैसे ही) गुड़ुन आइताब वक्त तक (नमाज ना पढ़ें) क्युं के सूरुज शयतान के हो शिंगो के दरम्यान निकलता है.

१८२३ : हुजरत एब्ने ओमर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जब सूरुजकी लौं जाहिर हो जाये तो नमाजको ठिस वक्त तक मौकुइ करदो जब तक सूरुज पुरी तरहां रोशन ना हो जाये, और जब सूरुजकी लौं गायब हो जाये तो नमाजको ठिस वक्त तक मौकुइ रणो जब तक सूरुज मुकम्भील गायब ना हो जाये.

१८२४ : हुजरत अबु अशर गिझरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने मकामे मुअमसमें हमारे साथ नमाजे असर पण्ही. और इरमाया, “तुमसे पहलेली ओम्मतो पर भी ये नमाज पेश की गइ थी लेकीन ओन्होंने आये कर दिया, लिहाजा जौ एसकी हिइअत करेगा. ठिसको हुगना अजर मिलेगा, और असर के बाद ठिस वक्त तक कोइ नमाज जाइज नहीं है जब तक सितारे तुलुअ ना हो जायें.

१८२५ : अेक और सनइसे भी ऐसी ही हदीष मन्कुल है, जूसमें हुजरत अबुअशर गिझरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने हमें नमाजे असर पण्हाइ. इर ओपर जैसी ही रिवायत की है.

१८२६ : हुजरत ओकबलु बिन आभिर जुहनी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम हमें तीन अवकातमें, नमाज पण्हुनेसे और मैयतको इइन करनेसे रोके थे. अेक तुलुअ आइताब के वक्त जब तक वो बुलंद ना हो जाये. दूसरे ठीक हो पहर के वक्त जब तक के जवाल (अतम) ना हो जाये, तीसरे गुड़ुने आइताब के वक्त, जब तक के वो मुकम्भील गुड़ुन ना हो जाये.

१८२७ : हुजरत अम्र बिन अन्बसह सुलामी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं जमानाये जाहिलीअतमें गुमान करता था के लोग गुमराही पर है और ओनकी कोइ हैसीयत नहीं है. वो सब अुतोंकी परस्तीश करते थे, मैंने अेक शअश के मुताअल्लीक सुना की वो मकामें है, और अहुतसी अणरें अयान करता है, मैं अेक सवारी पर बैठा और ओनकी बिइमतमें हाजुर हो गया. देअ रहा हुं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम छिपे हुये है और ओनकी कौम ओन पर हिलेरे हो रही है.

इर मैं अेक हिला कर के आप के पास मकामें पहुँचा.

मैंने कहा, आप कौन है ?

आपने इरमाया, “मैं नबी हुं.

मैंने पूछा, नबी क्या होता है ?

आपने इरमाया, “मुजे अल्लाह त्वालाने भेजा है.

मैंने पूछा, आपकी अल्लाह त्वालाने कौनसा पयगाम देकर भेजा है ?

आपने इरमाया, ‘अल्लाहने मुजे सिला-रहमी, अुत-शिकनी, अल्लाह के साथ शिक ना करने के पयगाम के साथ भेजा है.

मैंने पुछा, 'ओस दीनमें आप के साथ कौन है ?'

आपने इरमाया, 'आजाद और गुलाम.

रावीका भयान है के, 'ओन दीनों धमान लानेवालोंमें आप के साथ हजरत अबु षक और हजरत बिलाद थे.

हजरत अब्र इरमाते है के, मैंने कहा, मैं बिलादक आपकी पैरवी करुंगा.

आपने इरमाया, 'तुम धस वक्त धसकी ताकत नहीं रहते, क्या तुम नहीं देख रहे हो के आज मेरे साथ लोग कैसा सुलुक कर रहे है ? धस वक्त तुम घर जाओ और जब तुम ये सुन लो के मुझे गलब्या हांसिल हो गया है ओस वक्त मेरे पास आ जाना.

हजरत अब्र इरमाते है के, मैं अपने घर चला गया और रसूलुल्लाह सललल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम मदीना मनव्वरा तशरीक ले गये. मैं अपने घरमें था और लोगोंसे आपकी मदीनामें तशरीक ले जाने के बाद आप के मुताअल्लीक लोगोंसे मालुमात हांसिल करता रहा, यहां तक के कुछ लोग मदीनासे मेरे पास आये, मैंने उनसे पुछा के जो साहब मदीनामें आये है उनका क्या हाल है ?

उनहोंने कहा, लोग तेजसे उनकी दावत कुबुल कर रहे है, उनकी कौमने उनहें कतल करना चाहा था लेकिन वो ओस पर काहीर ना हो सके, फिर मैं आपकी भिदमतमें हाजूर हो गया और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! क्या आप मुझे पहंचानते है ?

आपने इरमाया, 'तुम वही शप्श हो जो मुजसे मक्कांमें मिले थे.

मैंने कहा, हां, फिर मैंने कहा, या नबी अल्लाह मुझे ओन चीजों के मुताअल्लीक बताधये जो अल्लाहने आपको बताध है. और उनहें मैं नहीं जानता, मुझे नमाज के मुताअल्लीक बताधये.

आपने इरमाया, 'इश्कीर नमाज पणहो और ओस के बाद ओस वक्त तक नमाज ना पणहो जब तक के सूरज तुलुअ ना हो जाये, क्युं के सूरज शयतान के दो शिंगो के दरम्यान तुलुअ होता है और ओस वक्त ओसको कुक्कार सजदा करते हैं, फिर ओस के निकलने के बाद नमाज पणहो क्युं के ओस नमाजकी इरीस्ते गवाही देंगे, यहां तक की साया नेजे के बराबर हो जाये ओस के बाद इक जाओ क्युं के ओस वक्त जहन्नुम ओकी जाती हैं, फिर जब सूरज ढल जाये तो असर तक नमाज पणहो, ओस वक्त इरीस्ते हाजूर होते हैं, फिर (असर के बाद) नमाजसे इक जाओ यहां तक के सूरज गुड़ब हो जाये. क्युं के सूरज शयतान के दो शिंगो के दरम्यान गुड़ब होता है और कुक्कार ओसको ओस वक्त सजदा करते है.

मैंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह मुझे वुजुके मुताअल्लीक बताधये.

आपने इरमाया, 'तुममेंसे कोध ली शप्श सवाबकी नियतसे वुजु करता है, कुल्ली करता है, नाकमें पानी डालता है, नाक साफ करता है, अल्लाह त्वाला ओस के अहरे, नथुने और मुंड के गुनाहोंके मिटा देता है, फिर जब वो अल्लाह त्वाला के हुकम के मुताबिक अहरेरा धोता है, तो दाढी के अतराइसे ओस के अहरे के गुनाह पानी के साथ पहें जाते है, फिर जब वो कुलनीयों तक हाथ धोता है तो हाथों के पोशसे पानी के साथ, ओस के हाथों के गुनाह उड जाते

है. फिर जब वो सरका मसाह करता है तो आलों के सिरोंसे उस के सर के गुनाह पानी के साथ उड जाते है और जब वो टपनों समेत पांच धोता है तो, पोरोंसे लेकर टांगो तक उस के गुनाह पानीसे उड जाते है.

फिर वो भडा होकर नमाज पढ़े. जुसमें अल्लाह त्वालाकी जैसेी हम्द और ताजीम करे के गे उसकी शान के लायक हो और (अपना किल हर तरहां के भयालोंसे) आली होकर अल्लाह अज्जव जल्लकी धभाहतकी तरफ मुतवज्जेह हो तो नमाजसे शरीग होने के बाद वो गुनाहोंसे धस तरहां पाक हो जायेगा. जैसे के उसकी माने उसे अभी जनम दिया हो.

फिर हजरत अम्र बिन अन्बसहने ये हदीष रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लम के सहाभी. हजरत अबु उमामहको सुनाई तो हजरत अबु उमामहने उनसे कहा, अय अम्र बिन अन्बसह ! हेभो तुम क्या कहे रहे हो ? क्या ओक ही जगह ओक शप्शको धतना अजर मिल जायेगा ?

तो हजरत अम्र बिन अन्बसहने कहा, अय अबु उमामह ! मैं जुणहा हो गया हुं, मेरी हड्डियां गल गध है और मौत करीब आ चुकी है. धस हालमें मुजे अल्लाह त्वाला और उस के रसूल (सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लम) पर जूट पांधनेकी क्या जरूरत है ?

अगर मैंने धस हदीषको दो तीन बार या तो कभी सात बारसे भी ज्याहल ना सुना होता तो मैं धसे कभी भयान ना करता ! लेकीन मैंने धसको सात बारसे भी ज्याहल सुना है. १८२८ : हजरत आउेशह रहीअल्लाहो अन्हा इरमाती थी के हजरत उमरको वहम हो गया है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लमने तुलुअ आइताब और गुडुअ आइताब के वक्त नमाज पढ़नेसे मना इरमाया था.

१८२९ : हजरत आउेशह रहीअल्लाहो अन्हा इरमाती है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लमने कभी असर के बादकी दो रकअत नहीं पणही, और हजरत आउेशह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लमने इरमाया, "तुलुअ आइताब और गुडुअ आइताब के दौरान नमाजका कस ना करो.

१८३० : हजरत धप्ने अब्बास रहीअल्लाहो अन्हो के गुलाम कुरैबसे रिवायत है के, हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास हजरत अब्दुरहमान बिन अज्जर और मुसव्वीर बिन मुबरमा रहीअल्लाहो अन्हुमने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लमकी जवजा हजरत आउेशह रहीअल्लाहो अन्हा के पास भेजा. और कहा, हम सज्की तरफसे हजरत आउेशह रहीअल्लाहो अन्हाको सलाम कहेना और उनसे असर के बाद दो रकअत नमाज पढ़ने के मुताअललीक सवाल करना. और कहेना के हमें ये भतलाया गया है के, आप असर के बाद दो रकअत नमाज पढ़ते हैं, और हम तक ये हदीष पढ़ोंगी है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयेहे व सल्लम, असर के बाद दो रकअत नमाज पढ़नेसे मना करते थे.

हजरत धप्ने अब्बासने कहा, मैं हजरत उमर के साथ मिलकर लोगोंको धस नमाजसे रोकता था.

कुरैब इरमाते है के, मैं हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हा के पास गया और उन तक ये पयगाम पहुँचाया।

हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमाया, “हजरत उम्मे सलमह रहीअल्लाहो अन्हासे पूछना, मैं उन हजरत तक गया और हजरत आअेशाहका जवाब भताया।

उन्होंने मुझे वही पयगाम लेकर उम्मे सलमह रहीअल्लाहो अन्हा के पास भेज दियो

हजरत उम्मे सलमह रहीअल्लाहो अन्हाने इरमाया, “मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमको असर के बाद नमाज पणहनेसे मना इरमाते हुअे सुना था। फिर मैंने अेक दिन आपको असर के बाद नमाज पणहते देभा। उस वक्त मैंने देभा (उस वक्त) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लम असरकी नमाज पणह यूँ के थे। फिर आप मेरे पास तशरीफ लाअे जब के मेरे पास अन्सार के कभीले अनु हरामकी कुछ औरतें भैठी हुअ थी। आपने दो रकअत नमाज पणही। मैंने आपकी तरफ अेक कनीज भेज मैंने उससे कहा, हुअुर के पहलेमुँ भडे होना। फिर आपसे गुजारीश करना। के उम्मे सलमा अर्ज करती हँ, या रसूलुल्लाह ! मैंने सुना था के आप उन दो रकअतोंसे मना इरमाते है। और मैंने देभा के आप ये दो रकअतें पणह रहे हँ, फिर अगर आप हाथसे धशारा करें तो पीछे हट जना।

हजरत उम्मे सलमा इरमाती है के, उस कनीजने अैसा ही किया, हुअुरने हाथसे धशारा किया, वो पीछे हट थअ आपने नमाजसे शरीग होकर इरमाया, “अय अबु उमैयाकी भेटी ! तुमने असर के बाद दो रकअत नमाज के मुताल्लीक सवाल किया है धसका सभब ये था के, अनु अण्डुल कैस के कुछ लोग अगर मुजसे धस्लाम के बारेमें सवाल कर रहे थे। उसकी मशगुलीयतकी वजहसे जेहरकी दो रकअत सुन्नत नहीं पणह सका था। (ये दो रकअत सुन्नत जेहरकी भाकी रही थी उसकी कज्ज अदा की थी)।

१८३१ : अबु सलमा कहते है के, उन्होंने हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे ये सवाल किया, जून्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम पणहा करते थे। हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हाने भतायाके, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम उन दो रकअतोंकी असरसे पहलेले पणहां करते थे। फिर अेक बार आपको डीसी काम के होनेकी वजहसे या आप भूल गअे, तो आपने वो नमाज असर के बाद पणही। फिर आप उसको पणहते रहे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही वसल्लम जे नमाज पणहते थे, उसको हंभेशाही पणहते थे।

१८३२ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्हासे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने मेरे पास असर के बादकी दो रकअत कभी तर्क नहीं किया।

१८३३ : हजरत आबुशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने मेरे पास हो नमाजें कभी भी तर्क नहीं कीं. ज़ाहिरन ना बुक़िया. हो रक़अत इज़रसे पहले और हो रक़अत असर के बाद.

१८३४ : हजरत आबुशह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, जब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमकी मेरे घर बारी होती थी आप ये नमाज पणहुते थे याने की असर के बाद हो रक़अत.

बाब :- (२७४) नमाज भगरीबसे पहले हो रक़अतोंको बयान.

१८३५ : मुहत्तार बिन कुलकुलसे रिवायत है के, मैंने अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होसे जो असर के बाद पणही जाती है उनि नख़ल नमाजों के बारेमें पुछा. उनिहोंने कहा, हजरत उमर रहीअल्लाहो अन्हो असर के बाद नमाज पणहुने पर इथ भारते थे (अइसोस जताते थे)

हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम के ज़मानेमें गु़ुब आइताब के बाद भगरीबकी नमाजसे पहले हो रक़अत नमाज पणहुते थे.

मैंने पूछा, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व आलेही वसल्लम भी ये हो रक़अतें पणहुते थे ?

उनिहोंने कहा, आप (सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लम) हमे उनि हो रक़अतोंको पणहुते हुअे देपते थे. आप हमें ना तो इसका हुक़म देते थे और ना ही मना करते थे.

१८३६ : हजरत अनस बिन मालिक रहीअल्लाहो अन्होका बयान है के, मदीना शरीफ़में जब मुअज़ज़ीन भगरीबकी अज़ान दे तो हम लोग सूतुनोंकी आडमें होकर हो रक़अत नमाजे पणहुते थे. यहां तक के कोछ नया आदमी मस्जिदमें आता तो बक़सरत नमाज पणहुनेकी वजहसे ये समजता के नमाज हो चूकी है.

१८३७ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मुग़ज़ज़ल रहीअल्लाहो अन्हो रिवायत करते है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्यहे व सल्लमने इरमाया, "हर अज़ान और तकबीर के दरम्यान नमाज है. ये क़ोमात आपने तीन भरतया होहराअे, तीसरी बार इरमाया, "लूसका लू आह. (मतलब ये के, ये अबल सुन्नते मोअकेदह नहीं है)

१८३८ : हजरत अब्दुल्लाह बिन मुग़ज़ज़ल रहीअल्लाहो अन्होसे अेक और सनदसे भी इसी तरहों रिवायत करते है. मगर इसमे ये है के, चौथी बार आपने इरमाया, "लूसका लू आह.

(हरमैन शरीफ़िनमें आज कल कुछ लोग ये नमाज पणहुते है मगर हमामे आजम अबु हुनीफ़ा और हमाम मालिक के नज़दीक ये हो रक़अतें भरनून नहीं है.)

भाष :- (२७५) नमाजे षौक़्का बयान.

१८३६ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन मसूद रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने षौक़् के वक्त अेक जमाअत के साथ अेक रकअत पणही. जभ के दूसरी जमाअत दुश्मन के सामने थी (धस अेक रकअत नमाज के बाद) वो जमाअत दुश्मन के सामने जडी हो गध, जहां पहेले उन के साथी जे थे. फिर नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने दूसरी जमाअतको अेक रकअत पणहाध. और नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने सलाम ईर दिया, फिर हर अेक जमाअतने अलोहदा अलोहदा अेक अेक रकअत पणही.

१८४० : हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो रिवायत करते थे के मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ (जैसी उपर बताध गध है उसी तरहा) नमाजे षौक़् पणही है.

१८४१ : हुजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रहीअल्लाहो अन्हो बयान करते है के, नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने जाअज अैयाममें जास तौर पर नमाजे षौक़् पणही है के, अेक जमाअत आप के साथ आकर जडी हुध और अेक दुश्मन के साथ लडती रही फिर आपने उस जमाअत के साथ नमाज पणही जो आप के साथ थी. फिर (ये अेक रकअत नमाज पणहने के बाद) ये जमाअत दुश्मन के सामने जा जडी हुध और वो जमाअत आ गध. फिर आपने उनको अेक रकअत पणहाध फिर दोनो जमाअतोंने अेक अेक रकअत नमाज पणही. हुजरत धने उमर रहीअल्लाहो अन्हो ईरमाते थे जभ षौक़् धससे षठ जअे तो सवारी पर या जे जे धशारेसे नमाज पणहो.

१८४२ : हुजरत ज़ाबिर रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, मैं नमाज षौक़् के मौ के पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के साथ था. हमने दो सई कायम डी. अेक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के पीछे थी यहां तक के दुश्मन हमारे और काभा के दरभ्यान था.

नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने तडीभरे तडरीमा कही और सभने तकभीर कही फिर हम सभने आप के इकुअ पर इकुअ किया फिर जभ आपने इकुअसे सर उठाया तो हम सभने इकुअसे सर उठाया. फिर आप सजदेमें गअे और आप के साथ जडी हुध सईने सजदा किया. और दूसरी सई दुश्मन के सामने जडी रही. फिर जभ आप सजदा कर यू के और आप के साथ जडी हुध सईने ली सजदह कर लिया तो ये सई जाकर दुश्मन के सामने जडी हो गध, और वो सई आकर आप के पीछे जडी हो गध. फिर आपने इकुअ किया और सभने इकुअ किया फिर आपने इकुअसे सर उठाया और सभने इकुअसे सर उठाया. फिर आप सजदेमें गअे और वो सई सजदेमें गध. जो पहेली रकअतमें मौजुद थी. यहां तक के दूसरी सई दुश्मन के सामने जडी हुध थी.

जभ नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम और आप के साथ जडी सईने सनदह कर लिया तो, नबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम और हम सभने सलाम ईर दिया.

હજરત જાબિર રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “જીસ તરહા આજકલ તુમ્હારે મુહાકિઝ તુમ્હારે સરદારોં કે સાથ કરતે હૈ.

૧૮૪૩ : હજરત જાબિર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, હમને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ કબીલા જુહૈનહકી એક જમાઅત કે સામને જીહાદ કી ઊન્હોંને હમસે બહુત સખ્ત લડાઈ લડી. જબ હમ જુહરકી નમાઝ પઠ્હ રહે थे. તો મુશ્શેકીનને આપસમેં કહા, ઇન પર યકબારગી હમલા કર કે ઇનકો ખતમ કરદો.

હજરત જીબ્રીલ અલયહિસ્સલામને નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો ઇસ ખાતસે મુત્તલા ક્રિયા ઔર આપને હમેં ખતાયા ઔર મુશ્શેકીનને કહા, ઇનકી અખ વો નમાઝ આનેવાલી હૈ જો ઊનકો અવલાદસે ભી જ્યાદહ અજીઝ હૈ. જબ અસરકા વકત આયા તો આપને હમારી દો સફેં કરદી. યહાં તક કે હમારે ઔર કબીલે કે દરમિયાન મુશ્શેકીન હાઇલ થે. નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને તકબીર તહરીમા કહી ઔર હમને તકબીર કહી, આપને રૂકુઅ ક્રિયા ઔર હમને રૂકુઅ ક્રિયા, આપને સજદહ ક્રિયા ઔર આપ કે સાથ સફ ને સજદહ ક્રિયા ઔર જબ સબ ખંડે હો ગએ તો દુસરી સફનેં સજદા ક્રિયા. ફિર સફેં અવ્વલ પીછે ચલી ગઈ ઔર દૂસરી સફ આગે ચલી ગઈ ઔર યે લોગ પહલ્લી સફકી જગહ ખંડે હો ગએ. ફિર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને અલ્લાહો અકબર કહા ઔર હમને (ભી) અલ્લાહો અકબર કહા.

ફિર આપને રૂકુઅ ક્રિયા હમને ભી રૂકુઅ ક્રિયા, ફિર આપને સજદહ ક્રિયા આપ કે સાથ સફેં અવ્વલને ભી સજદહ ક્રિયા. ઔર દૂસરી સફ ખડી રહી, ફિર જબ આપને સજદહ ક્રિયા તો દૂસરી સફને સજદહ ક્રિયા. ફિર સબ ખૈઠ ગએ ઔર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને સલામ ફેર દિયા.

અબુ ઝુબૈર બયાન કરતે હૈ કે, હજરત જાબિર રદીઅલ્લાહો અન્હોને કહા, જૈસા કી આજ કલ તુમ્હારે ઊમરાઅ નમાઝ પઠ્હાં કરતે હૈ.

૧૮૪૪ : હજરત સાલેહ બિન અબી હરમહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને અપને સહાબાકો નમાઝે ખૈફ પઠ્હાઈ, આપને અપને પીછે દો સફેં બનાઈ. જો આપકી કરીબી સફ થી ઊસકો એક રકઅત નમાઝ પઠ્હાઈ. ફિર આપ ખંડે રહે. યહાં તક કે પીછલી સફને એક રકઅત નમાઝ પઠ્હલી. ફિર વો આગે આ ગએ. ઔર અગલી સફ જો પહેલે આગે થી પીછે ચલી ગઈ. ફિર આપને ઊસ સફકો એક રકઅત નમાઝ પઠ્હાઈ ફિર આપ ખૈઠ ગએ. યહાં તક કે પીછેવાલોંને એક રકઅત નમાઝ પઠ્હલી. ફિર આપને સલામ ફેર દિયા.

૧૮૪૫ : હજરત સાલેહ બિન ખવાત રદીઅલ્લાહો અન્હો ઊસ સહાબીસે નકલ કરતે હૈં, જીન્હોંને નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ ગઝવએ ઝાતુર-રૈકાઅ કે દિન નમાઝે ખૈફ પઠ્હી થી, કે એક જમાઅતને સફ ખાંધી ઔર આપ કે સાથ નમાઝ પઠ્હી ઔર દૂસરી જમાઅત દુશ્મન કે સામને લડતી રહી. આપને અપની કરીબવાલી સફ કે સાથ એક રકઅત નમાઝ પઠ્હી. ફિર આપ ખંડે રહે ઔર ઊસ સફને અપની નમાઝ પુરી કી. ફિર

વો જાકર દુશ્મન કે સામને ખડી હો ગઈ ઓર દુસરી જમાઅત આઈ ઓર આપને દુસરી જમાઅતકો દુસરી રકઅત પળાઈ. ફિર આપ બૈઠ રહે ઓર બિન્હોને અપની નમાઝ પુરી કી. ફિર આપને સબ કે સાથ સલામ ફેર દિયા.

૧૮૪૬ : હજરત જાબિર રહીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, વો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વસલ્લમ કે સાથ ઝાતુરરિકાઅ (ગઝવહ)મેં ગએ. ઓર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકો એક સાયાદાર દરખ્ત કે નીચે ઠહરાયા, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમકી તલવાર દરખ્ત કે ઊપર લટકી હુઈ થી. મુશ્ફેકીનમેંસે એક શખ્શ આયા, ઊસને ઊસે ઊતાર કર મ્યાનસે બહાર નીકાલતી ઓર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમસે કહા, કયા તુમ મુજસે ડરતે હો ?

આપને ફરમાયા, “નહીં.

ઊસને કહા, તુમ્હે મુજસે કૌન બયાઅેગા ?

આપને ફરમાયા, “મુજે તુમસે અલ્લાહ ત્યાલા બયાઅેગા !

રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે અસ્હાબને ઊસકો ધમકાયા. ઓર ઊસને તલવાર મ્યાનમેં કરલી. ઈતનેમેં અઝાન હુઈ આપને એક જમાઅતકો દો રકઅત નમાઝ પળાઈ. વો પીછે ચલી ગઈ ફિર આપને દૂસરી જમાઅતકો દો રકઅત નમાઝ પળાઈ. રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલોહી વ સલ્લમકી ચાર રકઅત હુઈ ઓર (બાકી સબી) કૌમકી દો રકઅતે હુઈ.

૧૮૪૭ : હજરત જાબિર રહીઅલ્લાહો અન્હો બયાન કરતે હૈ કે, બિન્હોને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે સાથ નમાઝે ખૌફ પળહી, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને એક જમાઅતકો દો રકઅત પળાઈ, ફિર દૂસરી જમાઅતકો દો રકઅત પળાઈ, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ચાર રકઅતે પળહી ઓર કૌમને દો દો રકઅતે પળહી.

કિતાબુલ જુમ્મહ

૧૮૪૮ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ તુમમેંસે કોઈ શખ્શ નમાઝે જુમ્મ્યા કે લિયે જાના ચાહે તો ગુસ્લ કરે.

૧૮૪૯ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ કે આપ મિમ્બર પર ખડે હુએ થે. તુમમેંસે જો શખ્શ નમાઝે જુમ્મ્યા કે લિયે આએ વો ગુસ્લ કરે.

૧૮૫૦ : એક ઔર સનદસે ભી ઔસી હી હદીષ મન્કુલ હૈ.

૧૮૫૧ : હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, એક દિન હજરત ઊમર ઇબ્ને ખત્તાબ રદીઅલ્લાહો અન્હો જુમ્મ્યાકા ખુત્બા દે રહે થે, કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમ કે એક સહાબી આએ, હજરત ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોને બિન્હે પુકાર કર ફરમાયા, “યે આનેકા કૌન સા વક્ત હૈ ?

બિન્હોને કહા, આજ મેં મશરૂફ થા ઘર પહોંચતે હી મેંને અઝાન સુની ઇસ કે બાદ સિર્ફ ઇતની તાખીર કી કે વુઝુ કિયા.

હજરત ઊમરને ફરમાયા, “સિર્ફ વુઝુ હી કિયા ? જબકી તુમ જાનતેહો કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમ ગુસ્લકા હુકમ ફિયાં કરતે થે.

૧૮૫૨ : હજરત અબુ હુરૈરહ રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, હજરત ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હો, લોગોંકો જુમ્મ્યાકા ખુત્બા દે રહે થે, નાગહાં હજરત ઊસ્માન રદીઅલ્લાહો અન્હો તશરીફ લાએ હજરત ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “બિન લોગોંકા કયા હોગા જો અઝાન કે બાદ તાખિરસે આતે હૈ ?

હજરત ઊસ્માન રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “અથ અમીરૂલ મુઅમેનીન, અઝાન કે બાદ મેંને વુઝુ કિયા ઔર બિના દેર કિયે મસ્જીદમેં આ ગયા. હજરત ઊમર રદીઅલ્લાહો અન્હોને ફરમાયા, “સિર્ફ વુઝુ હી કિયા ? કયા તુમ લોગોંને નહીં સુના કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ સલ્લમને ફરમાયા, “જબ તુમમેંસે કોઈ શખ્શ નમાઝે જુમ્મ્યા કે લિયે આએ તો ગુસ્લ કરેં.

૧૮૫૩ : હજરત અબુ સઈદ ખુદરી રદીઅલ્લાહો અન્હોસે રિવાયત હૈ કે, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહો અલયહે વ આલેહી વ સલ્લમને ફરમાયા, “હર બાલીગ પર જુમ્મ્યા કે દિન ગુસ્લ કરના વાજીબ હૈ.

૧૮૫૪ : હજરત આએશહ રદીઅલ્લાહો અન્હાસે રિવાયત હૈ કે, લોગ અપને ઘરોંસે ઔર બીચે મુકામોંસે બારી બારી જુમ્મ્યા પઠહને આતે થે, વો અબા પહુનકર આતે થે જીસ પર ગર્દ-ઓ-ગુબાર (ધૂલ-રેતી-કચરા) પડતા રહતા થા. ઔર ઊસસે બદબુ આતી થી. બિનમેંસે કોઈ

शपश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के पास आया और उस वक्त आप मेरे पास थे. आपने इरमाया, “काश तुम इस दिन गुस्ल कर लियां करो.

१८५५ : हजरत आअेशाह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, लोगों के पास नौकर तो थे नहीं, भुह ही अपना काम काज करते थे. (इस वजहसे पश्रीना वगैरहसे) भदभु आने लगी, तो उनसे कहा गया, काश ! तुम लोग जुम्ह के दिन गुस्ल कर लेते.

१८५६ : हजरत अबु सधद भुहरी रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हर जालीग पर जुम्हा के दिन, गुस्ल करना, भिरवाक करना और हरजे इस्ते ताअत भुशु लगाना वाजुभ है, ज्वाह वो भुशु औरत (के लिये भास) ही क्यु ना हो.

१८५७ : हजरत एब्ने अब्भास रहीअल्लाहो अन्हो जुम्ह के गुस्ल के बारेमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी हदीषका जिकर किया.

ताउसने हजरत एब्ने अब्भास रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत की के तेल या भुशु लगाअे ज्वाह वो उसकी भीवीकी ही क्यु ना हो.

हजरत एब्ने अब्भास रहीअल्लाहो अन्होने इरमाया, “मैं ये नहीं जानता.

१८५८ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१८५९ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, नभीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इरमाया, “हर मुसलमान पर वाजुभ है के, हइतेमें अेक पार गुस्ल करे और अपना सर और जुस्म धोअे.

१८६० : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “जे शपश जुम्हा के रोज गुस्ले जनाअत करे और मरुजुहमें ज्नाअे. तो उसने (गोयाके) अल्लाह त्वालाकी राहुमें अेक अिटका सढका किया और जे शपश हूसरी साअतमें ज्नाअेगा तो उसने गोया के अेक गायका सढका किया. और जे शपश तीसरी साअतमें गया तो उसने मोटा के अल्लाहकी राहुमें अेक मेंढा सढका किया. और जे शपश चौथी साअतमें गया तो उसने गोया के अेक मुरगीका सढका (अल्लाहकी राहुमें) किया और जे शपश पांच वी साअतमें गया तो उसने गोयाकी (अल्लाहकी राहुमें) अेक अडेका सढका किया. जब एभाम आ जाता है तो इरीस्ते हाजुर हो जाते है और भुत्पा सुनते है.

१८६१ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “अगर तुमने जुम्ह के दिन हीराने भुत्पा अपने साथीसे कहा ‘युप हो ज्नाअो... तो तुमने लगवका काम किया.

१८६२ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१८६३ : अेक और सनदसे भी अैसी ही हदीष मन्कुल है.

१८६४ : हजरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “अगर तुमने जुम्ह के दिन हीराने भुत्पा अपने साथीसे कहा युप हो ज्नाअो तो तुमने लगवकी काम किया.

१८६५ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने जुम्माका जिंक करते हुये इरमाया, “धस दिनमें अेक अैसी साअत है जसको मुसलमान अंदा नमाज के दौरान पा ले तो अल्लाह त्यालासे जस अीजका भी सवाल करेगा उसको पा लेगा. रावीने हाथ के धशारेसे उस साअतकी कमीको अ्यान किया.

१८६६ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, अबुल कासीम सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “जुम्मा के दिन अेक अैसी साअत होती है जसको जे (कोध) मुस्लीम अंदा पा ले, जअ के वो अडा हुआ नमाज पणह रहा हो, वो अल्लाह त्यालासे जस अीजका भी सवाल करेगा. अल्लाह उसे अता इरमाअेगा. रावी हाथसे उस वक्तकी कमीका धशारा करते और उसकी तरफ़ रगअत दिलाते थे.

१८६७ : अेक और सनहसे भी अैसी ही रिवायत मन्कुल है.

१८६८ : दूसरी अेक सनह के साथ भी अैसी ही रिवायत मन्कुल है.

१८६९ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जुम्मा के दिनमें अेक अैसी साअत है जसको जे मुसलमान पाअे और अल्लाह अजअ व जल्लसे जे भी सवाल करे अल्लाह त्याला उसको अता इरमा देता है. और ये साअत अलोत थोडी देर (ही) रहेती है.

१८७० : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे अेक और सनहसे भी अैसी ही रिवायत मन्कुल है लेकीन धसनमे साअत के थोडी देरकी होने के अल्लाअ नहीं है.

१८७१ : हजरत अबु मुसा असअरी के अंटे हजरत अुरहह रहीअल्लाहो अन्हुमसे रिवायत है के, मुजसे हजरत अजहुल्लाह अिन अमर रहीअल्लाहो अन्होने कहा, क्या तुमने अपने वालिहसे साअते जुम्मा के आरेमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमकी कोध हदीष सुनी है ?

वो कहेते हैं, मैंने कहा, हां, मैंने अपने वालिहसे सुना अन्होंने कहा, के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया वो साअत धमाम के अैकनेसे (अुत्पा पणहने के लिये) लेकर नमाज पणही जाने तक है.

१८७२ हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “जस अहेतरीन दिनमें सूरज तुलुअ होता है (वो) जुम्माका दिन है, जस दिनमें हजरत आहम अल्लयहिरसलाम परदा किये गअे, जस दिनमें हजरत आहम अल्लयहिरसलामके जन्तमें हाअिल किये गअे, और जस दिन वो जन्तसे आरीज किये गअे.

१८७३ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे अपर जैसी ही हदीष रिवायत है धसमें ये धज्हा है के, और क्यामत भी जुम्मा के दिन कायम होगी.

१८७४ : हजरत अबु हुदैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “हम सअसे आअिर है और क्यामत के दिन सअसे पहेले

होंगे, अलभत्ता तमाम भिम्भतोंको हभसे पहेले कितान ही गध और हभें भिन के भाद कितान ही गध. फिर ये दिन (याने भुम्भ्या) भुसे हभारे लिये अल्लाह त्वालाने मुकर्रर कर दिया है, हभको अल्लाह त्वालाने ही भिस दिन हिदायत दी है. लोग भस दिनमें हभारे ताभे है, यहुदने भुम्भ्या के भाद के दिन (याने शनीयर)को मुकर्रर किया, और नसाराने भरा के भाद के दिनको (याने भतवार)

१८७५ : हभरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हभ आभिर है (भिम्भतोंकी भवसत के हिसाभसे) और क्यामत के दिन सभसे पहेले होंगे.

१८७६ : हभरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हभ आभिर है और क्यामत के दिन अबल होंगे, और हभ सभसे पहेले भन्नतमें दाभिल होंगे, अलभत्ता भिन लोगोंको हभसे पहेले कितान ही गध और हभें भिन के भाद कितान ही गध. भन्होंने आपसमें भभितलाइ किया और भिन के भभितलाइमें अल्लाह त्वालाने हभें हककी हिदायत की, आपने इरमाया, “भुम्भ्याका दिन हभने मुकर्रर इरमाया है और यहुदने भिसका अगला दिन और नसाराने भिस के भादका दिन (मुकर्रर किया है छट्टीका दिन)

१८७७ : हभरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, हभरत मुहंभद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “हभ आभिर है और क्यामत के दिन हभ साभिक होंगे अलभत्ता भिन लोगोंको हभसे पहेले कितान ही गध, पर ये वो दिन है जो भिन पर इरभ किया गया था (भुम्भ्याका दिन) भन्होंने भसमें भभितलाइ किया और अल्लाह त्वालाने हभें भस दिनकी हिदायत दी. पस वो भिस दिनमें हभारे ताभेभ है, यहुदने अगले दिन और नसाराने भिस के भाद के दिन (को मुकर्रर किया जो भुम्भ्या के ताभेभ है)

१८७८ : हभरत भदीभतल कुभरा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व आलेही व सल्लमने इरमाया, “हभसे पहेलेवाले लोगोंमें अल्लाह त्वालाने भुम्भ्या (के ताअव्युन) गुभराही पयदा की, यहुदीयोंने शनीवार (इइता)का दिन मुकर्रर किया. और नसाराने भतवारका (दिन) भादमें अल्लाह त्वालाने हभें पयदा इरमाया और हभें भुम्भ्या के भारेमें हिदायत अता की. पस कर दिया, भुम्भ्य इइता (शनीवार), भतवारकी (पीछे) और भसी तरहों भन लोगोंको क्यामत के दिन हभारे ताभेभ कर दिया. हभ हुनियावालों के अतभारसे आभिरमें और क्यामत के दिन सभसे अव्वल होंगे. भनका इसला क्यामत के दिन सभसे पहेले हुगा.

१८७९ : हभरत भदीभतल कुभरा रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “में भुम्भ्या के ताअव्युनकी हिदायत दी गध और हभसे पहेले (वाले) लोग गुभराह हो गये.

१८८० : हभरत अबु हुरैरह रहीअल्लाहो अन्होसे रिवायत है के, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लयहे व सल्लमने इरमाया, “भभ भुम्भ्याका दिन आता है तो भरभुद के हर दरवाजे पर